कोलफील्ड मिरर

CFM 24 x 7 COALFIELD MIRROR हर पल आपके साथ

Website : coalfieldmirror.com

हर पल आपके साथ

शुभ प्रभात JUPITER FOUNDATION

ममता बनर्जी का लन्दन यात्रा, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के कार्यक्रम में करेंगी शिरकत

कोलफील्ड मिरर 06 मार्च (कोलकाता): मुख्यमंत्री ममता बनर्जी 21 मार्च को लंदन जाएंगी और लंदन में ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में छात्रों को संबोधित करेंगी. अभी यह पता नहीं चला है कि वह किस विषय पर भाषण देंगी. बता दें कि पिछले साल कोलकाता में एक शैक्षणिक संस्थान में वक्तव्य रखते हुए ममता बनर्जी ने ऐलान किया था कि उन्हें ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी और लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स की ओर से आमंत्रित किया गया है.

इस बार ममता ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के आमंत्रण का जवाब दिया है और वह 21 मार्च को विदेश दौरे पर जाएंगी. वह दुनिया के सबसे प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थानों में से एक ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में भाषण देंगी.

सूत्रों के मुताबिक, मुख्यमंत्री 21 मार्च को कोलकाता से विमान से दुबई के लिए रवाना होंगी. वहां से वह लंदन जाएंगी. ऑक्सफोर्ड में भाषण देने के अलावा ममता बनर्जी के कई अन्य कार्यक्रम भी हैं. वह वहां कुछ उद्योगपतियों से भी मुलाकात करेंगी और उनके साथ बैठक करेंगी.

इससे पहले ममता बनर्जी को 2020 में ऑक्सफोर्ड यूनियन के आमंत्रण पर भाषण देना था, लेकिन आखिरी समय में ऑक्सफोर्ड के अधिकारियों ने उन्हें ईमेल भेजकर सूचित किया कि कार्यक्रम फिलहाल स्थगित कर दिया गया है.

ऑक्सफोर्ड यूनियन ने घोषणा की थी कि कार्यक्रम को अंतिम समय में स्थगित करना पड़ा और ममता बनर्जी उस घटना से नाराज थीं. मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने 2015 में लंदन का दौरा किया था. उनके साथ राज्य के कई तत्कालीन मंत्री भी थे. उस समय ममता बनर्जी बकिंघम पैलेस गयी थीं. तत्कालीन वित्त मंत्री अमित मित्रा के अलावा कोलकाता के तत्कालीन मेयर शोभन चटर्जी, सुगत बसु, डेरेक ओ ब्रायन और देव भी उनके साथ थे.

नबान्न सूत्रों के अनुसार, वह 21 मार्च को दुबई होते हुए लंदन पहुंचेंगी. उनका 29 मार्च को दुबई होते हुए कोलकाता लौटने का कार्यक्रम है. लंदन में पश्चिमी बंगाल औद्योगिक विकास निगम, फिक्की और यूके इंडिया बिजनेस काउंसिल के सहयोग से 25 मार्च को एक उद्योग सम्मेलन का आयोजन किया गया है. नबान्न सूत्रों के अनुसार, मुख्यमंत्री ममता बनर्जी सम्मेलन में उपस्थित रहेंगी. औद्योगिक सम्मेलन में राज्य के शीर्ष उद्योगपतियों के भी भाग लेने की उम्मीद है.

इसके बाद 27 मार्च को मुख्यमंत्री ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में भाषण देंगी. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी एलुमनाई एसोसिएशन द्वारा एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया है, नवंबर में विश्व व्यापार सम्मेलन में, ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के प्रो वाइस चांसलर जोनाथन मिची ने सीएम को विश्वविद्यालय आने का निमंत्रण दिया था.

बता दें कि ममता बनर्जी 2021 में तीसरी बार राज्य की मुख्यमंत्री बनी हैं और 2011 में वाममोर्चा के 34 सालों के शासन को समाप्त कर जब से सत्ता में आई हैं. उनकी पार्टी तृणमूल कांग्रेस लगातार चुनावों में जीत हासिल कर रही है, हालांकि पिछले कुछ चुनावों में बीजेपी से तृणमूल कांग्रेस का जबरदस्त मुकाबला हुआ है, लेकिन अंततः ममता बनर्जी ने जीत हासिल की है.

ममता बनर्जी आठ बार लोकसभा सांसद रह चुकी हैं और सांसद रहते हुए रेल मंत्री से लेकर कोयला मंत्री का पदभार संभाल चुकी हैं. इसके साथ ही वह पिछले तीन बार से राज्य की सीएम भी हैं. छात्र जीवन से ही राजनीति में कदम रखने वालीं ममता बनर्जी ने लेफ्ट पार्टियों के खिलाफ लंबी लड़ाई लड़ीं. नंदीग्राम और सिंगूर जैसे आंदोलन का नेतृत्व किया है. उनका लंबा राजनीतिक और प्रशासनिक अनुभव है.

कोटशिला-पुरुलिया डबल लाइन कार्य का महाप्रबंधक ने किया निरिक्षण

कोलफील्ड मिरर 06 मार्च (पुरुलिया): कोटशिला डबल लाइन जल्द ही चालू हो जाएगी। दक्षिण पूर्व रेलवे के महाप्रबंधक ने कहा।

आज बुधवार को रेलवे के महाप्रबंधक अनिल कुमार मिश्रा ने कोटशिला-पुरुलिया डबल लाइन कार्य और पुरुलिया जिले के कुछ स्टेशनों का दौरा किया। वह आज दोपहर एक विशेष ट्रेन से झालदा स्टेशन पहुंचे। अमृत भारत स्टेशन के कार्यों और अन्य मामलों का निरीक्षण किया।

स्टेशन प्रबंधक, रेलवे अधिकारियों और आम जनता से बात की। झालदा स्टेशन पर पत्रकारों से बात करते हुए दक्षिण पूर्व रेलवे के महाप्रबंधक अनिल कुमार मिश्रा ने कहा कि पुरुलिया-कोटशिला डबल लाइन ट्रेन सेवा इसी माह शुरू कर दी जाएगी।

स्थानीय लोगों द्वारा झालदा स्टेशन पर कुछ और नई ट्रेनों के ठहराव की मांग के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने कहा कि इनका नियंत्रण रेल मंत्रालय के पास है। फिर भी, लोगों की मांगों से अवगत कराया जाएगा।

इस अवसर पर पुरुलिया के सांसद ज्योतिर्मय सिंह महतो, रांची डिवीजन के डीआरएम जसमीत सिंह बिंद्रा और अन्य रेलवे अधिकारी उपस्थित थे।

बक्सर-टाटा एक्सप्रेस में आग की घटना

कोलफील्ड मिरर 06 मार्च (पुरुलिया): बुधवार को बक्सर-टाटा एक्सप्रेस (ट्रेन संख्या 18184) में आग लग गई, उक्त घटना कुसतोर और छर्रा स्टेशनों के बीच आसनसोल-पुरुलिया डबल लाइन पर हुई।

छर्रा स्टेशन के गेटमैन ने 15:20 बजे रेलवे अधिकारियों को कोच संख्या 6 के शौचालय से धुआं निकलने की सूचना दी। जिसके बाद पुरुलिया फायर ब्रिगेड को सूचित किया गया। सावधानी के रूप में, ओवरहेड इलेक्ट्रिक लाइन की बिजली तुरंत बंद कर दी गई। रेलवे स्टाफ ने आग को जल्दी नियंत्रित कर लिया, और 15:45 बजे तक प्रभावित कोच को ट्रेन से अलग कर दिया गया। ट्रेन एग्जामिनर टीम नुकसान का आकलन करने के लिए घटनास्थल की ओर रवाना हो चुकी है। इस घटना में कोई यात्री घायल या प्रभावित नहीं हुआ। घटना के कारणों की जांच जारी है।

सांप्रदायिक भेदभाव बढ़ाना चाहती है, तृणमूल सरकार- जगन्नाथ चटर्जी

कोलफील्ड मिरर 06 मार्च (कोलकाता): भाजपा के बंगाल महासचिव जगन्नाथ चटर्जी ने बुधवार को कहा कि तृणमूल सरकार जाति आधारित सर्वे कराकर सांप्रदायिक भेदभाव बढ़ाना चाहती है। इसका मकसद मुस्लिम ओबीसी को फायदा पहुंचाना है, इससे हिंदू ओबीसी को नुकसान होगा।

दरअसल, 27 फरवरी को ममता बनर्जी ने कहा था कि भाजपा ने पश्चिम बंगाल के हर जिले में फर्जी मतदाताओं को जोड़ा है। चुनाव आयोग भी इसमें उनकी मदद कर रही है। मैं बंगाल के लोगों से अपील करती हूं कि वे वोटर लिस्ट की जांच करें। किसी भी दिन एनआरसी और सीएए के नाम पर सही वोटर्स के नाम हटाए जा सकते हैं।

इसके जवाब में चुनाव आयोग ने कहा था कि पहले के मैनुअल सिस्टम में एपिक नंबर गलत तरीके से दिए गए थे। लेकिन अब यह प्रक्रिया एरोनेट (इलेक्टोरल रोल मैनेजमेंट सिस्टम) पर शिफ्ट हो चुकी है, जिससे यह गलती दोबारा नहीं होगी।

जगन्नाथ चटर्जी ने कहा कि सर्वे में पूछे गए सवाल सांप्रदायिक और गैरकानूनी चटर्जी ने कहा कि सर्वे में पूछे जा रहे सवाल हिंदू और मुस्लिमों के बीच विभाजन पैदा करेंगे। ये सांप्रदायिक और गैरकानूनी दोनों है। सर्वे में पूछा जा रहा है कि क्या आप अपने पड़ोसियों के साथ खाना साझा करते है। आज-तक इस तरह के सवाल हमने कभी नहीं देखे। जातीय सर्वे के जरिए जानबूझकर सांप्रदायिक दरार पैदा करने की कोशिश की जा रही है।

ममता ने कहा था कि भाजपा ने दिल्ली-महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव फर्जी वोटों से जीता है, ममता बनर्जी ने 27 फरवरी पार्टी कार्यकर्ताओं की एक मीटिंग में भाजपा ने दिल्ली और महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव फर्जी वोटों के जरिए जीता। इसमें चुनाव आयोग ने मदद की। भाजपा नेताओं ने चुनाव आयोग के ऑफिस में बैठकर ऑनलाइन फर्जी मतदाता सूची बनाई है। उन्होंने पश्चिम बंगाल के हर जिले में फर्जी मतदाताओं को जोड़ा है।

ममता का 2026 में 215 सीटें जीतने का लक्ष्य 27 फरवरी की मीटिंग में ही 2026 के विधानसभा चुनाव में 215 सीटें जीतने का लक्ष्य रखा था। ममता ने कहा- 2026 में विधानसभा चुनाव होंगे। राज्य की 294 विधानसभा सीटों में से पार्टी ने इस बार 215 सीट जीतने का लक्ष्य रखा है। हमारी कोशिश होगी कि लोकसभा की तरी विधानसभा में भी भाजपा को कम से कम सीटों पर रोका जाए। 2021 विधानसभा चुनाव में TMC ने 213 सीटें जीती थीं। वहीं भाजपा को 77 सीटें हासिल हुई थी।

दूध और दुग्ध उत्पादों पर जागरूकता शिविर

तारकेश कुमार ओझा

कोलफील्ड मिरर 06 मार्च (खड़गपुर): पश्चिम मेदिनीपुर जिले के केशपुर ब्लॉक के गढ़सेनापत्या प्राथमिक विद्यालय में बुधवार की शाम को दुधश्री मिल्क प्रोड्यूसर्स कंपनी की ओर से दूध और दुग्ध उत्पादों पर जागरूकता शिविर आयोजित किया गया। इस शिविर में हुगली के चुचुड़ा से आए उक्त संस्था के ह्यूमन रिसोर्स अधिकारी तन्मय माजी, दूध की गुणवत्ता परीक्षक शुभ्रज्योति सरकार ने पॉवर पॉइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से विद्यालय के छात्रों को नियमित दूध पीने के फायदों के बारे में बताया।

इस जागरूकता शिविर में एनडीडीबी डेयरी सर्विसेज की ओर से असिस्टेंट मैनेजर बिदेश बोस, सोमाश्री अ◌ादक, फील्ड ऑफिसर महादेव सानी आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का आयोजन दुधश्री मिल्क प्रोड्यूसर्स की ओर से स्थानीय सहायक तन्मय धूल्या ने किया था।

असिस्टेंट मैनेजर बिदेश बोस ने अपने संबोधन में कहा, "पश्चिम बंगाल के विभिन्न जिलों में प्राथमिक विद्यालयों में यह जागरूकता शिविर आयोजित किया जा रहा है। गढ़सेनापत्या क्षेत्र में प्रत्येक घर में गाय है। इसलिए यहां के लोगों को दूध और दुग्ध उत्पादों के बारे में जागरूक करने के लिए यह शिविर आयोजित किया गया है।

प्रधान शिक्षक स्नेहाशीष चौधरी ने कहा, "आगे के दिनों में हम शिशुओं और माताओं को लेकर इस तरह के जागरूकता शिविर आयोजित करने के लिए प्रयास करेंगे।"

कार्यक्रम के अंत में दुधश्री मिल्क प्रोड्यूसर्स कंपनी की ओर से शिक्षा सामग्री और कंपनी द्वारा उत्पादित लस्सी पैकेट बच्चों को दिए गए।

कार्यक्रम को सफल बनाने में विद्यालय के शिक्षकों और पूर्व छात्रों की भूमिका महत्वपूर्ण रही।

तृणमूल नेता व कार्यकर्ता घर-घर जाकर फर्जी मतदाताओं को पकड़ेंगे

कोलफील्ड मिरर 06 मार्च (पुरुलिया): आगामी विधानसभा चुनाव से पहले पुरुलिया जिले के हुड़ा प्रखंड के लुधुड़का क्षेत्र में फर्जी मतदाताओं को पकड़ने के लिए तृणमूल कांग्रेस मैदान में उतर गई है।

राज्य की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के निर्देश पर लुधुड़का क्षेत्र में तृणमूल कांग्रेस के नेता और कार्यकर्ता मतदाता सूची निगरानी अभियान कार्यक्रम के माध्यम से घर-घर जाकर फर्जी मतदाताओं को पकड़ेंगे। बुधवार को लुधुड़का क्षेत्र तृणमूल कांग्रेस ने मतदाता सूची निगरानी अभियान को लेकर पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ लुधुड़का प्राथमिक विद्यालय के सामने कार्यकर्ता बैठक की।

इस अवसर पर तृणमूल कांग्रेस के हुड़ा ब्लॉक अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो, पुरुलिया जिला तृणमूल कांग्रेस के उपाध्यक्ष नरेंद्रनाथ चक्रवर्ती, हुड़ा पंचायत समिति के निर्माण निदेशक पुतुल मुखर्जी, लुधुड़का ग्राम पंचायत अध्यक्ष संगीता मोदी, उप-प्रधान राणा प्रताप राय, तृणमूल कांग्रेस के लुधुड़का क्षेत्र अध्यक्ष कार्तिक मुखर्जी सहित लुधुड़का क्षेत्र के 13 बूथों के बूथ अध्यक्ष और पार्टी कार्यकर्ता उपस्थित थे।

आज की कार्यकर्ताओं की बैठक के बाद तृणमूल कांग्रेस के हुड़ा ब्लॉक अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो ने कहा कि देश के किसी भी मुख्यमंत्री की तुलना राज्य की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी से नहीं की जा सकती।

उन्होंने वही किया जो उन्होंने कहा था और उन्होंने राज्य के लोगों को क्या दिया है, इस बारे में कहने की कोई गुंजाइश नहीं है। इसलिए मुख्यमंत्री के निर्देश पर हम भाजपा की साजिश को विफल करने के लिए मैदान में उतर रहे हैं।

दूसरी ओर, तृणमूल कांग्रेस के लुधुड़का क्षेत्र के अध्यक्ष कार्तिक मुखर्जी ने कहा, "राज्य की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के निर्देश पर हम अब फर्जी मतदाताओं को पकड़ने के लिए घर-घर अभियान चलाने जा रहे हैं। ताकि लोग निष्पक्ष रूप से अपना वोट डाल सकें।

आईएसपी में 54वें राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस का आयोजन

कोलफील्ड मिरर 06 मार्च (बर्नपुर): इस्को स्टील प्लांट(आईएसपी) के भारती भवन में बड़े उत्साह के साथ 54वें राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन आईएसपी के कार्यकारी निदेशक (परियोजनाएं) सुरजीत मिश्रा द्वारा दीप प्रज्वलन कर किया गया। इस अवसर पर कार्यकारी निदेशक (एमएम), सीजीएम इंचार्ज (एचआर), कार्यकारी निदेशक (कार्य) (प्रभारी), एफ एंड ए प्रमुख, एम एंड एचएस प्रमुख, जीएम इंचार्ज (सुरक्षा, एफएस और पर्यावरण), अन्य वरिष्ठ अधिकारी, सभी कार्यात्मक ट्रेड यूनियनों के प्रतिनिधि और आईओए के सदस्य उपस्थित थे।

कार्यक्रम की शुरुआत जीएम इंचार्ज (सुरक्षा, एफएस और पर्यावरण) प्रणब

कुमार पॉल के स्वागत भाषण से हुई। अपने संबोधन में, सुरजीत मिश्रा ने कहा कि सुरक्षा हमेशा हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए और मिलकर हम आईएसपी को इस्पात उद्योग में सबसे सुरक्षित इस्पात संयंत्र बना सकते हैं।

अभिक डे ने कहा कि सुरक्षा हमारे व्यवसाय का एक अभिन्न हिस्सा होनी चाहिए और हमें सुरक्षा मानकों का कड़ाई से पालन करना चाहिए।

आईएसपी कर्मचारियों द्वारा दो शानदार सुरक्षा नाटक भी प्रस्तुत किए गए। सुरक्षा अभियंत्रण विभाग द्वारा राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस के तहत आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे सुरक्षा नारा लेखन, पोस्टर निर्माण, प्रश्नोत्तरी, निबंध लेखन, नियर मिस रिपोर्टिंग, सर्वश्रेष्ठ रैंकिंग सुरक्षा सर्कल टीमों के लिए विशेष सुरक्षा पुरस्कार आदि के विजेताओं को सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम के दौरान सुरजीत मिश्रा, कार्यकारी निदेशक (परियोजनाएं), आईएसपी द्वारा प्रमुख निर्माताओं द्वारा प्रदर्शित आधुनिक पीपीई और अन्य उपकरणों की सुरक्षा प्रदर्शनी का भी उद्घाटन किया गया।

इस आयोजन में वरिष्ठ अधिकारियों, नियमित और संविदा कर्मचारियों की बड़ी भागीदारी रही। कार्यक्रम का संचालन हिमांशु नीरज, प्रबंधक (सुरक्षा) ने किया और इसे सुरक्षा अभियंत्रण विभाग के अधिकारियों द्वारा कुशलतापूर्वक समन्वित किया गया।

कल्याणी विश्वविद्यालय में एसएफआइ और टीएमसीपी समर्थकों के बीच झड़प

कोलफील्ड मिरर 06 मार्च (कोलकाता): नदिया जिले के कल्याणी विश्वविद्यालय परिसर में मंगलवार को एसएफआइ और टीएमसीपी समर्थकों के बीच झड़प हो गयी. इसमें सिविक वॉलंटियर समेत दोनों पक्षों के कई लोग घायल हुए हैं. टीएमसीपी नेताओं का कहना है कि वे जादवपुर विश्वविद्यालय में शिक्षा मंत्री पर हुए हमले के खिलाफ विश्वविद्यालय के गेट के सामने प्रदर्शन कर रहे थे. इस दौरान एसएफआइ समर्थक उन पर तंज कसने लगे. विरोध करने पर हमला कर दिया.

वहीं, एसएफआइ नेताओं का कहना है कि वे जादवपुर विवि में छात्रों पर हुए हमले के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे थे. इसी दौरान बाहरी लोगों ने उन पर हमला कर दिया. उनके कई समर्थक घायल हो गये, जिन्हें जवाहरलाल नेहरू मेडिकल अस्पताल ले जाया गया. उधर, घटना के बाद इलाके में बड़ी संख्या में पुलिस बल की तैनाती कर दी गयी है.

शनिवार को जादवपुर विश्वविद्यालय में आयोजित सम्मेलन में भाग लेने के बाद शिक्षा मंत्री ब्रात्य बासु को छात्रों ने काफी देर तक घेर कर रखा. उन्हें दो घंटे तक बंधक बनाये रखा और उनकी गाड़ी पर हमला किया. यह सब पूर्व सुनियोजित था. मंत्री पर हमला वामपंथी और अति-वामपंथी समर्थकों के एक वर्ग द्वारा योजनाबद्ध हमला था, जो उनके कार्यक्रम को बाधित करने पर आमादा था. शिक्षक संगठनों के प्रतिनिधियों ने इस तर की शिकायत की है. डब्ल्यूबीसीयूपीए के सदस्यों ने आरोप लगाया कि छात्रों ने उन पर पानी की बोतलों और कुर्सियों से हमला किया. चप्पलें फेंकीं और काफी हुड़दंग मचाया. भीड़ दिन की कार्यवाही को बाधित करने पर आमादा थी. शिक्षकों ने बताया कि दिन का कार्यक्रम दो भागों में विभाजित था. पहले भाग में सेमिनार और उसके बाद संगठन की वार्षिक आम बैठक होने वाली थी. कुछ शिक्षकों ने कहा कि उनके पास यह मानने के कारण हैं कि हमला योजनाबद्ध था. कुछ शिक्षकों ने मानव श्रृंखला बनाकर बसु को विश्वविद्यालय से बाहर निकालने की कोशिश की. शिक्षकों ने कहा, “हमें शर्म आती है कि छात्र शिक्षकों की मौजूदगी में ऐसी गंदी भाषा का इस्तेमाल कर सकते हैं. काफी उकसावे की बातें की गयीं और परिवेश का माहौल अशांत किया गया.

जादवपुर विश्वविद्यालय (जेयू) में राज्य के शिक्षा मंत्री ब्रात्य बसु को लेकर जो घटना हुई थी, उस मामले में एसएफआइ को आड़े हाथ लेते हुए तृणमूल कांग्रेस ने कई सवाल उठाये. तृणमूल आइटी सेल के प्रमुख देबांग्शु भट्टाचार्य ने मंगलवार को संवाददाताओं से बातचीत करते हुए कई तस्वीरें व वीडियो दिखाते हुए दावा किया कि वाममोर्चा के नेता जो प्रचार कर रहे हैं, वह पूरी तरह से झूठ का पुलिंदा है. यह सब जानबूझ कर किया जा रहा है. भट्टाचार्य ने कहा कि एसएफआइ ने जो दावा किया है, उसका असली वीडियो कहां है. साथ ही शनिवार को एसएफआइ की ओर से शिक्षा मंत्री को एक ज्ञापन सौंपा गया था. इसके बाद भी यह प्रचार किया जा रहा है कि शिक्षा मंत्री ने उन्हें समय नहीं दिया था. उन्होंने कहा कि यह कहा जा रहा है कि घटना के दिन तृणमूल के बाहरी कुछ गुंडे कैंपस में मौजूद थे. यदि यह सही है, तो इसकी कोई तस्वीर या वीडियो क्यों नहीं जारी किया जा रहा है.

एबीवीपी नेतृत्व ने मंगलवार को दावा किया कि यह वांछनीय नहीं है कि आंदोलन हमेशा लड़ाई का विषय बना रहे. अगर हम चाहते तो सुबह ही विरोध प्रदर्शन कर सकते थे, लेकिन हमने ऐसा नहीं किया. तृणमूल ने दो मिनट में जादवपुर पर कब्जा करने की चेतावनी दी. सोमवार को एबीवीपी ने जादवपुर में प्रवेश करने का प्रयास किया था, मंगलवार को फिर छात्र संगठन ने मांग की कि वे जादवपुर में सर्जिकल स्ट्राइक करेंगे. मंगलवार को एक संवाददाता सम्मेलन में एबीवीपी नेतृत्व ने कहा कि 2011 तक वामपंथियों ने हर परिसर में जो संस्कृति अपनायी थी, वही संस्कृति 2011 से तृणमूल कांग्रेस द्वारा अपनायी जा रही है. ऐसा लगता है कि तृणमूल छात्र परिषद, एसएफआइ और अन्य वामपंथी छात्र संगठन एक ही सिक्के के दो पहलू हैं. एबीवीपी छात्र परिषद जादवपुर में सर्जिकल स्ट्राइक करेगी. विश्वभारती एक नशे का स्थान था. आज विश्वभारती बदल गया है. राष्ट्रवादी छात्रों की संख्या बढ़ रही है और उनकी शक्ति कम होती जा रही है. जादवपुर के कई छात्र आत्मविश्वास से कह रहे हैं कि वे विद्यार्थी परिषद के लिए काम करना चाहते हैं, लेकिन उनके भीतर एक डर काम कर रहा है. एबीवीपी ने कहा, “हम उस गंदी संस्कृति की कड़ी निंदा करते हैं, जिसे इन वामपंथियों ने जादवपुर में माओवादी संस्कृति में बदल दिया है.

जिलाशासक ने काशीडांगा फ्री प्राइमरी स्कूल का जायजा लिया, मिड डे मिल का खाना भी खाया

कोलफील्ड मिरर 06 मार्च (बाराबनी): दोमहानी ग्राम पंचायत अंतर्गत काशीडांगा फ्री प्राइमरी स्कूल में पश्चिम बर्धमान के जिला शासक एस. पोन्नाबलम ने बुधवार को जायजा लिया. इसके साथ ही उन्होंने एक आईसीडीएस 30 नंबर सेंटर का भी दौरा किया. उन्होंने मिड डे मील के बारे में भी विद्यार्थियों से पूछा और खुद भी उन्होंने यह खाना खाया. इस मौके पर उनके साथ डीपीडीआरओ डॉक्टर अनिमेष कांति मान्ना, बाराबनी के वीडियो शीलादित्य भट्टाचार्य, अवर स्कूल परिदर्शक अक्षय भट्टाचार्य, काशीडांगा स्कूल के प्रधान शिक्षक पियूष राय उपस्थित थे.

इस मौके पर जिला शासक ने कहा इस तरह से लगातार पश्चिम बर्धमान जिले के विभिन्न स्कूलों और आंगनबाड़ी केन्द्रों का दौरा किया जा रहा है और वहां की व्यवस्था की जांच की जा रही है. उन्होंने कहा कि यहां पर स्कूल में पठन-पाठन ठीक चल रहा है. मिड डे मील की व्यवस्था भी ठीक है.

उन्होंने कहा कि स्कूल की तरफ से बाउंड्री वॉल की मांग रखी गई है और आंगनबाड़ी केंद्र में पानी की समस्या है, तो उसको दूर करने का भी प्रयास किया जाएगा. उन्होंने कहा कि इस तरह से जिला प्रशासन के सभी अधिकारी हफ्ते में एक दिन विभिन्न स्कूलों और आंगनबाड़ी केंद्रों का दौरा कर रहे हैं, ताकि सभी सुविधाओं को स्कूलों और आंगनबाड़ी केंद्रों तक पहुंचाया जा सके.

अधिकारियो के निर्देश के बाद चारदीवारी तोड़ी गई

कोलफील्ड मिरर 06 मार्च (बाराबनी): दोमहानी इलाके के कटघोला शर्मा पाड़ा में सरकारी जमीन पर बाउंड्री वॉल बनाने वाले व्यक्ति द्वारा बाउंड्री वॉल तोड़ दिया गया. कल ही प्रशासन के उच्च स्तरीय अधिकारियों द्वारा यहां का दौरा किया गया था और बाउंड्री वॉल बनाने वाले व्यक्ति को बाउंड्री तोड़ने का निर्देश दिया गया था. 24 घंटे के अंदर निर्देश का पालन हुआ और आज बाउंड्री वॉल तोड़ दिया गया. इस बारे में हमने बाउंड्री वॉल बनवाने वाले दीपक यादव से बात की तो उन्होंने कहा कि उन्होंने जमीन के लिए जो एक लाख रुपये एडवांस दिया था, वह थाने में उन्हें वापस मिल गया है, लेकिन बाउंड्री वॉल बनाने का और तुड़वाने का जब खर्च है, वह फिलहाल उन्ही को करना पड़ रहा है. इसके ऊपर क्या फैसला होगा, यह उन्हें फिलहाल नहीं पता, लेकिन उन्होंने जमीन के लिए जो एडवांस दिया था, वह ₹100000 उन्हें वापस मिल गया है. उन्होंने कहा कि उन्होंने तीन कट्ठा जमीन खरीदी थी और इसके लिए उन्होंने ₹100000 एडवांस दिया था.

ट्रैफिक जाम की समस्या को नियंत्रित करने के लिए पुलिस का विशेष अभियान

कोलफील्ड मिरर 06 मार्च (रानीगंज): शहर में बढ़ती ट्रैफिक जाम की समस्या को नियंत्रित करने के लिए रानीगंज थाना और रानीगंज ट्रैफिक पुलिस ने संयुक्त रूप से विशेष अभियान चलाया। इस अभियान के तहत शहर के सीआर रोड, मारवाड़ी पट्टी, बड़ा बाजार सहित विभिन्न इलाकों में बेतरतीब तरीके से खड़े किए गए दोपहिया वाहनों पर कार्रवाई की गई।

पुलिस ने सड़क किनारे पार्किंग नियमों का उल्लंघन करने वाले वाहन चालकों के खिलाफ सख्ती दिखाते हुए लगभग 40 दोपहिया वाहनों का चालान काटा। इन वाहन चालकों को उनके मोबाइल पर चालान का मैसेज भेजा जाएगा, और उन्हें यह चालान ऑनलाइन जमा करना होगा।

रानीगंज में यातायात जाम की समस्या लगातार गंभीर होती जा रही है। पुलिस प्रशासन ने कहा कि वाहन चालक निर्धारित पार्किंग स्थल का उपयोग करने के बजाय,सड़क किनारे या अव्यवस्थित ढंग से वाहन खड़ा कर देते हैं, जिससे यातायात बाधित होता है। इसी को रोकने के लिए पुलिस ने यह अभियान चलाया और आगे भी इस तरह की कार्रवाई जारी रखने की बात कही है।

यातायात पुलिस ने वाहन चालकों से अपील की है कि वे अपने वाहन सही स्थान पर पार्क करें, अन्यथा उनके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

सीआईएसएफ और एनडीआरएफ का आईएसपी, बर्नपुर में मॉक ड्रिल

कोलफील्ड मिरर 06 मार्च (बर्नपुर): इस्को स्टील प्लांट, बर्नपुर के सीआईएसएफ (केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल) इकाई द्वारा राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल (एनडीआरएफ) सेकेण्ड बटालियन हरिनघटा (पश्चिम बंगाल) के साथ संयुक्त मल्टी एजेन्सी मॉक ड्रिल का आयोजन किया गया। यह कार्यवाही आईएसपी बर्नपुर संयंत्र के एसएमएस (स्टील मेल्टिंग शॉप) के अन्तर्गत एल एच एफ #2 के कार्बन मोनो ऑक्साइड गैस पाइप लाइन में ब्लास्ट तथा इससे आगजनी होने के कारण फॅसे हुई कार्मिको को सुरक्षित बाहर निकालने तथा अग्नि दुर्घटना पर नियंत्रण कायम करने व आवश्यक कदम उठाये जाने से संबंधित सभी विभागो तथा रिस्पॉन्डर द्वारा इकाई के आपदा प्रबंधन योजना के अनुरूप कार्यवाही को कमवार अंजाम देने की प्रर्दशन स्वरूप प्रस्तुत किया गया । मॉक ड्रिल के तहत एन डी आर एफ की मदद से उचॉई में फसे हुए सभी पीड़ित कर्मियो को रोप रेस्क्यू विधि द्वारा स्ट्रेचर लेंसिंग तथा फ्लांईग फॉक्स के माध्यम से सुरक्षित बाहर निकालने का प्रर्दशन भी किया गया।

उक्त संयुक्त मल्टी एजेन्सी मॉक ड्रिल में सीआईएसएफ के सुरक्षा, अग्निशमन विभाग के बल सदस्य, लोकल पुलिस, अस्पताल के कर्मी, आई एस पी के सुरक्षा विभाग, स्टील मेल्टिंग शॉप तथा अन्य विभाग के साथ एनडीआरएफ सेकेण्ड बटालियन हरिनघटा (पश्चिम बंगाल) के साथ कुल 157 लोगो ने भाग लिया।

उक्त संयुक्त मल्टी एजेन्सी मॉक ड्रिल में ई डी (प्रोजेक्ट्स) सुरजीत मिश्रा, ईडी (एचआर) उमेंद्र पाल सिंह, महा प्रबंधक (एसएमएस) आनंद कुमार, महा प्रबंधक (सुरक्षा) प्रणव कुमार पॉल की उपस्थिति में आईएसपी बर्नपुर के सीआईएसएफ यूनिट के वरिष्ठ अधिकारियों के देख रेख में विधिवत एवं सुचारू रूप से सफलता पुर्वक सम्पन्न किया गया।

पुलिस ने सुतंद्रा के मौत की घटना का पुनर्निर्माण किया

कोलफील्ड मिरर 06 मार्च (दुर्गापुर): उपजिला अदालत ने मृतक सुतंद्रा चटर्जी के ड्राइवर राजदेव शर्मा को चार दिनों की पुलिस हिरासत में भेज दिया और फिर गुरुवार को कांकसा पुलिस ने राजदेव शर्मा से जुड़ी मध्य रात्रि की दुर्घटना की फिर से रचना की। सबसे पहले उन्हें गलसी स्थित पुरषा पेट्रोल पंप ले जाया गया, जहां से पुलिस ने उस दिन की घटनाओं का पुनर्निर्माण शुरू किया। इसके बाद उन्हें राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 19 के रास्ते पानागढ़ बाईपास पर ले जाया गया, जो पानागढ़ के प्रवेश द्वार पर है। वहां खड़े होकर उन्होंने दिखाया कि कैसे उन्होंने उस दिन बबलू यादव की कार को रोकने की कोशिश की थी और जब बबलू यादव की कार नहीं रुकी तो उन्होंने दोबारा कार का पीछा किया और मौके पर पहुंचे।

मौके पर पहुंचकर सुतंद्रा के ड्राइवर ने पुलिस अधिकारियों को बताया कि उस दिन दुर्घटना कैसे हुई थी और बबलू यादव की कार तिनमथा चौराहे पर कहां खड़ी थी। उसने पुलिस अधिकारियों को सारी बातें विस्तार से बताईं।

विधायक के पिता की स्मृति में नॉक आउट क्रिकेट टूर्नामेंट का उदघाटन

कोलफील्ड मिरर 06 मार्च (पांडवेश्वर): विधायक नरेंद्रनाथ चक्रवर्ती के पिता स्वर्गीय अरिंदम चक्रवर्ती की स्मृति में पांडवेश्वर प्रखंड के हरीपुर पंचायत के ख़ुटाडीह सूकबाजार में नॉक आउट क्रिकेट टूर्नामेंट का उद्घाटन हुआ, इस अवसर पर क्षेत्र के महाप्रबंधक अमिताभ भट्टाचार्य, एजेंट प्रभात कुमार, तृणमूल कांग्रेस के प्रखंड अध्यक्ष किरीट मुखर्जी, युवा अध्यक्ष निताई मंडल, पंचायत सदस्य रूपचंद मंडल समेत भारी संख्या में महिला पुरुष युवा उपस्थित थे, सभी अतिथियों ने मैदान के बीच में जाकर क्रिकेट टूर्नामेंट का उद्घाटन फीता काटकर किया,

इस अवसर पर सभी ने अरिंदम चक्रवर्ती के चित्र पर श्रद्धा सुमन अर्पित करने के बाद अरिंदम चक्रवर्ती के जीवन पर प्रकाश डाला और कहा कि सादगी के साथ रहने वाले और आने जाने वालो से बात करने और हाल चाल जानते थे और किसी भी समस्या का समाधान करने के लिए अपने बेटा को कहते थे, ऐसे पुरुष की स्मृति में क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन सही मायने में एक अच्छी शुरुआत है.

रेलवे का तोहफा- तीन और होली स्पेशल ट्रेने

कोलफील्ड मिरर 06 मार्च (आसनसोल): आगामी होली के दौरान यात्रियों की अपेक्षित भीड़ को कम करने के लिए, रेलवे ने विभिन्न दिशाओं में तीन (03) होली स्पेशल ट्रेनें चलाने का निर्णय लिया है। इस समस्या को कम करने और यात्रियों के लिए परेशानी मुक्त यात्रा सुनिश्चित करने के लिए, विशेष ट्रेन हावड़ा और आनंद विहार (टी) और संतरागाछी तथा दरभंगा जंक्शन के बीच चलाई जाएगी। ये विशेष ट्रेनें होली के त्यौहार के दौरान यात्रियों की अतिरिक्त भीड़ को समायोजित करने के लिए अतिरिक्त क्षमतायुक्त और सुविधाजनक रहेगी। 03009 हावड़ा– आनंद विहार होली स्पेशल 06. 03. 2025, 16. 03. 2025, 20. 03. 2025 और 24. 03. 2025 (04 ट्रिप) को 17:40 बजे हावड़ा से रवाना होगी और अगले दिन 22:30 बजे आनंद विहार पहुँचेगी और 03010 आनंद विहार– हावड़ा होली स्पेशल 08. 03. 2025, 18. 03. 2025, 22. 03. 2025 और 26. 03. 2025 (04 ट्रिप) को 00:30 बजे आनंद विहार से रवाना होगी और अगले दिन 03:00 बजे हावड़ा पहुँचेगी। विशेष ट्रेन मार्ग में दोनों दिशाओं में पूर्वी रेलवे क्षेत्राधिकार के आसनसोल मंडल के दुर्गापुर, आसनसोल स्टेशनों पर रुकेगी। ट्रेन में सामान्य द्वितीय श्रेणी, शयनयान श्रेणी और वातानुकूलित श्रेणी की सुविधा उपलब्ध होंगी। 03011 हावड़ा-आनंद विहार होली स्पेशल 07. 03. 2025, 11. 03. 2025, 15. 03. 2025, 19. 03. 2025 और 23. 03. 2025 को 17:40 बजे हावड़ा से रवाना होगी (05 ट्रिप) और अगले दिन 22:30 बजे आनंद विहार पहुंचेगी। और 03012 आनंद विहार-हावड़ा होली स्पेशल 09. 03. 2025, 13. 03. 2025, 17. 03. 2025, 21. 03. 2025 और 25. 03. 2025 को 00:30 बजे आनंद विहार से रवाना होगी (05 ट्रिप) और अगले दिन 03:00 बजे हावड़ा पहुंचेगी। यह विशेष ट्रेन रास्ते में दोनों दिशाओं में पूर्वी रेलवे क्षेत्राधिकार के आसनसोल मंडल में दुर्गापुर और आसनसोल स्टेशनों पर रुकेगी। ट्रेन में सामान्य द्वितीय श्रेणी, स्लीपर श्रेणी और वातानुकूलित श्रेणी की सुविधा उपलब्ध होंगे। 02827 संतरागाछी-दरभंगा होली स्पेशल दिनांक 12. 03. 2025 को संतरागाछी से 07:30 बजे रवाना होगी (01 ट्रिप) और उसी दिन 19:05 बजे दरभंगा पहुंचेगी। और 02828 दरभंगा -संतरागाछी होली स्पेशल दिनांक 12. 03. 2025 को दरभंगा से 20:20 बजे रवाना होगी (01 ट्रिप) और अगले दिन (गुरुवार) को संतरागाछी 09:00 बजे पहुंचेगी। यह विशेष ट्रेन रास्ते में दोनों दिशाओं में पूर्वी रेलवे क्षेत्राधिकार के आसनसोल मंडल में दुर्गापुर, आसनसोल, चित्तरंजन, मधुपुर और जसीडीह स्टेशनों पर रुकेगी। ट्रेन में सामान्य द्वितीय श्रेणी, शयनयान श्रेणी और वातानुकूलित श्रेणी की सुविधाएं उपलब्ध होंगी।

मिट्टी और पेड़ चोरी के मामले में फैली तनाव की स्थिति

कोलफील्ड मिरर 06 मार्च (जामुड़िया): मिट्टी चोरी को लेकर जामुड़िया क्षेत्र के परसिया ग्राम पंचायत अंतर्गत कुलडांगा गांव में काफ़ी तनाव फ़ैल गया, घटना की सूचना पाकर घटनास्थल पर पुलिस की विशाल टीम पहुंची।

आपको बता दें कि इलाके के एक जमीन मालिक उज्जवल घोष ने आरोप लगाया कि वह अपने काम के सिलसिले में बाहर रहते हैं, इसका फायदा उठाकर इलाके के निवासी कल्याण घोष ने उनके तकरीबन तीन बीघा जमीन के ऊपर जो पेड़ पौधे थे, उनको काट लिया और बेच दिया, अब तकरीबन 10 फीट गहराई तक मिटटी भी काट ली गई है, जब उन्हें इस बात की जानकारी मिली तो उन्होंने यहां आकर एक ट्रैक्टर को रोका और पुलिस को खबर दी. पुलिस ने आकर खाली ट्रैक्टर को अपनी हिफाजत में ले लिया.

दूसरी तरफ कल्याण घोष ने कहा कि उनके ऊपर जो मिट्टी चोरी और पेड़ चोरी का आरोप लगाया गया है, वह निराधार है. उन्होंने कहा कि उनका ट्रैक्टर ईंट भट्ठे में चलता था. शायद ट्रैक्टर का चालक आराम करने के लिए या खाना खाने के लिए गया था. उस समय खाली ट्रैक्टर को जप्त कर लिया गया. जब वह मामले की जानकारी लेने पहुंचे तो उनके साथ भी मारपीट की गई और गाली गलौज की गई।

इस बारे में जब हमने उज्जवल घोष से बात की तो उन्होंने कहा कि वह बाहर नौकरी करते हैं. इसलिए यहां पर नहीं रहते. ईसी का फायदा उठाकर कल्याण घोष द्वारा उनके जमीन पर पेड़ों को काटकर बेच दिया गया और मिट्टी भी काट ली गई. उन्होंने कहा कि उनकी तकरीबन तीन बीघा जमीन है जिस पर कल्याण घोष द्वारा 10 फीट गहराई तक मिटटी काट लिया गया है.

उन्होंने कहा कि वह अपने भतीजी की शादी में जब आए तो उन्हें अपने परिजनों से पता चला कि कल्याण घोष द्वारा इस तरह से उनके जमीन को नष्ट किया जा रहा है. उन्होंने कहा कि जब वह अपनी जमीन पर आए तो देखा कि एक ट्रैक्टर यहां पर खड़ा है. उन्होंने ट्रैक्टर को रोक लिया. वह चाहते हैं कि जिस तरह से कल्याण घोष द्वारा उनकी जमीन को बर्बाद किया जा रहा है. इस पर कार्रवाई की जाए।

हालांकि इस बारे में जब हमने कल्याण घोष से बात की तो उन्होंने कहा कि उन पर लगने वाले सभी आप बेबुनियाद है. उन्होंने कहा कि वह ईंट भट्टा में अपना ट्रैक्टर चलाते हैं।

इसलिए उन्हें मिट्टी के कारोबार से कोई मतलब नहीं है, उनका ट्रैक्टर चालक वहां पर खाना खाने के लिए गया था. उज्जवल घोष ट्रैक्टर की चाबी छीन ली. जब घटना की जानकारी पाकर वह वहां पर गए तो अरविंद घोष उज्जवल घोष और पंचायत प्रधान के पति मनेष घोष ने उनके साथ मारपीट की उनके मोटरसाइकिल की चाबी भी छीन ली गई है. उन्होंने साफ कहा कि उनका मिट्टी चोरी या पेड़ चोरी से कोई संबंध नहीं है वह सरकारी काम से जुड़े हुए हैं.

मतदाता सूची निगरानी अभियान को लेकर तृणमूल कांग्रेस की बैठक

कोलफील्ड मिरर 06 मार्च (पुरुलिया): अगले विधानसभा चुनाव से पहले तृणमूल कांग्रेस फर्जी मतदाताओं को पकड़ने के लिए मैदान में उतर रही है। पूरे राज्य के साथ-साथ तृणमूल कांग्रेस अब पुरुलिया जिले में भी मतदाता सूची निगरानी अभियान के जरिए घर-घर जाकर फर्जी मतदाताओं को पकड़ेगी।

राज्य की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के निर्देश के बाद शाका रेल गेट के समक्ष पुरुलिया जिले के रघुनाथपुर एक नंबर ब्लॉक के तृणमूल कांग्रेस कमेटी के पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ चर्चा बैठक की गयी। इस कार्यकर्ता सभा के आह्वान पर तृणमूल कांग्रेस शाखा के क्षेत्रीय अध्यक्ष कालीपद के नेतृत्व में यह कार्यकर्ता सभा हुई।

आयोजित चर्चा बैठक मुख्य रूप से रघुनाथपुर 1 नंबर ब्लॉक शाखा क्षेत्र के तृणमूल कांग्रेस पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ मतदाता सूची निगरानी अभियान के बारे में की गई। इस अवसर पर जिला महासचिव सौमेन तिवारी, रघुनाथपुर एक नंबर पंचायत समिति अध्यक्ष सुकुमणि मुर्मू, रघुनाथपुर एक नंबर पंचायत समिति के कार्यकारी निदेशक व शाखा क्षेत्र अध्यक्ष कालीपद बाउरी, तृणमूल कांग्रेस नेता मुकुल बनर्जी, अल्पसंख्यक सेल कार्यकर्ता जाकिर अंसार, शाखा ग्राम पंचायत प्रमुख सुपर्णा बनर्जी, तृणमूल कांग्रेस के नेता गण उपस्थित थे।

क्षेत्रीय अध्यक्ष कालीपद बाउरी ने कहा कि तृणमूल कांग्रेस अगले विधानसभा चुनाव से पहले फर्जी मतदाताओं को पकड़ने के लिए मैदान में उतर रही है। पूरे राज्य के साथ-साथ इस बार तृणमूल कांग्रेस पुरुलिया जिला शाखा मतदाता सूची निगरानी अभियान कार्यक्रम के माध्यम से घर-घर जाकर फर्जी मतदाताओं को पकड़ेगी।

उन्होंने यह भी कहा कि हम जनसंपर्क और ऐसे लोगों से बात करेंगे जो किसी तरह दीदी की सुविधाओं से वंचित हैं और इसका समाधान करने का प्रयास करेंगे। वहीं जिला महासचिव सौमेन तिवारी ने कहा कि हम तृणमूल कांग्रेस के सिपाही हैं, इसलिए हम दीदी के निर्देशों का अक्षरशः पालन करते हुए इस कार्यक्रम को क्रियान्वित करेंगे और अगले चुनाव में दीदी का हाथ मजबूत करेंगे।

आज का राशिफल

कोलफील्ड मिरर

मेष

दिन अच्छा रहेगा। कार्यवश यात्रा पर जाना पड़ सकता है। शारीरिक रूप से स्वास्थ रहेगे। व्यापार में कोई नई डील फ़ाइनल हो सकती है। परिवार में मांगलिक कार्य के योग बनेंगे। कोई नया मेहमान परिवार में आ सकता है।

वृषभ

दिन बढ़िया रहेगा। कोई रुका हुआ कार्य पूर्ण होगा। मानसिक प्रसन्नता रहेगी। स्वास्थ्य में गिरावट महसूस कर सकते है। व्यापार में लाभ होगा। घर में मेहमानों का आना होगा। पत्नी के साथ सम्बन्ध अच्छे बनेगे। बाहर घूमने जा सकते हैं।

मिथुन

दिन उतार-चढ़ाव भरा रहेगा। न चाहते हुए भी कोई बड़ा डिसीजन फैमिली को लेकर लेना पड़ सकता है। आपका मन दुखी रहेगा। व्यापार में विरोधी काम बिगड़ सकते हैं। स्वास्थ्य में परेशानी महसूस होगी। पत्नी से मतभेद बने रहेंगे।

कर्क

दिन अच्छा रहेगा। किसी विशेष कार्य को लेकर यात्रा पर जा सकते हैं। न्यायालय पक्ष में विजय प्राप्त होगी। व्यापार में आय के नए स्रोत बनेंगे। परिवार में मान-सम्मान बढ़ेगा। कोई बड़ा आप निर्णय परिवार के हित में आप ले सकते हैं।

सिंह

दिन मिलाजुला रहेगा। व्यर्थ के वाद-विवाद में फंस सकते हैं। कोई झूठा आरोप आप पर लग सकता है। स्वास्थ्य में कमजोरी महसूस करें। मन में चिंता बनी रहेगी। व्यापार में परिवर्तन करना ठीक नहीं। परिवार में झगड़ा हो सकता है।

कन्या

दिन उत्तम रहेगा। नौकरी क्षेत्र में सफलता मिलेगी। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। माता-पिता का सहयोग मिलेगा। व्यापार में आर्थिक मदद मिल सकती है। परिवार में चल रही कोई पुरानी समस्या का समाधान निकलेगा। मन प्रसन्न रहेगा।

तुला

दिन सामान्य रहेगा। महत्वपूर्ण कार्य अटक सकता है। मानसिक तौर से परेशान रह सकते हैं। आर्थिक स्थिति सामान्य रहेगी। व्यवसाय में गिरावट महसूस होगी। परिवार में कोई अप्रिय घटना घट सकती है। बोलचाल में संयमित रहे।

वृश्चिक

दिन मिलाजुला रहेगा। अत्यधिक भागदौड़ के कारण शारीरिक दृष्टि से परेशान होंगे। स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। कोई विशिष्ट व्यक्ति से मुलाकात होने से आपको आर्थिक तौर से लाभ हो सकता है। व्यवसाय में कोई बड़ा निवेश आज न करें।

धनु

दिन बढ़िया रहेगा। कोई सुखद समाचार मिल सकता है। व्यवसाय में उन्नति कर सकते हैं। सहयोगी पार्टनर से सावधान रहना होगा। विरोधी आपके विरुद्ध कोई बड़ा षड्यंत्र तैयार कर सकते हैं। परिवार में में माहौल खुशनुमा बना रहेगा।

मकर

दिन अच्छा रहेगा। स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दे। मानसिक रूप से थोड़ा परेशान रह सकते हैं। बच्चों के भविष्य को लेकर प्लान बनायेगे। व्यवसाय में लाभ की स्थिति दिखाई पड़ेगी। परिवार मे खुशियाँ आयेगी। जीवनसाथ से सम्बन्ध अच्छे रहेगे।

कुंभ

दिन मिलाजुला रहेगा। स्वास्थ्य को लेकर परेशान रहेंगे। व्यर्थ की विवाद में आप आ सकते हैं। व्यापार में नुकसान होने की संभावना है। किसी परिचित व्यक्ति के कारण व्यवसाय में लाभ होगा। परिवार में अपनों से मतभेद बढ़ सकते हैं।

मीन

दिन बढ़िया रहेगा। कार्यवश की गई यात्रा सुखद रहेगी। किसी नए काम का विचार बना रहे हैं, उस कार्य में थोड़ा विलंब हो सकता है। व्यवसाय में परिवर्तन के योग हैं। पत्नी से मतभेद दूर करने का प्रयास करें। बच्चों को लेकर चिंतित रहेगे।

झरिया विधायक रागिनी सिंह ने 27 गांवों को नगर निगम से अलग किए जाने का मामला सदन में उठाया

कोलफील्ड मिरर 06 मार्च (धनबाद): झारखंड विधानसभा के बजट सत्र के प्रश्नकाल के दौरान झरिया विधायक रागिनी सिंह ने 27 गांवों को नगर निगम से अलग किए जाने का मामला सदन में उठाते हुए कहा कि झरिया विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत 27 गांवों को धनबाद नगर निगम मे शामिल होने से वहां के लोग नागरीय सुविधा तथा सड़क, पानी एवं अन्य सुविधाएँ नहीं मिल रही हैं. जबकि नगर निगम के माध्यम से विभिन्न मद में राजस्व की वसूली की जा रही है. शहरी होने के कारण इन ग्रामीणों के सामने जीवनयापन का गंभीर संकट है. सिर्फ यही गांव नहीं धनबाद नगर निगम में शामिल हर गांव के किसानों का यही दर्द है. शहरी बने तो किसानों को मिलने वाली सुविधाएं छिन गईं.न चेकडैम बन रहे, न सिंचाई की योजना आ रही, ऐसे में खेती भी करना मुश्किल है. 27 गांवों के करीब दस हजार किसान आवाज उठा आंदोलनरत रहे हैं, उन्हें नगर निगम से हटा पंचायत का हक दीजिए.

विधायक श्रीमती रागिनी सिंह ने कहा कि गांव शहर में शामिल क्या हुए, किसानों का अर्थतंत्र चौपट हो गया. सब्सिडी पर बीज, खाद, कृषि उपकरण अब नहीं मिल रहे है. खेती में सामान्य किसान की तुलना में शहर के ग्रामीणों को अधिक रुपये खर्च करने पड़ रहे. उन्हीं 27 गांवों के करीब दस हजार किसान आवाज आज झारखंड विधानसभा के बजट सत्र के प्रश्नकाल में मैने उठाया है झरिया अंचल के सभी गांवों को एक साथ धनबाद नगर निगम में शामिल कर लिया गया. नतीजा यह हुआ कि झरिया अंचल के ठेठ गांवों पर भी नगर निगम के टैक्स का बोझ बढ़ गया है. गांव वाले पहले भी निगम से अलग करने की आवाज उठा चुके है। 22 गांव तो ऐसे है जिन्हें तत्काल नगर निगम से बाहर निकालने की जरूरत है मै सरकार से दोबारा से सभी वर्णित क्षेत्रों का अवलोकन करा कर जल्द से जल्द सभी वर्णित गांवों को नगर निगम क्षेत्र से विमुक्त कर ग्रामीण क्षेत्र में स्थानांतरित किए जाने की मांग करती हूँ।

वही इसी मामले पर हटिया विधायक नवीन कुमार जैसवाल, धनबाद विधायक राज सिन्हा और टुंडी विधायक मथुरा महतो ने भी झरिया विधायक रागिनी सिंह द्वारा उठाए गए मामले पर अपना समर्थन देते हुए सरकार से पुनः सर्वेक्षण करा गांवों को पुनः ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानांतरित किए जाने की मांग की।

झारखंड में 8 हजार सरकारी स्कूलों में सिर्फ एक टीचर, बच्चे हैं 3.81 लाख- हेमंत सरकार

कोलफील्ड मिरर 06 मार्च (धनबाद): रांची/ झारखंड की हेमंत सोरेन सरकार ने कहा है कि राज्य में करीब 8 हजार स्कूल केवल एक शिक्षक के भरोसे चल रहे हैं, जबकि इनमें 3.81 लाख बच्चे पढ़ते हैं। झारखंड के शिक्षा मंत्री ने विधानसभा में एक सवाल के जवाब में चौंकाने वाला खुलासा किया।

झारखंड के शिक्षा मंत्री रामदास सोरेन ने मंगलवार को कहा कि राज्य में 7,930 सरकारी स्कूल ऐसे हैं, जिनमें केवल एक-एक शिक्षक ही कार्यरत है। शिक्षकों के संकट पर विधानसभा में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) विधायक राज सिन्हा के प्रश्न के लिखित उत्तर में उन्होंने कहा कि इन स्कूलों में 3.81 लाख छात्र दाखिल हैं।

बाद में सदन में मंत्री सोरेन ने कहा कि 103 स्कूल ऐसे हैं जिनमें कोई छात्र नहीं है और उनमें 17 शिक्षक कार्यरत हैं।

उन्होंने कहा, 'हमने 'स्कूल चलो अभियान' जैसी मुहिम शुरू की है, जो खासतौर पर उन इलाकों में चलाई जा रही है जहां स्कूलों में बच्चे नहीं आ रहे हैं, ताकि छात्रों को फिर से स्कूल लाया जा सके।' मंत्री ने कहा कि 26,000 सहायक अध्यापकों की भर्ती प्रक्रियाधीन है।

सीएफएम संक्षिप्त

मैट्रिक और इंटर की कॉपियों की जांच होली के बाद शुरू होगी

कोलफील्ड मिरर 06 मार्च (धनबाद): रांची/ झारखंड में मैट्रिक और इंटर की कॉपियों की जांच होली के बाद शुरू हो जाएगी। इसके लिए 60 मूल्यांकन केंद्र बनाए गए हैं। 20 अप्रैल तक कॉपियों की जांच पूरी हो जाने की संभावना है। 15 जून तक रिजल्ट जारी हो सकता है। शिक्षा मंत्री ने कहा कि राज्य में कोई भी स्कूल बंद नहीं होगा। भले ही उस स्कूल में एक भी बच्चा न जाता हो। स्कूलों में शिक्षक भी रहेंगे और स्कूल भी चलते रहेंगे।

जामताड़ा पुलिस ने 4 साइबर अपराधियों को गिरफ्तार किया

कोलफील्ड मिरर 06 मार्च (धनबाद): जामताड़ा/ साइबर अपराध के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के दौरान जामताड़ा पुलिस ने जामताड़ा के नारायणपुर थाना स्थित मदनाडीह गांव के समीप से 4 साइबर अपराधियों को गिरफ्तार किया है। एसडीपीओ ने बताया कि इन अपराधियों के पास से 08 मोबाइल, 15 सिम, 03 मोटरसाइकिल, 01 एटीएम कार्ड, 01 आधार कार्ड, 01 वोटर कार्ड, 01 पेन कार्ड बरामद किया गया।

अमानवीय व्यवहार कतई बर्दाश्त नहीं- विधायक

कोलफील्ड मिरर 06 मार्च (धनबाद): गिरिड़ीह जिला के सरिया कस्तूरबा विद्यालय की वार्डन मैडम की पिटाई से 5 छात्राएं चोटिल,एक का कंधे में फ्रैक्चर /डुमरी विधायक जयराम महतो ने कहा, इस तरह का अमानवीय व्यवहार कतई बर्दाश्त नहीं, डीसी ने दिया जांच का आदेश।

चाकू बाजी के मामले में मुख्य आरोपी गया जेल

कोलफील्ड मिरर 06 मार्च (धनबाद): सिनीडीह प्रेमनगर में हुई चाकूबाजी के मामले में मधुबन पुलिस ने मुख्य आरोपी बिलबेरा निवासी नितीश पांडेय को उनके आवास में छापेमारी कर गिरफ्तार कर लिया। जहाँ पुलिस ने धनबाद जेल भेज दिया।बताया जाता है कि गत 27 फरवरी को सिनीडीह प्रेमनगर कॉलोनी स्थित शिवमंदिर में महाभण्डारा के दौरान पुरानी रंजिश को लेकर आरोपी नितीश पांडेय ने सोनारडीह निवासी टप्पू सिंह उर्फ अमित सिंह पर चाकू से पेट मे घोप कर जख्मी कर दिया था। जिसका इलाज वेदांता अस्पताल रांची में चल रहा है। घटना के बाद से ही आरोपी फरार चल रहा था।

कतरास बाजार में निरसा के युवक की बाइक चोरी

कोलफील्ड मिरर 06 मार्च (धनबाद): बैंक ऑफ इंडिया कतरास बाजार शाखा के निकट मंगलवार की दोपहर निरसा कंचनडीह निवासी मो. शहबाज हुसैन की बाइक जेएच 10 सीए -8557 चोरी हो गयी. भुक्तभोगी ने बताया कि वह बैंक मैनटेंनेस कार्य के लिये आया था, बाइक खड़ा कर बैंक चला गया, कुछ देर बाद वापस आया, तो देखा बाइक गायब है. भुक्तभोगी ने कतरास थाना में लिखित शिकायत दे दी है, पुलिस ने छानबीन शुरू कर दी है।

आईईडी ब्लास्ट में तीन सीआरपीएफ जवान घायल

कोलफील्ड मिरर 06 मार्च (धनबाद): चाईबासा से पश्चिम सिंहभूम जिले के सारंडा जंगलों में नक्सलियों ने एक बार फिर हिंसक वारदात को अंजाम दिया है, बालिबा क्षेत्र में हुए आईईडी ब्लास्ट में तीन सीआरपीएफ जवान घायल हो गए। घायल जवानों को बेहतर इलाज के लिए हेलिकॉप्टर से राँची भेजे जाने की तैयारी की जा रही है।

बेहतर पुलिसिंग व सुरक्षित धनबाद बनाने के लिए रेजिडेंशियल एसोसिएशन के साथ बैठक

*** हर अपार्टमेंट में गार्ड, नौकर चाकर, किरायेदार, ड्राइवर का पुलिस वेरिफिकेशन कराने, सीसीटीवी कैमरे लगाना और विजिटर रजिस्टर रखना अनिवार्य**
*** डायल 112, 1930, सेंट्रल इंक्वारी आइडेंटिटी रजिस्टर, चक्षु वेबसाइट की दी गई जानकारी**
*** सीएसआर फंड से लगाई जाएगी ट्रैफिक लाइट, प्रमुख चौक चौराहों पर लगेंगे एआई कैमरे**
*** व्यावसायिक प्रतिष्ठान, दुकान, मकान, सोसाइटी, गोदाम में सीसीटीवी कैमरे लगाना अनिवार्य**

कोलफील्ड मिरर 06 मार्च (धनबाद): बोकारो प्रक्षेत्र के पुलिस महानिरीक्षक डॉ माइकेलराज एस. ने बुधवार को धनबाद के रेजिडेंशियल सोसाइटी एसोसिएशन के साथ समाहरणालय स्थित पुलिस सभागार में बैठक की।

उन्होंने धनबाद के सभी रेजिडेंशियल अपार्टमेंट में गार्ड, नौकर चाकर, किरायेदार, ड्राइवर का पुलिस वेरिफिकेशन अनिवार्य रूप से कराने का निर्देश दिया। साथ ही हर अपार्टमेंट में सीसीटीवी कैमरे और विजिटर रजिस्टर रखने और उसमें अपार्टमेंट में आने वाले हर व्यक्ति का विवरण लिखने का निर्देश दिया। उन्होंने यह भी कहा कि किरायेदार को फ्लैट या मकान सौंपने से पहले उसके इतिहास को भी अच्छी तरह से जान ले। किसी का आचरण संदिग्ध लगने पर उसपर निगरानी रखे और संबंधित थाना में सूचित करें।

बैठक के दौरान पुलिस महानिरीक्षक ने डिजिटल अरेस्ट से सतर्क रहने, आपातकाल में मदद के लिए पुलिस की हेलोलाइन नंबर 112 पर डायल करने, साइबर अपराध होने पर 1930 पर सूचित करने, संबंधित थाना का मोबाइल नंबर अपार्टमेंट में प्रदर्शित करने, मोबाइल फोन गुम हो जाने पर सेंट्रल इंक्वारी आइडेंटिटी रजिस्टर में ऑनलाइन शिकायत दर्ज करने, फ्रॉड कॉल आने पर उसका स्क्रीनशॉट लेकर चक्षु वेबसाइट पर शिकायत करने को कहा।

अपार्टमेंट में अकेले रहने वाले बुजुर्गों की सूचना थाना को देने, विभिन्न प्रकार की सामग्री लेकर अपार्टमेंट में आने वाले डिलेवरी पर्सन एवं अन्य लोगों का सत्यापन करने, हर सोसाइटी में पुलिस का क्यूआर कोड एवं इमरजेंसी नंबर प्रदर्शित करने सहित सुरक्षा को लेकर अन्य दिशा निर्देश दिए।

बैठक में वरीय पुलिस अधीक्षक हृदीप पी जनार्दनन ने कहा कि शीघ्र जिले में ट्रैफिक समस्या के निदान के लिए सीएसआर फंड से ट्रैफिक लाइट लगाई जाएगी। प्रमुख चौक चौराहों पर एआई कैमरे लगाए जाएंगे। जिससे ट्रैफिक नियमों का उल्लंघन करने वालों का ऑटोमैटिक चालान कट जाएगा। उन्होंने हर व्यावसायिक प्रतिष्ठान, दुकान, मकान, सोसाइटी, गोदाम में अनिवार्य रूप से सीसीटीवी कैमरे लगाने व अपार्टमेंट में अग्निशमन यंत्र लगाने तथा डायल 112, 1930 नंबर डिस्प्ले करने का निर्देश दिया। निर्देशो का पालन नही करने वालों के विरुद्ध कानूनी कार्रवाई भी की जाएगी।

साथ ही एसएसपी ने कहा कि गर्ल्स कॉलेज एवं स्कूल के बाहर सड़क जाम से निजात दिलाने एवं सुरक्षा के पर्याप्त व्यवस्था करने की दिशा में कारगर कदम उठाए जा रहे हैं। इसके अलावा उन्होंने कहा कि यदि नाबालिक बच्चे वाहन चलाते पकड़े जाएंगे तो वाहन ऑनर पर और नाबालिक के अभिभावक पर विधिक कार्रवाई की जाएगी।

बैठक में बोकारो प्रक्षेत्र के पुलिस महानिरीक्षक डॉ माइकेलराज एस., वरीय पुलिस अधीक्षक हृदीप पी जनार्दनन, ग्रामीण एसपी कपिल चौधरी, डीएसपी डी.एन. बंका, डीएसपी नौशाद आलम, डीएसपी शंकर कामती, धनबाद थाना प्रभारी राम नारायण ठाकुर, सराय्ढेला थाना प्रभारी नूतन मोदी के अलावा अन्य नागरिक भी मौजूद थे।

छात्राओं ने वार्डन पर मारपीट करने का लगाया आरोप

कोलफील्ड मिरर 06 मार्च (धनबाद): गिरिडीह जिले के सरिया प्रखंड के पीएमश्री झारखंड बालिका आवासीय विद्यालय की छात्राओं ने वार्डन पर मारपीट करने का आरोप लगाया है।

छात्राओं ने बताया कि बीते रविवार को वे होली खेल रहीं थीं, इसी दौरान वार्डन अंशु कुमारी ने मारपीट की। इसमें कई छात्राओं को चोटें आयीं हैं। मारपीट की घटना की जानकारी मिलने पर सरिया की प्रमुख प्रीति कुमारी मंगलवार को विद्यालय में पहुंचीं और छात्राओं से बातचीत की। उन्होंने बीडीओ व शिक्षा विभाग को मामले से अवगत कराया। सूचना पाकर अधिकारी मौके पर पहुंचे और मामले की जानकारी ली।

कक्षा 9 की छात्राओं ने बताया कि रविवार को 12वीं की छात्राओं ने कहा कि अब उनकी यहां की पढ़ाई व परीक्षा पूरी हो गयी है, तो जाते जाते आपस में होली खेल लेते हैं। इसके बाद हॉस्टल में ही आपस में होली खेलने लगीं। हो-हल्ला सुनकर वार्डन वहां पहुंची। उन्हें देखकर छात्राएं दौड़कर अपने कमरे में जाने लगीं। इस दौरान वार्डन ने कक्षा नौ की छात्रा जीरवा कुमारी, रोशनी कुमारी, सुमन कुमारी, प्रियंका भारती व सुषमा कुमारी की डंडे और हाथ से जमकर पिटाई कर दी। इसमें जीरवा कुमारी को घुटने में चोट लगी और पैर में सूजन आ गयी। वहीं रोशनी कुमारी को दायें हाथ में गंभीर चोटें आयीं हैं।

मामले की सूचना प्रमुख तक पहुंची। इसके बाद वे मंगलवार को विद्यालय में पहुंची और अधिकारियों को इसकी सूचना दी। इसके बाद अधिकारियों ने बच्चों से मामले की जानकारी ली और वार्डेन अंशु कुमारी को जमकर फटकार लगायी। घायल जीरवा कुमारी व रोशनी कुमारी को देवकी अस्पताल सरिया लाकर इलाज करवाया गया।

वार्डन ने कहा कि छात्राएं बहुत अधिक हल्ला कर रही थी। मैंने बच्चों के हॉस्टल में जाकर उन्हें डांट फटकार लगायी थी। इस दौरान छात्राएं मुझे हॉस्टल की ओर आते देखकर अपने अपने रुम की तरफ दौड़ने लगीं। इस क्रम में कुछ बच्चियां गिरकर चोटिल हो गयीं, उनका इलाज भी मैंने करवाया। मारपीट के आरोप बेबुनियाद हैं।

पंख एक नई दिशा ने मदर टेरेसा में कराया नि:शुल्क हेयर कटिंग

कोलफील्ड मिरर 06 मार्च (धनबाद): बुधवार को पंख एक नई दिशा के द्वारा मदर टेरेसा, मेमको मोड़ में आर लॉन्च की मदद से 32 लोगों का हेयर कटिंग करवाया गया। संस्था के इस अभियान में मंदबुद्धि बच्चों, बुजुगों एवं महिलाओं को हेयर कटिंग ट्रीमिंग,हेयर नि:शुल्क कराया गया। अध्यक्ष पिंकी गुप्ता ने बताया कि मदर टेरेसा में यह पहली बार इस तरह का कार्यक्रम किया गया।

हमारी संस्था के सभी सदस्य हमेशा एक ऐसी जगह जाते हैं जहां बहुत से लोगों को इस प्रकार की सेवाएं नहीं मिल पाती है वहां पर संस्था के सभी सदस्य जा कर सेवा सम्मान देते है। जरूरतमंद लोगों तक सेवा पहुंचाना हमारा प्राथमिक मकसद है। संस्था की उपाध्यक्ष नम्रता गुप्ता का इस अभियान में सराहनीय योगदान रहा। साथ में महा सचिव सुधा गुप्ता, कोषाध्यक्ष सुषमा प्रसाद, सहसचिव मनीष गुप्ता,सचिव शशि शेखर गुप्ता, रविशेखर और आरके राकेश यादव और पुरी टीम का बहुत बहुत धन्यवाद।

विधायक अरूप से मिला झारखंड परिवहन मजदूर यूनियन

कोलफील्ड मिरर 06 मार्च (धनबाद): परिवहन कल्याण बोर्ड बनाने हेतु एक झारखंड परिवहन मजदूर यूनियन घनबाद जिला अध्यक्ष सह संयुक्त सचिव समान्य परिषद सदस्य ऑल इंडिया रोड ट्रांसपोर्ट वर्कर्स फेडरेशन केन्द्रीय कमिटि के सुनील कुमार पासवान एवं शाखा सचिव मोहम्मद गुड्डू शाह मोहम्मद मनीर, फैय्याज अंसारी, विधायक अरूप चटर्जी से आवासीय कार्यालय में मिला और मांग पत्र सौंपा. जिसमें परिवहन कल्याण बोर्ड बनाने की मांग विधानसभा सत्र के दौरान उठाने का अनुरोध किया. जिस पर विधायक अरूप चटर्जी ने विधान सभा सत्र के दौरान झारखंड में परिवहन कल्याण बोर्ड का बनाने का मामला बजट सत्र में किया और बताया की बिहार सरकार मुख्यमंत्री चालक योजना का गजट नोटिफिकेशन बिहार सरकार द्वारा लाया है, जिसमें चालकों के लिए पेंशन, स्वास्थ्य बीमा, दुर्धटना बीमा पोशाक एवं अन्य सुविधाएं चालकों के लिये लायी गयी है. उसी तर्ज पर झारखंड में भी परिवहन बोर्ड का गठन किया जाय. जिस पर परिवहन मंत्री दिपक बिरूआ ने विधान सभा में विधायक को आश्वस्त किया की बिहार के परिवहन कल्याण योजना निति का अध्ययन करने के बाद इस पर विचार किया जाएगा.

विधायक ने समय निर्धारित करने की मांग की जिस पर परिवहन मंत्री दिपक बिरूआ ने 6 महीने का समय निर्धारित की। साथ ही साथ धनबाद जिले में जाम की समस्या से भी विधानसभा अध्यक्ष का ध्यानाकर्षण किया और बताया की पुलिस बल की नियुक्ति की जाय एवं होमगार्ड के जवानों को यातायात व्यवस्था सुलभ करने हेतु व्यवस्था की जाए ताकी जाम की समस्या से लोगों को राहत मिले।

सोनपुर मंडल संसदीय समिति की बैठक, क्षेत्राधिकार के सदस्यगण थे उपस्थित

कोलफील्ड मिरर 06 मार्च (धनबाद): हाजीपुर/ सोनपुर मंडल की 'मंडल संसदीय समिति' की बैठक का आयोजन किया गया । इस बैठक में सोनपुर मंडल क्षेत्राधिकार के सांसदगण ने भाग लिया। बैठक की अध्यक्षता सारण के सांसद राजीव प्रताप रूडी द्वारा की गयी। बैठक में सभी माननीय सांसदगण द्वारा जनहित से जुड़े मुद्दे एवं रेल के सर्वांगीण विकास हेतु अपने-अपने सुझावों को रखा गया। इस अवसर पर पूर्व मध्य रेल के महाप्रबंधक छत्रसाल सिंह, सोनपुर मंडल के मंडल रेल प्रबंधक विवेक भूषण सूद सहित मुख्यालय एवं सोनपुर मंडल के सभी उच्चाधिकारीगण उपस्थित थे।

आज की इस बैठक में केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री रामनाथ ठाकुर, केन्द्रीय जल शक्ति राज्य मंत्री राज भूषण चौधरी, भागलपुर के सांसद अजय कुमार मंडल, वैशाली की सांसद वीणा देवी एवं समस्तीपुर की सांसद शांभवी उपस्थित थीं। इनके अलावा केन्द्रीय कपड़ा मंत्री, भारत सरकार गिरिराज सिंह के प्रतिनिधि प्रभाकर कुमार राय, खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री, भारत सरकार चिराग पासवान के प्रतिनिधि अवधेश कुमार सिंह, गृह राज्य मंत्री भारत सरकार नित्यानंद राय के प्रतिनिधि शिव कुमार सिंह, सांसद राजेश वर्मा के प्रतिनिधि पवन जायसवाल एवं सांसद तारिक अनवर के प्रतिनिधि सिमरणजीत सिंह उपस्थित थे ।

सांसदगण एवं उनके प्रतिनिधियों ने रेल विकास व यात्री सुविधाओं में और वृद्धि एवं उसे सुदृढ़ करने के संबंध में बहुमूल्य सुझाव दिये। सांसदगण द्वारा आधारभूत संरचनाओं के विकास से जुड़े कार्यों को प्राथमिकता से पूरा करने पर बल दिया गया तथा भविष्य की कार्य योजनाओं पर भी चर्चा हुई । साथ ही बैठक में कुछ ट्रेनों के विभिन्न स्टेशनों पर ठहराव पर भी चर्चा हुई।

इसके पूर्व बैठक के प्रारंभ में महाप्रबंधक छत्रसाल सिंह ने माननीय सांसदगण एवं सांसद के प्रतिनिधिगण का स्वागत किया। महाप्रबन्धक ने अपने स्वागत संबोधन में सोनपुर मंडल द्वारा यात्री सुविधा, आधारभूत संरचनाओं के विकास आदि के क्षेत्र में किए गए कार्यों एवं नई परियोजनाओं से माननीय सांसदगण को अवगत कराया।

महाप्रबन्धक ने सांसदों से प्राप्त बहुमूल्य सुझावों के लिये आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह सुझाव हमें भविष्य में रेल विकास कार्यों की रूप-रेखा तय करने में काफी सहायक सिद्ध होगा।

ईसीएल के इंटर चिकित्सा प्रतियोगिता में प्रथम रहा सोदपुर

कोलफील्ड मिरर 06 मार्च (धनबाद): निरसा/ इंटर एरिया प्राथमिक चिकित्सा का एकदिवसीय प्रतियोगिता 2024-2025 का आयोजन विगत मंगलवार को सीतारामपुर स्थित मीनिंग रेस्क्यू सेंटर में किया गया। इस प्रतियोगिता में पूरे इसीएल की टीम शामिल थी। इस प्रतियोगिता को चार वर्गों में बांटा गया था। इस वर्ग में ईसीएल अधिकारी, वर्ग बी माइनिंग सरदार और मजदूर वर्ग सी महिला, वर्ग डी संविदा कर्मी शामिल थे। इस प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार इसीएल सोधपुर एरिया, द्वितीय पुरस्कार मुग्मा एरिया, तृतीय पुरस्कार के जीपीएल के संविदा कर्मी को मिला, वहीं भुग्मा क्षेत्र के प्रबंधक ओ.पी चौधरी ने बुधवार क्षेत्र के टीम को बधाई दिया, वहीं भुग्मा क्षेत्र के टीम प्रबंधक संदीप सिंह, टीम के कप्तान कुमार राहुल, उप कप्तान पिंटू सिंह, सहित टीम के अन्य सदस्य शामिल थे।

वही कार्यक्रम में इसीएल के अध्यक्ष, सह प्रबंधक, निर्देशक सतीश झा, निदेशक तकनीकी नीलाद्री राय, निर्देशक वित्तीय मोहम्मद अंजर आलम, निर्देशक कमी गुंजन सिंह, डॉक्टर सत्यजीत राय, सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

राज्य में कोई भी स्कूल बंद नहीं होगा

कोलफील्ड मिरर 06 मार्च (धनबाद): रांची/ झारखंड के शिक्षा मंत्री रामदास सोरेन ने बड़ी बात कही है। उन्होंने कहा कि राज्य में कोई भी स्कूल बंद नहीं होगा। भले ही उस स्कूल में एक भी बच्चा न जाता हो। स्कूलों में शिक्षक भी रहेंगे और स्कूल भी चलते रहेंगे। शिक्षा मंत्री ने कहा कि यह सच है राज्य के कई सरकारी स्कूलों में बच्चे नहीं है, लेकिन हम उन्हें बंद करने के बजाय, वहां बच्चों को स्कूल में लाने की कोशिश कर रहे हैं।

BHOLA ELECTRICAL
G.T.ROAD NEAMATPUR, AASANSOL WEST BENGAL – 713359
ALL KIND OF ELECTRICAL JOB : CONTACT : 9064588166
SALES, SERVICE & CCTV CAMRA INSTALLATION,
HOUSE WIRING, MOTER & FAN WINDING

बाइक चोरी करते रंगे हाथ धराय युवक की जमकर पिटाई, सौपा पुलिस को

कोलफील्ड मिरर 06 मार्च (निरसा): इन दिनों निरसा विधानसभा क्षेत्र में बाइक चोरों का गिरोह काफी सक्रिय है। ताजा मामला कुमारधुबी ओपी क्षेत्र का है। बुधवार को बाइक चोर के एक गिरोह ने कुमारधुबी ओपी क्षेत्र के शिवलीबाड़ी मध्य पंचायत में धावा बोला। केएफएस ग्राउंड समीप धोबी घाट के रहने वाले बिनोद प्रसाद मालाकार की बाइक घर के बाहर खड़ी थी। बाइक चोरों ने खड़ी बाइक को देखा और उसका लॉक खोलने लगे। बाइक का लॉक रिमोर्ट के कंट्रोल में था जिससे सायरन बजा और बाइक मालिक भागता हुआ घर के बाहर आया और देखा कि तीन चार युवक उसकी बाइक का लॉक खोल रहे थे। चोर बाइक मालिक को देखते ही भागने लगे लेकिन उनमें से एक उनके हत्थे चढ़ गया। हो हल्ला सुन कर आस पास के लोग इकट्ठा हो गए और चोर की धुनाई करने लगे। ग्रामीणों ने घटना की सूचना कुमारधुबी पुलिस को दी। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और मामले की तफ्तीश करते हुए चोर को अपने कब्जे में लिया।

ग्रामीणों द्वारा पकड़े हुए चोर शाहबुद्दीन ने बताया कि वह धनबाद जिला के गोविन्दपुर के इलाहीडीह का रहने वाला है। वह टामिलनाडु में काम करता था और तीन दिन पहले ही वहां से आया है।

कल वह और उसके दो दोस्त घूमने के लिए जामताड़ा गए थे। जहां उनका संपर्क एक बाइक चोर से हुआ और उन्होंने वहां एक बाइक चोरी की। आज उसी बाइक चोर के कहने पर वह लोग यहां आए और बाइक चोरी कर ही रहे थे कि वह पकड़ा गया। उसने बताया कि उसके साथ दो और युवक शरीफ और शराफत थे जो भाग गए। दोनों कामदहा के रहने वाले हैं। ग्रामीणों ने चोर के पॉकेट से कुछ चाभियां,रेंच भी बरामद किए।

पिटाई से युवक की मौत, लोगों ने किया सड़क जाम

कोलफील्ड मिरर 06 मार्च (धनबाद): बरवाअड्डा में हुई मारपीट में एक युवक की मौत की मौत हो गई, घटना के विरोध में परिजनों ने मुख्य सड़क को जाम कर दिया, वे आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग कर रहे है, पुलिस लोगों को समझाती रही।

धनबाद जिले के बरवाअड्डा थाना क्षेत्र में मारपीट के मामले ने बुधवार को हिंसक रूप ले लिया, इलाज के दौरान सुरेंद्र यादव नामक युवक की मौत के बाद उसके परिजन और खटाल वासी काफी आक्रोशित हो गए, यादव समाज के काफी लोग ट्रक में शव लादकर रणधीर वर्मा चौक पहुंचे, उन्होंने शव को चौक पर रखकर प्रदर्शन करना शुरू कर दिया, गिरफ्तारी की मांग को लेकर लोगों ने टायर जलाकर चौक को जाम कर दिया, आक्रोशित लोगों ने पुलिस प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी की. परिजनों ने सुरेंद्र यादव की मौत मामले में दोषी आरोपियों को जल्द से जल्द गिरफ्तार करने की मांग की, बरवाअड्डा थाना क्षेत्र में रविवार को दो पक्षों के बीच मारपीट हुई थी, जिसमें सुरेंद्र यादव गंभीर रूप से घायल हो गए थे. उन्हें इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया था, लेकिन बुधवार को उनकी मौत हो गई, इसके बाद परिजनों और खटाल वासियों का गुस्सा फूट पड़ा।

आने वाले कल के लिए जल के लिए भी सोचें

कोलफील्ड मिरर 05 मार्च 2025: जल की एक बूंद का संरक्षण मानवीय जीवन के लिए अत्यंत उपयोगी है। जल की एक-एक बूंद जीवन के लिए बेशकीमती और बहु उपयोगी है। जल की बर्बादी भविष्य के बहुत बड़े खतरे को इंगित करती है, यदि पृथ्वी पर जल नहीं होगा तो जीवन की संभावनाएं भी विलुप्त हो जाएंगीं। सामान्य तौर पर देखेंगे तो जल की उपलब्धता को लेकर कोई विशेष संकट नजर नहीं आता है। किंतु वास्तविकता इससे बिल्कुल अलग है।पृथ्वी की सतह का लगभग 70% भाग जल से आच्छादित है।पृथ्वी पर उपलब्ध समस्त जल का 97% समुद्र खारा पानी है, जो उपयोग के योग्य नहीं है ।अतः मात्र 3% जल ही पीने के योग्य है, इससे भी कम जल नदी, तालाब, झीलों भूगर्भीय जल के रूप में मनुश्य व अन्य जीवों के पीने के योग्य मीठे पानी के रूप में उपलब्ध है, परिणामतः पीने योग्य जल का संकट और गहराता जा रहा है। यदि मानव सभ्यता के इतिहास को खंगाले तो यह तथ्य सामने आता है कि बड़ी-बड़ी सभ्यता एवं संस्कृतियाँ नदी, घाटियों में विकसित और फलित हुई है। जल अपने स्वरूप में निर्मलता धारण किए हुए पवित्रता का प्रतीक है, लेकिन इसकी क्रमिक रूप से घटती मात्रा में जल संकट अस्तित्व को खतरा उत्पन्न कर दिया है। जल अब राज्यों तथा विभिन्न देशों के मध्य बड़े विवाद का कारण बनता जा रहा है। जल मनुष्य के जीवन का अत्यंत आवश्यक स्वरूप है जल के बिना कल नहीं है और जल ही जीवन कहलाता है। ऐसे में जल का संरक्षण अत्यंत आवश्यक है। जल का विवाद सिर्फ गांव तहसील के जिलों में नहीं बल्कि राज्य और देशों के बीच भी गहराता जा रहा है। इसका बहुत बड़ा उदाहरण कावेरी, मांडवी जैसे अंतरराष्ट्रीय नदियों गंगा, ब्रह्मपुत्र में नील, सतलज जैसी अंतरराष्ट्रीय नदियां हैं। वैश्विक जल संकट से सर्वाधिक प्रभावित क्षेत्र एशिया, अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप, अफ्रीकी देशों में एक बड़ी आबादी जला भाव के कारण काल कब रीत हो रही है। जल संकट की यह समस्या और अंतरराष्ट्रीय स्वरूप धारण कर चुकी है एवं अंतरराष्ट्रीय मंचों पर इसकी मांग उठाई जा रही है। पृथ्वी पर पीने की योग्य जल की उपलब्धता घटती जा रही है वहीं विकास एवं औद्योगिकरण की प्रक्रिया में जल का अंधाधुंध दोहन किया जा रहा है। मानव के जल दोहन का बेतरतीब उपयोग जल चक्र के संतुलन को नष्ट कर रहा है। प्रकृति में मानव के हस्तक्षेप के कारण ही ग्लोबल वार्मिंग, जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई से ताजे जल के संकट को कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है। शहरों में प्रति व्यक्ति जल की उपलब्धता का स्तर निरंतर कम होते जा रहा है। इसका सबसे सर्वोत्तम उदाहरण दक्षिण अफ्रीकी शहर कैपटाउन एवं भारत के बंगलुरु शहरों में असीमित जनसंख्या के दबाव में लहराते जल संकट के कारण इन शहरों में यानी नो वाटर सप्लाई दिवस तक की नौबत आ गई है। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा प्रकाशित जल विकास रिपोर्ट 2018 में पीने योग्य जल की घटती उपलब्धता एवं गहराता संकट को लेकर महायुद्ध की संभावनाओं का खुलासा किया है। जल संकट को लेकर अगले महा युद्ध की संभावनाओं को यदि टटोलने तो यह बात सत्य प्रतीत होती है जिसमें एक तरफ जलाभाव वाले देश का होगें तथा दूसरा पक्ष जलाधिक्य वाले देशों की होगी। जल के निरंतर गिरते स्तर को लेकर ऐसी विकराल स्थितियां उत्पन्न हो सकती है जिसके कारण मानवता तार-तार हो जाएगी और जल का उपयोग करने वाले जैविक जीवन का स्थिति समाप्त हो जाएगा। अतः यह उचित होगा कि समय रहते हम इस संकट को भाप लें एवं जल जैसे हम उन संसाधन के संरक्षण को लेकर युद्ध स्तर पर उचित कदम उठाएं। यूनाइटेड नेशंस वाटर अभियान के माध्यम से जल संकट से विश्व को अवगत करवाते हुए जल संकट के संबंध में आमजन को जागरूक करने का प्रयास कर रहा है। दूसरी तरफ प्रसिद्ध non-governmental ऑर्गेनाइजेशन जल संकट से विश्व को अवगत कराते हुए जल संरक्षण के संबंध में सराहनीय प्रयास कर रहे हैं। आवश्यकता से अधिक जल प्रयोग करने से धरती का जलस्तर कृषकों की पहुंच से परे होता जा रहा है। वैश्वीकरण व उपभोक्तावादी संस्कृति से प्रेरित अंधाधुंध विकास की दौड़ में जल स्रोतों को प्रदूषित कर मानव समाज ने स्वयं अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारने का काम किया है। बढ़ती जनसंख्या भी वैश्विक जल संकट का एक बड़ा कारण है। यदि जनसंख्या की वृद्धि की रफ्तार से होती रही तो अगले दशक में वैश्विक जनसंख्या में वृद्धि की दर से 25% जनसंख्या को प्रयोग जितना ही पानी उपलब्ध हो पाएगा। यह भयानक जल संकट तथा वैश्विक खतरे की ओर इंगित करता है। वैश्विक स्तर पर जल विवाद लगातार होते रहते हैं मध्य एशिया में कैस्पियन सागर के जल बंटवारे संबंधी विवाद का समाधान तटवर्ती देशों द्वारा संधि के माध्यम से किया गया है। भारतीय संदर्भ में देखा जाए तो स्थिति और भी जटिल होती जा रही है देश की जनसंख्या तो विश्व की जनसंख्या का लगभग 17.5% है, लेकिन ताजे जल की उपलब्धता 1% से भी कम है। राजस्थान में स्थिति जल संकट की बड़ी भयावह है वहां जल की उपलब्धता 1% से भी बहुत नीचे जल संकट वहां की नियति बन गई है। 2040 तक भारत के तीन चौथाई शहरों को जल संकट से जूझना होगा। अब हमारा दायित्व तथा कर्तव्य होगा कि समाज को जल संरक्षण के लिए प्रेरित करें एवं जल संरक्षण से संबंधित विधि तथा तकनीक से परिचित कराएं एवं उसका समुचित उपयोग करें। व्यक्ति स्वयं जल का संरक्षण करें तथा दूसरों को भी जल संरक्षण के लिए प्रेरित करें ताकि हम आने वाले कल के लिए जल संकट रूपी विकराल एवं जनता हर समस्या का सामना आसानी से कर पाएं। जल संकट के महाविनाश से यदि बचना है तो जल संरक्षण हर नागरिक को एक कर्तव्य की तरह करना होगा।

संजीव ठाकुर
चिंतक, लेखक, संयोजन कर्ता
रायपुर छत्तीसगढ़

आसान है संन्यासी होना?

कोलफील्ड मिरर 05 मार्च 2025: "भैया! जीवन निरासक्त और कंटकाकीर्ण होता जा रहा है। किसी भी वस्तु, विषय में रुचि नहीं, मोह नहीं। किसी तरह की अभिरुचि नहीं। स्वाद में कुछ सुरुचि नहीं।"

"छोटू! अर्धांगिनी से मनमुटाव, खिटपिट और कहासुनी व्यक्ति को निरासक्त बनाती है। जीवन अरुचिकर लगने लगता है। शांति लुप्त हो जाती है। मस्तिष्क में कई हथौड़े एक साथ चलने लगते हैं जो कि असहनीय प्रक्रिया है।"

"केवल अर्धांगिनी की समस्या नहीं है भैया! कार्यालय में उच्च अधिकारी और अधीनस्थ कर्मचारियों के कारण भी भारी व्याकुलता है। न वह समझता है और न ये मानते हैं। क्लिष्टता घर कर गई है। हृदय में संश्लिष्टता भर गई है।"

"कुछ अल्प सामंजस्य स्थापित कर लो तो समस्याओं का समाधान निकल सकता है अनुज छोटू!"

"अग्रज भैया! इन सब पर हर वस्तु का मूल्य आकाश कुसुम होते जा रहा है। पूर्ण तुष्टि के साथ भोजन जल भाग्य में नहीं। जिस वस्तु को स्पर्श करो वही मूल्य की अग्नि से हाथ जला डालती है। दाल, चांवल से लेकर शाक भाजी तक बस आकाश में कीमतों की स्थिरता लिए बैठे हैं। यही हाल सारी वस्तुओं का है। इस लोक में मानव नामक जीव जिए तो कैसे? खाए पिए तो कैसे? लगता हैं जेब में गोडसे बैठा है जो गांधी जी को वहां टिकने नहीं दे रहा।"

"कभी किसी को मुकम्मल जहां नहीं मिलता। समस्याएं होंगी तो समाधान भी होगा। तो इस तरह निर्लिप्त और निरासक्त होने से क्या सारी बातें सुधर जाएंगी?"

"अब जब जल शीर्ष से गुजर गया मेरा मतलब पानी सर से ऊंचा हो गया तो नए नए समाधान निकल आ रहे हैं अग्रज भैया। विरक्ति ने नया मार्ग प्रशस्त किया है।"

"कौन सा मार्ग अनुज छोटू?"

"जो कुछ नहीं करते कमाल करते हैं। बस इसी के आधार पर मैंने संन्यास लेकर संन्यासी, जोगी, संत, बाबा बनने का मार्ग सोचा है। सांसारिक पीड़ा और झंझटों से मुक्ति का एक मात्र मार्ग है संन्यास लेना। संसार से विरक्ति और ईश्वर के प्रति आसक्ति।"

"मतलब अब तक जो तुमने शुद्ध हिन्दी में जो वार्तालाप किया है, वह आगे संन्यासी महाराज के रूप में तुम्हारे प्रवचन का एक ट्रेलर था, एक टीजर था। जब तैयारी हो ही गई तो कुछ बातों पर तुम्हारा ध्यान आकर्षित करना ज़रूरी समझता हूँ। सुबह देर तक सोना, दिन में दस चाय पीना, नाश्ता, भोजन यह सब वर्जित होगा। तुम्हें अपना काम खुद करना होगा। अपने कपड़े खुद धोने होंगे। ज़मीन पे सोना होगा। सुबह बहुत पहले नींद से जागना होगा। ठंडे पानी से स्नान करना होगा, ऐसे कई काम हैं जो तुमने आज तक नहीं किया।"

"भैया! आप मुझे भयभीत करने का प्रयास कर रहे हैं?"

"बहू और बच्चों का क्या होगा अगर तुम संन्यास ले लोगे?"

इतने में छोटू का फोन बजा। कुछ देर बात करने के बाद उसने कहा "भैया! मैं जाता हूँ। बेटी के लिए ड्राइंग शीट्स और बेटे के लिए प्रोजेक्ट का सामान लेने जाना है। मैं तो भूल गया था, अच्छा हुआ रूपा ने याद दिला दिया।"

"तो संन्यास का क्या होगा छोटू?"

"बाद में बतियाता हूँ भैया! अभी ज़रा जल्दी में हूँ।" कहते हुये छोटू चला गया।

डॉ टी महादेव राव
विशाखापटनम (आंध्र प्रदेश)

कामुकता को स्वच्छन्द करती पॉप संस्कृति

कोलफील्ड मिरर 05 मार्च 2025: आजकल, हमारी इच्छाएँ और धारणाएँ अक्सर फ़िल्मों और टेलीविजन पर दिखाई जाने वाली छवियों और कथाओं से प्रभावित होती हैं। ये चित्रण प्रायः रूढ़िवादिता की ओर अधिक झुके होते हैं। उदाहरण के लिए, पारंपरिक रूप से आकर्षक महिलाओं पर ज़ोर देने से लड़कियों और महिलाओं में उन जैसा दिखने की भावना पैदा हो सकती है। पॉप संस्कृति के उपभोक्ताओं के रूप में, हमारे लिए इसे आलोचनात्मक दृष्टि से देखना आवश्यक है। हमारे तेजी से विकसित होते समाज में, पॉप संस्कृति हमारे जीवन का एक महत्त्वपूर्ण पहलू बन गई है। फ़िल्मों, संगीत, टीवी कार्यक्रमों और सोशल मीडिया का प्रभाव लैंगिक भूमिकाओं और रूढ़ियों के बारे में हमारे विचारों को महत्त्वपूर्ण रूप से आकार दे सकता है। इसके अतिरिक्त, मीडिया अक्सर सुंदरता के संकीर्ण मानकों को बढ़ावा देता है, तथा पतले शरीर और गोरी त्वचा को तरजीह देता है। यह बात गोरेपन की क्रीम के विज्ञापनों के प्रचलन और बॉलीवुड में गोरी त्वचा वाली अभिनेत्रियों को प्राथमिकता दिए जाने से स्पष्ट है, जो रंगभेद को बढ़ावा देता है।

महिलाओं को समाज के हर पहलू में पूर्णतः और समान रूप से भाग लेने का मौलिक अधिकार है। फिर भी, कार्यस्थल, मनोरंजन और राजनीति जैसे क्षेत्रों में, वैश्विक स्तर पर महिलाओं और लड़कियों का प्रतिनिधित्व काफ़ी कम है। समय के साथ इस लैंगिक असमानता से प्रगति की धीमी गति का पता चलता है। पितृसत्तात्मक मानदंडों और परंपराओं का प्रभाव व्यापक और हानिकारक है, जो महिलाओं और लड़कियों के साथ-साथ उनके परिवारों और समुदायों के व्यक्तिगत, वित्तीय और भविष्य की भलाई को प्रभावित करता है। भारत में, पॉप संस्कृति और मनोरंजन मीडिया का प्रभाव लैंगिक मानदंडों और सामाजिक दृष्टिकोण को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है, साथ ही धारणाओं, व्यवहारों और कानूनी चर्चाओं को प्रभावित करता है। हालांकि ये माध्यम सामाजिक परिवर्तन ला सकते हैं, लेकिन ये रूढ़िवादिता को भी क़ायम रखते हैं। हमारी तेजी से विकसित होती दुनिया में, पॉप संस्कृति हमारे जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा बन गई है। फ़िल्में, संगीत, टेलीविजन कार्यक्रम और सोशल मीडिया हमारी विश्वदृष्टि और अपेक्षाओं को आकार देते हैं। विशेष रूप से लैंगिक भूमिकाओं और रूढ़ियों के सम्बंध में-जैसे कि यह धारणा कि लड़कियों को गुड़ियों से खेलना चाहिए, जबकि लड़कों को कारों से खेलना चाहिए।

पुरुषत्व और स्त्रीत्व पर समाज के विचार मीडिया से काफ़ी प्रभावित होते हैं। उदाहरण के लिए, बॉलीवुड की फ़िल्म कबीर सिंह (2019) में मर्दानगी का एक ऐसा संस्करण दिखाया गया, जिसमें पुरुषों के आक्रामक और हावी व्यवहार का महिमामंडन किया गया। इसी प्रकार, मीडिया में पेशेवर भूमिकाओं का चित्रण कैरियर की आकांक्षाओं को आकार देता है। फ़िल्म कारगिल गर्ल (2020) ने लैंगिक भूमिकाओं में बदलाव पर प्रकाश डालते हुए सेना में महिलाओं की भर्ती को प्रोत्साहित किया। मनोरंजन मीडिया अक्सर लैंगिक न्याय पर राष्ट्रीय चर्चा को बढ़ावा देता है, जैसा कि सत्यमेव जयते कार्यक्रम में देखा गया। जो घरेलू हिंसा और कन्या भ्रूण हत्या जैसे मुद्दों को सामने लाया। लम्बे समय से चल रहे टेलीविजन धारावाहिक भी पारिवारिक लैंगिक भूमिकाओं को स्थापित करते हैं, तथा भारतीय धारावाहिकों में आमतौर पर देखी जाने वाली आज्ञाकारी बहू की रूढ़िबद्ध छवि को क़ायम रखते हैं। जनांदोलनों और सक्रियता के बीच सम्बंध को अक्सर मीडिया प्रतिनिधित्व द्वारा सुगम बनाया जाता है। फ़िल्म छपाक (2020) ने एसिड अटैक सर्वाइवर्स के संघर्षों पर प्रकाश डाला और आईपीसी के तहत सख्त दंड सहित कानूनी सुधारों की वकालत की। यद्यपि लोकप्रिय संस्कृति ने भेदभावपूर्ण लैंगिक मानदंडों को सुदृढ़ करने में भूमिका निभाई है। इसमें उन्हें चुनौती देने और बदलने की शक्ति भी है। इसका एक उल्लेखनीय उदाहरण है द मार्वलस मिसेज। मैसेल, 1950 और 1960 के दशक की पृष्ठभूमि पर आधारित है, जिसमें गृहिणी मिरियम मैसेल को स्टैंड-अप कॉमेडी में अपनी प्रतिभा का पता चलता है। इस श्रृंखला को न केवल आलोचनात्मक प्रशंसा मिली, बल्कि इसमें महिला सशक्तिकरण, सपनों की खोज और "आदर्श" गृहिणी की सामाजिक अपेक्षाओं से मुक्ति जैसे महत्त्वपूर्ण विषयों को भी उठाया गया। यह लोकप्रिय संस्कृति में अनेक उदाहरणों में से एक है।

संगीत और फ़िल्में प्रायः प्रेम को नियंत्रित और अधिकारपूर्ण दृष्टिकोण से चित्रित करती हैं। कुछ बॉलीवुड गाने जुनूनी पुरुष प्रेमी की छवि को क़ायम रखते हैं। एक्शन फ़िल्मों में अक्सर आक्रामक, प्रभावशाली पुरुषों को रोल मॉडल के रूप में दिखाया जाता है। हाल ही में प्रदर्शित फ़िल्मों में हिंसक और सत्तावादी पुरुष नायकों को प्रमुखता से दिखाया गया है। महिलाओं को आमतौर पर पालन-पोषण करने वाली भूमिकाओं में दिखाया जाता है, जबकि पुरुषों को अधिकार वाले पदों पर रखा जाता है। हालाँकि, फ़िल्म तुम्हारी सुलु (2017) ने अपरंपरागत करियर में महिलाओं के सामने आने वाली चुनौतियों को प्रदर्शित करके इन मानदंडों को चुनौती दी। मीडिया अक्सर सुंदरता के आदर्श के रूप में पतलेपन और गोरी त्वचा को बढ़ावा देता है, गोरापन लाने वाली क्रीम के विज्ञापन प्रचलित हैं, जो बॉलीवुड में गोरी त्वचा वाली अभिनेत्रियों के प्रति वरीयता और रंगभेद को बढ़ावा देने को दर्शाता है। इसके अतिरिक्त, समलैंगिक पात्रों को अक्सर हास्य के लिए बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया जाता है, तथा कुछ फ़िल्में व्यंग्यात्मक चित्रण के माध्यम से समलैंगिक आकर्षण को महत्त्वहीन बना देती हैं। हालांकि मनोरंजन मीडिया ने सामाजिक मुद्दों को आगे बढ़ाने और लैंगिक जागरूकता बढ़ाने में भूमिका निभाई है, लेकिन यह हानिकारक आख्यानों को भी बढ़ावा देता है। भविष्य में सार्थक सामाजिक परिवर्तन के लिए, लिंग-संवेदनशील प्रतिनिधित्व, विविध चित्रण और ज़िम्मेदार कहानी कहने पर अधिक ज़ोर देने की आवश्यकता है। मीडिया और लोकप्रिय संस्कृति महिलाओं के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण, लैंगिक समानता और सामाजिक मानदंडों को आकार देने में महत्त्वपूर्ण प्रभाव डालती है। फ़िल्में, टेलीविजन, विज्ञापन और सोशल मीडिया या तो उन रूढ़ियों को मज़बूत कर सकते हैं जो महिला सशक्तिकरण में बाधा डालती हैं या फिर सकारात्मक बदलाव के लिए शक्तिशाली एजेंट के रूप में काम कर सकती हैं।

डॉ. सत्यवान सौरभ

लात मारने और खाने की परंपरा का चिंतन

कोलफील्ड मिरर 05 मार्च 2025: भारतीय संस्कृति अपने आप में रोचक ओर सनातन परम्पराओं की सूचक है जिसका हर पल मूल्यांकन अथवा पुनर्मूल्यांकन करने वाले अनेक विद्वानों ने यथेष्ठ निवर्तनीय निर्विवाद सत्यों का उद्घाटन किया है। मानव मात्र की अपनी सीमाएं हैं, अपनी संस्कृति है जिसकी व्याख्या समय, परिस्थिति, घटना ओर विषयपरक अध्यात्म अथवा जीवन के प्रसंगों के सभी महत्वपूर्ण पहलुओं पर वह करता रहा है। मनुष्य का शरीर एक ब्रह्मांड माना है जिसमें पंचतत्व, पंचमहाभूत आदि सारा जगत समाहित है। हम यहा शरीर का विशेष ओर महत्वपूर्ण अंग पाद की बात करना चाहेंगे। लात-जिसे पैर, पाँव, गोड़, पद, चरण तथा टाँग, पाद आदि अनेक रूपों से यथा स्थान जरूरत अनुसार पुकारा गया है, न सिर्फ हमारी देह का ही बल्कि हमारी संस्कृति का ही अविच्छिन्न अंग रहा है। फिर प्रश्न उठता है कि इसका क्या कारण है? यह क्यों हुआ? फिर यहीं उत्तर मिलता है कि अनेक अनिर्वचनीय सत्यों की ही भाँति यह भी एक सत्य है कि यदि मानव के पास लात न होते तो वह एक जड प्राणी होता किन्तु इसी जड़ता ने हमें चेतनता की ओर ले जाने वाला साधन यही लात दी है। निश्चय ही हमे यह बात दोहरानी पड़ेगी कि लात ही प्रगति और जीवन का चिन्ह है। लात में सौन्दर्य ओर भक्ति की दिव्यता भी देखी जा सकती है ओर लात को देख वासना आने पर नैतिक पतन एवं मानवीय भाव के तिरोहित होने पर पेड़ पौधे पहाड़ जैसे जड़ता अथवा क्रूरतम पशु बन पाशविकता की चर्मोत्कृष्टता भी कलंक के रूपं में सामने होती है।

आप भी संतुलित ढंग से और बिना पूर्वाग्रहों को मन में लात को एक युगान्तरकारी अस्त्र मानकर स्थान देने का मन बना ले तो लात के विषय में आप जागरूकता होंगे ओर निर्णय लेने को विवश होंगे की सच में ही लात युगांतर करने वाला अस्त्र है जो जाने भूले-भटकों को राह सुझाने वाला एक सशक्त माध्यम रहा है। लात से ही विकास क्रम का मार्ग निकलता है। मानव की प्रगतिशीलता का प्रतिनिधित्व इन्हीं लातों ने किया ओर चाँद तारों सहित अंतरिक्ष में अपनी विजय का डंका बजाने ये ही लातें पहुंची है किन्तु सर्वत्र अपना लोहा मनवाने वाली इन लातों को हमेशा उपेक्षा ही मिली है ओर साहित्य जगत भी इन लातों के अपने विचारों से लात मारकर उपेक्षित ही किए है। भारतीय संस्कृति में लातों को लेकर अनेक प्रसंग है किन्तु क्या हमारी यह संस्कृति लातों के साथ हुये पक्षपातों ओर पुरोगामी संस्कृति के व्याख्याकारों की उपेक्षाओं का उत्तर देने का साहस करेंगे, शायद कदापि नही। इन्हीं तथ्यपरक विचारण में हमारा शीर्षक विषय होने से ये अत्यन्त आवश्यक हो जाता है कि संस्कृति की पूर्ण व्याख्या करते समय हमें लातों की परम्परा पर भी एक दृष्टिपात कर लेना चाहिये। संस्कृति क्या है? यह सवाल सभी के मन में उठता है ओर मन ही इसका उत्तर देता है की संस्कृति वह है जिसे बिना सोचे विचारे हम बिना झिझक करते है ओर उसके कारण में नहीं झाँकते है। हम से तात्पर्य समाज की वह बिखरी ओर संगठित इकाई है जो एक हो जाये तो अगाध शक्तिशाली हो जाती है ओर यही शक्ति जन जन में प्रवाहित होने लगती है जो संस्कृति का रूप ले लेती है ओर कालांतर में यही वैचारिक जनधारा सबकी चिरपरिचित होने से सभी के लिए सुगम हो जाती है ओर फिर आवश्यक नही की सभी जन एक साथ मिलकर या विचार कर इस परंपरा को अपनाए, सभी इस परंपरा की बन चुकी पगडंडियों पर पूर्व की तरह बिना विचारे इस पर चलते रहेंगे।

आप सभी सुधिपाठक जन को स्मरण ही होगा कि सुप्रसिद्ध मुनि भृगु ने क्षीर सागर में शेषनाग पर लेटे ओर लक्ष्मी के पैर दबाते समय समस्त लोको के स्वामी सत्ताधारी श्रीहरि विष्णु को जो लात मारी थी और उससे उनका जो कुछ खोया था, सो उसका आज तक पता नहीं चल पाया है, यह सतयुग की बात कलियुग के उनके एक भक्त रहीम ने स्वीकारी है- का रहीम हरि को गयो, जो भृगु मारी लात? अर्थात् जो भृगु ने लात मारी उससे हरि का क्या गया। यदि शब्दों की आत्मा होती है, तो लात की भी अपनी आत्मा है। लात कहने मात्र से ही एक स्फूर्ति एक आनन्द का बोध होता है। लात ही एक ऐसा शब्द है जो कर्ता भी है कर्म भी है, क्रिया भी है ओर विशेषण आदि भी है जो सभी भाषाओं के विविध रंग रूपों में प्रयोग होता है। इस प्रकार के शब्दों की अवहेलना करना अपनी संस्कृति को ही अस्वीकार कर देने के बराबर समझा जा सकता है।

लात का अपना ही सौन्दर्य है। अगर लात स्त्री की, या पुरुष की बात की जाये तो उसकी सुंदरता के चित्रण में स्त्री की लात का अप्रतिम सौंदर्य को शृंगार रस में अभिव्यक्त करते करते कितने ही दीवाने हो चुके होंगे, कितने बाबा बैरागी हो चुके होंगे, कितने पागल हो चुके होंगे ओर कितने काव्य मर्मज्ञ होंगे इसकी प्रमाणित जानकारी कहीं उपलब्ध नहीं है ओर न ही यह जुटाने का प्रयास किसी ने किया है, आप यह समझने की भूल न कीजिएगा की जो किसी ने नहीं किया है वह मैं आपको करके दूंगा? यह शोध मेरा विषय नहीं, मैं तो लात खाने वाले, लात मारने वाले, लातों के नीचे दबे कुचले लोगों की पीड़ाए सुनने के बाद यह लातों की परंपरा पर लिखने बैठ गया वरना यह समझ लीजिये यह विषय एक जन्म में पूरा लिखा जाना संभव नहीं है, इसलिए मैं इस विषय को छूकर आगे निकल रहा हूँ। अब लात की बात शुरू करता हूँ, लात तो लात जैसी ही होती है किन्तु उसे सुदरता या कुरूपता की कसौटी पर कसने का काम विवेक पर निर्भर करता है। हमारा विवेक वैचारिकता के मकड़जाल में अगर यथार्थ को देख अन्य कुमार्गी विचारों के संसर्ग में हो तो सुंदरता उसके लिए कुरूप भी हो सकती है तब वह लात मैं सौंदर्य नहीं वासना देखेगा। यहा सुंदरता नही कुरूपता है किन्तु कुरूपों के लिए कुरूपता भी सुंदरता दिखाई देती है। देखा जाये तो भारतीय संस्कृति में लातों को समस्या भी निरूपित किया जाकर सभी की वैचारिकता पर प्रश्नचिन्ह खड़ा किया जा सकता है अथवा लातों को वैचारिक क्रांति की धारा में मोड़कर पदानुवंदन किया जा सकता है।

लात से मोक्षप्राप्ति के मार्ग को रामायण में गोस्वामी तुलसीदास जी ने सुंदर व्याख्या से समझाया है कि अहिल्या को भगवान श्रीराम कि चेतनापुंज लात के स्पर्श से शिला से नारी बनी अर्थात राम के स्पर्श से जड़ता मानवता में परिवर्तित हो गई यानि लात के स्पर्श से मोक्ष प्राप्त किया। इसलिय पाँव का वंदन को मैंने पदानुवन्द्र कहा है। इस उदाहरण के बाद ध्यान रहे लात किसी वर्ग विशेष का प्रतिनिधित्व नहीं करती है, बल्कि यह संदेश देती है कि लात एक जीवित शक्ति का उदाहरण बन सकती है, इसलिए लातों के महत्व को कम नहीं आँका जा सकता है। निशाचर राज साम्राज्यवादी रावण ने अपने भाई विभीषण के देशद्रोही विभीषण को जब देश निकाला का दण्ड, बिना मुकदमा चलाये हुये ही दे दियो तो लात के माध्यम से ही यह क्रिया सम्पन्न हुई थी। त्वयं गोस्वामी तुलसीदास जी ने इसकी पुष्टि करते हुए लिखा है- 'तात-लात रावन मोहि मारा यानि पाँव का वंदन को ही पदानुवन्द्र कहा गया है।

अंत में यह भी बताना चाहूँगा कि हम ओर आप चौबीसों घंटे अपने अपने लेखन में एक दूसरे को लात मारना, लतियाना, लात खाना, दुलत्ती झाड़ना यह सब किसी न किसी रूप में करते आ रहे है ओर अपना नाम उजागर नही होने देना चाहते है। हिन्दी साहित्य जगत में कोई बहुत ही सूक्ष्म रूप में ओर कोई विराट रूप में लात मारते खाते आ रहे है। अनेक साहित्यकारों और कलाकारों के जीवन में लात ने जो विलक्षण व्याकुलता, भावों की टकराहट, चेतना तथा प्रकाश भर दिया है, उससे उऋण होना असम्भव है। प्रसिद्ध है कि तुलसीदास को उनकी पत्नी ने इसी माध्यम से समझाया था। सूरदास को भी चिन्ता-मणि नामक वेश्या के यहाँ इसी प्रकार के मुहावरे का सामना करना पड़ा था। कहा जाता है कि भौजाई की दुलत्ती ने रीतिकाल में भूषण की कविताई को जन्म दिया। आधुनिक काल में भी लातों के सौजन्य से प्राप्त अनेक कृतियाँ हमारे साहित्य को गौरवान्वित कर रही है। वस्तुतः सत्य यहीं है कि जब तक कलाकार के मन पर कोई ठेसात्मक अनुभूति नहीं होती तब तक उसमें मानवीय करुणा की भावना का संचार हो ही नहीं पाता! साहित्य की वाणी का दर्द इत्ती लात के ही माध्यम से फूटता है। यही सच्चे दर्द की कसौटी है।

आत्माराम यादव पीव

कम नहीं है त्रिभाषा नीति के पालन में आने वाली चुनौतियाँ

कोलफील्ड मिरर 05 मार्च 2025: भारत में भाषा शिक्षा को लेकर चर्चा अभी भी जारी है। तमिलनाडु में तीन-भाषा नीति के प्रति कड़ा विरोध भाषाई पहचान और केंद्र सरकार की नीतियों के बारे में महत्त्वपूर्ण चिंताओं को उजागर करता है। वास्तविक शैक्षिक सुधार के लिए भाषा शिक्षण की गुणवत्ता को बढ़ाना आवश्यक है, न कि केवल नीतिगत ढाँचों पर ध्यान केंद्रित करना। केंद्र और राज्य के बीच सकारात्मक बातचीत और व्यावहारिक समझौता ही आगे का सबसे अच्छा रास्ता है। आपातकाल के दौरान शिक्षा को समवर्ती सूची में डाल दिया गया, जिसका अर्थ है कि यह एक संयुक्त जिम्मेदारी है। तीसरी भाषा से सम्बंधित विवादों के कारण समग्र शिक्षा, जो एक आवश्यक शिक्षा पहल है, के वित्तपोषण में बाधा नहीं आनी चाहिए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 बहुभाषी शिक्षा को बढ़ाने और भाषाई विविधता की सुरक्षा के उद्देश्य से त्रि-भाषा ढांचा प्रस्तुत करती है। आठवीं अनुसूची में मान्यता प्राप्त 22 आधिकारिक भाषाओं और बोलियों की समृद्ध विविधता के साथ, क्षेत्रीय आवश्यकताओं और राष्ट्रीय एकता के बीच संतुलन हासिल करना काफ़ी चुनौतीपूर्ण है। गैर-हिंदी भाषी राज्यों की चिंताएँ कथित भाषाई प्रभुत्व से सम्बंधित मुद्दों और इस नीति को कार्यान्वित करने में व्यावहारिक कठिनाइयों पर ज़ोर देती हैं। त्रि-भाषा नीति का लक्ष्य बहुभाषिकता को प्रोत्साहित करना है, जिससे राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा मिलेगा और भारत का भाषाई परिदृश्य समृद्ध होगा। उदाहरण के लिए, उत्तर भारतीय स्कूलों में तमिल पढ़ाने से सांस्कृतिक समझ को बढ़ावा मिल सकता है और क्षेत्रीय अंतर को पाटने में मदद मिल सकती है। बहुभाषिकता को अपनाने से न केवल संज्ञानात्मक क्षमताएँ, समस्या समाधान कौशल और रचनात्मकता बढ़ती है, बल्कि समग्र शैक्षणिक सफलता भी बढ़ती है।

अनेक भाषाओं, विशेषकर क्षेत्रीय भाषाओं में दक्षता से सरकारी नौकरियों, अनुवाद और पर्यटन में विभिन्न कैरियर के रास्ते खुलते हैं। इसके अलावा, कूटनीति और बहुराष्ट्रीय निगमों में पदों के लिए बहुभाषी कौशल अक्सर आवश्यक होते हैं। नीति में यह अनिवार्य किया गया है कि सीखी जाने वाली कम से कम दो भाषाएँ भारत की मूल भाषाएँ हों, जिससे देश की भाषाई विरासत और साहित्य का संरक्षण हो सके। भारत की शास्त्रीय और क्षेत्रीय भाषाई परंपराओं को बनाए रखने के लिए संस्कृत, बंगाली, तेलुगु और मराठी जैसी भाषाओं का प्रचार-प्रसार अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। हालाँकि, तमिलनाडु, कर्नाटक और पश्चिम बंगाल जैसे राज्य इस नीति को हिन्दी को धीरे-धीरे थोपने की नीति के रूप में देखते हैं। चूंकि शिक्षा एक समवर्ती विषय है, इसलिए केंद्रीकृत भाषा सीखने की नीति लागू करना संघीय सिद्धांतों के लिए चुनौतियाँ उत्पन्न करता है। तमिलनाडु सरकार ने एनईपी 2020 की तीन-भाषा आवश्यकता का पालन नहीं करने का विकल्प चुना है, जिसके परिणामस्वरूप राज्य के लिए समग्र शिक्षा अभियान के तहत वित्त पोषण में देरी हो रही है।

इसके अतिरिक्त, कई राज्यों को इन अतिरिक्त भाषाओं के लिए योग्य शिक्षकों की कमी का सामना करना पड़ रहा है, जिससे सरकारी स्कूलों में कार्यान्वयन जटिल हो रहा है। उदाहरण के लिए, ओडिशा और केरल के स्कूलों को सीमित उपलब्धता के कारण हिन्दी शिक्षकों को ढूँढने में संघर्ष करना पड़ रहा है। अतिरिक्त भाषा पाठ्यक्रम शुरू करने से भी छात्रों पर दबाव बढ़ सकता है, जिससे गणित जैसे आवश्यक विषयों में उनकी दक्षता प्रभावित हो सकती है। क्षेत्रीय दलों का प्रतिरोध भाषा नीतियों को अपनाने में महत्त्वपूर्ण चुनौतियाँ उत्पन्न करता है। गैर-हिंदी भाषी राज्यों में राजनीतिक समूह अक्सर इन नीतियों को अपने स्थानीय शासन में घुसपैठ के रूप में देखते हैं, जिसके परिणामस्वरूप विरोध होता है। कई ग्रामीण छात्रों को दूसरी भाषा सीखने में कठिनाई होती है, जिससे तीसरी भाषा सीखने की प्रक्रिया जटिल हो जाती है। उदाहरण के लिए, ग्रामीण बिहार में 40% छात्रों को अंग्रेज़ी भाषा सीखने में कठिनाई होती है, जिससे उनकी अन्य भाषाएँ सीखने की क्षमता में बाधा आती है।

राज्य हिन्दी की अपेक्षा अपनी क्षेत्रीय भाषाओं को प्राथमिकता देते हैं, जिससे केंद्रीय नीतियों के साथ उनका सम्बंध टूट जाता है। पश्चिम बंगाल में बंगाली-अंग्रेजी शिक्षा पर अधिक ज़ोर दिया जाता है तथा अनिवार्य हिन्दी शिक्षा को अस्वीकार कर दिया जाता है। सरकारी स्कूलों में, विशेषकर आर्थिक रूप से वंचित राज्यों में, अक्सर भाषा शिक्षकों, संसाधनों और डिजिटल भाषा प्रयोगशालाओं के लिए आवश्यक धन की कमी होती है। पूर्वोत्तर भारत में तीसरी भाषा पढ़ाने के लिए योग्य शिक्षकों की कमी से प्रभावी नीति कार्यान्वयन में बाधा आती है। राज्यों के लिए एक मानकीकृत त्रि-भाषा नीति का पालन करने की बजाय अपनी क्षेत्रीय भाषा चुनने की स्वतंत्रता होना अधिक लाभदायक होगा। उदाहरण के लिए, कर्नाटक सरकार हिन्दी लागू करने के बजाय कन्नड़, अंग्रेज़ी और विद्यार्थी की पसंद की भाषा पढ़ाने पर ध्यान केंद्रित कर सकती है। शिक्षक प्रशिक्षण को बढ़ावा देना, ई-लर्निंग संसाधनों का विकास करना, तथा भाषा अध्ययन के लिए छात्रवृत्ति प्रदान करना स्थिति में काफ़ी सुधार ला सकता है।

आंध्र प्रदेश में डिजिटल भाषा प्रयोगशालाएँ पहले से ही प्रौद्योगिकी के माध्यम से स्थानीय भाषा शिक्षा को बढ़ावा देने में प्रगति कर रही हैं। छात्रवृत्ति, कैरियर प्रोत्साहन और व्यावहारिक भाषा प्रशिक्षण की पेशकश से छात्रों को स्वेच्छा से अतिरिक्त भाषाएँ सीखने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। यूजीसी संस्कृत, पाली और फारसी में अध्ययन के लिए छात्रवृत्ति प्रदान करता है, जिससे भाषाई विविधता को बनाए रखने में मदद मिलती है। केंद्र सरकार को भाषा नीति पर चर्चा में राज्यों को शामिल करना चाहिए ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि यह स्थानीय आवश्यकताओं को पूरा करती है। संयुक्त शिक्षा समिति की स्थापना से राज्यों को कार्यान्वयन प्रक्रिया में अधिक आवाज़ मिल सकेगी। मूल समस्या, शिक्षा में भाषा मानक और शिक्षण गुणवत्ता में गिरावट। कोचिंग सेंटरों ने विज्ञान और गणित में बढ़त ले ली है, तथा भाषा शिक्षा को पीछे छोड़ दिया है। यद्यपि कई सरकारी स्कूलों में अंग्रेज़ी एक अनिवार्य विषय बन गया है, फिर भी प्रवीणता का स्तर निराशाजनक रूप से निम्न बना हुआ है।

शिक्षकों का सीमित अंग्रेज़ी कौशल सीधे तौर पर छात्रों की पढ़ाई पर प्रभाव डालता है, जैसा कि आंध्र प्रदेश में अंग्रेज़ी माध्यम की शिक्षा की ओर बदलाव से स्पष्ट है। हिन्दी के लिए भी स्थिति बहुत बेहतर नहीं है; इस भाषा में शिक्षण स्तर का भी उतना ही अभाव है। हिन्दी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं को अक्सर सक्रिय शिक्षण के लिए आवश्यक उपकरण के बजाय मात्र सांस्कृतिक प्रतीक के रूप में देखा जाता है। इसके अतिरिक्त, पढ़ने की आदतों में गिरावट भाषा शिक्षा के क्षेत्र में अधिक महत्त्वपूर्ण चुनौतियों की ओर इशारा करती है। स्कूलों में पढ़ने की संस्कृति को बढ़ावा नहीं दिया जा रहा है, जिससे अंततः दीर्घकालिक भाषा कौशल पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। भारत की विविधता में एकता बनाए रखने के लिए एक समेकित भाषाई ढांचा तैयार करना आवश्यक है। भाषा के चयन में लचीलापन प्रदान करना, शिक्षक प्रशिक्षण को बढ़ाना, तथा क्षेत्रीय भाषा शिक्षा को बढ़ावा देना कार्यान्वयन सम्बंधी बाधाओं को दूर करने में सहायक हो सकता है।

अनुवाद और डिजिटल शिक्षा के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग भाषाई विभाजन को प्रभावी ढंग से पाट सकता है। केंद्र और राज्य के बीच सकारात्मक बातचीत और व्यावहारिक समझौता ही आगे का सबसे अच्छा रास्ता है। आपातकाल के दौरान शिक्षा को समवर्ती सूची में डाल दिया गया, जिसका अर्थ है कि यह एक संयुक्त जिम्मेदारी है। तीसरी भाषा से सम्बंधित विवादों के कारण समग्र शिक्षा, जो एक आवश्यक शिक्षा पहल है, के वित्तपोषण में बाधा नहीं आनी चाहिए।

प्रियंका सौरभ

किताब लिखना: तपस्या से तमाशा तक

कोलफील्ड मिरर 05 मार्च 2025: कभी किताब लिखना एक संन्यासी की कठोर तपस्या जैसा था। शब्दों को हिमालय की अथाह गहराइयों से खोजकर, सोने-सी दमक देने तक तराशना पड़ता था। वाक्य इस कदर गढ़े जाते थे, मानो कोई मूर्तिकार पत्थर को छेनी से जीवन की सांस दे रहा हो। प्रकाशकों के दरवाजे पर माथा रगड़ते-रगड़ते लेखक की आत्मा छिल जाती थी, तब जाकर कहीं कोई रचना छपने की कृपा हासिल करती थी। नाम छपना महज उपलब्धि नहीं, एक युग का अमिट दस्तावेज था। लेकिन अब? अब लेखक बनने की राह तपस्या नहीं, तमाशा बन गई है। बस एक लैपटॉप, आत्ममुग्धता का नशा, और बेशर्मी का पहाड़ चाहिए। शब्दों में प्राण हों या सिर्फ हड्डियों का ढांचा, भाषा में रौनक हो या रूखापन, कोई मायने नहीं रखता। जो मन में आया, लिख डाला; एमेजॉन पर चढ़ा दिया; और सोशल मीडिया पर शोर मचा दिया—"मेरी कृति आ गई, इसे न पढ़ा तो तुम्हें अफसोस रहेगा!" फिर देखो, कैसे बिना पन्ने खोले पाठक प्रशंसा के कसीदे गढ़ते हैं, और साहित्य की कीमत सस्ती भीड़ की वाहवाही के नीचे दबकर रह जाती है।

आज लेखन साधना नहीं, सौदेबाजी है। संपादक का डर खत्म, प्रकाशक का दरबार ध्वस्त। कोई कविता लिखकर तुलसीदास बनने चला है, कोई आत्मकथा ठोंककर रूसो का भूत जगाने की कोशिश में है, तो कोई उपन्यास रचकर मुंशी प्रेमचंद को चुनौती दे रहा है। इलाज? एक क्लिक—एमेजॉन पर डालो, फेसबुक पर चिल्लाओ—"मेरी अमर रचना तैयार है, इसे नजरअंदाज किया तो साहित्य तुम्हें माफ नहीं करेगा!" दोस्त लोग पढ़ें या न पढ़ें, लाइक और कमेंट की मूसलाधार बारिश कर देंगे। कोई लिखेगा—"अद्भुत! साहित्य का सूरज उग आया!" कोई पूछेगा—"कितने पन्ने हैं, गुरु?" और लेखक का सीना फूलकर गुब्बारा बन जाएगा, जैसे साहित्य का सारा आसमान उसने अकेले थाम लिया हो।

असली तमाशा तब शुरू होता है, जब लेखक खुद अपनी किताब का ढिंढोरची बन जाता है। नकली अकाउंट से रिव्यू ठोंकता है—"यह किताब मेरे वजूद को हिला गई!" या "हर जीवित आत्मा को इसे पढ़ना चाहिए!" कुछ पागलपन के शिकार तो खुद को "साहित्य का युगद्रष्टा" घोषित कर देते हैं। बेचारा पाठक जब किताब खरीदकर पन्ने पलटता है, तो समझ पड़ता है—यह साहित्य का मंदिर नहीं, शब्दों का कबाड़खाना है, जिसे चमकदार कवर में लपेटकर "शाहकार" का तमगा दे दिया गया। फिर भी, लेखक की मोटी चमड़ी देखो—अगर कोई कह दे, "भाई, भाषा तो लंगड़ी है," तो वह तुरंत तलवारें तान लेता है—"तुम साहित्य की गहराई को क्या समझो, तुम्हारी बुद्धि मेरे पैरों की धूल भी नहीं!" मानो किताब नहीं, वेदों का नया खंड रच डाला हो।

और "बेस्टसेलर" का तमगा? वह तो हास्यास्पद नौटंकी है। किताब छपते ही लेखक खुद बीस कॉपियां खरीद लेता है, रिश्तेदारों को धमकाता है, दोस्तों को ललकारता है—"खरीदो, वरना दोस्ती खत्म!" फिर स्क्रीनशॉट लेकर फेसबुक पर शंखनाद करता है—"मेरी किताब टॉप 10 में!" अब इस टॉप 10 की हकीकत वही जानता है, जो एमेजॉन के धंधे की गहराई में उतरा हो। यह साहित्य का सम्मान नहीं, लेखक की जिद और मजबूरी का नतीजा है।

असल में, आज किताबें सृजन नहीं, सामान हैं। पहले किताबें पाठकों की आत्मा से संवाद करती थीं, अब लेखक फॉलोअर्स और खरीदारों की गिनती में उलझा है। पहले समीक्षा होती थी, अब सिर्फ शोर मचता है। पहले साहित्य मन को झकझोरता था, अब "बुक लॉन्च" पर मिलने वाले लाइक और शेयर लेखक के अहं को चाटुकारिता का घी पिलाते हैं। किताब की क्वालिटी पूछो, तो जवाब मिलता है—"अरे, बिक रही है न, मतलब सिरमौर है!" यानी साहित्य का पैमाना अब बाजार की तराजू बन गया है।

यह सब तब तक चलेगा, जब तक सोशल मीडिया पर लिंक ठेलने का हथियार जिंदा है, एमेजॉन पर हर अज्ञानी को लेखक बनने का लाइसेंस मिलता रहेगा, और पाठक इस मूर्खता में डूबे रहेंगे कि हर छपी चीज साहित्य का रत्न होती है। आज तो बिना पढ़े तारीफ करना एक नया पेशा बन गया है। कोई लिखता है—"साहित्य का नया सूरज!" जबकि किताब का पहला पन्ना तक नहीं देखा। कोई कहता है—"आप युगपुरुष हैं!" जबकि उसे लेखक का नाम भी याद नहीं। और लेखक इस चापलूसी के दलदल में डूबकर खुद को साहित्य का भगवान मान बैठता है।

अब यह नया दौर है, जहां लेखन साधना नहीं, तमाशा बन चुका है—तपस्या की जगह तड़क-भड़क, शब्दों की जगह शेखी, और साहित्य की जगह बाजार ने ले ली है। अब सवाल यह नहीं कि किताब में कोई गहराई है या नहीं, बल्कि यह है कि कितने लाइक बटोर लिए, कितने शेयर उड़ा लिए, और कितनी कॉपियां खपा दीं। साहित्य अब पढ़ने, सोचने या आत्मसात करने के लिए नहीं, बल्कि बेचने और चमकाने के लिए गढ़ा जाता है। अगली बार कोई लेखक अपनी "अमर कृति" का लिंक भेजे, तो सोच-विचार छोड़कर बस लाइक ठोंक देना—आखिर पढ़ने की जहमत कौन उठाए और समझदारी दिखाने की जरूरत ही किसे है!

प्रो. आरके जैन "अरिजीत"
बड़वानी (मप्र)

पच्चास साल बाद होने वाली परिसीमन को लेकर चिंताएँ

राजकोषीय संघवाद और संस्थागत ढांचे को मज़बूत करके, हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि राजनीतिक निष्पक्षता जनसांख्यिकीय परिवर्तनों के साथ मिलीजुली हो, जिससे एक सुसंगत और एकजुट भारत को बढ़ावा मिले। लोकसभा सीटों की संख्या बढ़ाने से नागरिकों को बेहतर प्रतिनिधित्व मिलेगा, जिससे निर्वाचन क्षेत्रों का आकार छोटा होगा और शासन में सुधार होगा। संसदीय सीटों को 543 से बढ़ाकर 800 से अधिक करने से संसद सदस्य मतदाताओं की ज़रूरतों को अधिक प्रभावी ढंग से पूरा कर सकेंगे। निश्चित सीट आवंटन के कारण उत्तरी राज्यों को कम प्रतिनिधित्व का सामना करना पड़ा है और परिसीमन इन ऐतिहासिक असंतुलनों को सुधारने का एक मौका प्रदान करता है।

कोलफील्ड मिरर 06 मार्च 2025: उचित प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए अधिक आबादी वाले राज्यों के लिए अधिक सीटें जोड़ते हुए वर्तमान सीट अनुपात को बनाए रखना महत्त्वपूर्ण है। राज्यसभा के समान एक मॉडल प्रगतिशील राज्यों को नुक़सान पहुँचाए बिना एक संतुलित दृष्टिकोण प्रदान कर सकता है। सीटों का पुनर्वितरण करते समय, हमें आर्थिक योगदान, विकास मीट्रिक और शासन प्रभावशीलता को ध्यान में रखना चाहिए। सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) को प्राप्त करने वाले राज्यों को विशेष राजनीतिक प्रतिनिधित्व दिया जा सकता है, जो अच्छे शासन को पुरस्कृत करता है। क्षेत्रीय संतुलन बनाए रखने और तेजी से बढ़ते राज्यों के प्रभुत्व को रोकने के लिए कानूनी उपाय किए जाने चाहिए। संसद के भीतर एक क्षेत्रीय परिषद की स्थापना से कम प्रतिनिधित्व वाले राज्यों के हितों की वकालत करने में मदद मिल सकती है।

2031 की जनगणना के बाद एक क्रमिक दृष्टिकोण हितधारकों के साथ चर्चा और एक सहज संक्रमण की अनुमति देगा। किसी भी परिसीमन से पहले, एक राष्ट्रीय आयोग को संभावित प्रभावों का आकलन करना चाहिए और आवश्यक सुरक्षा उपाय सुझाने चाहिए। राज्य सरकारों के लिए स्थापित चैनलों के माध्यम से परिसीमन वार्ता में सक्रिय रूप से भाग लेना महत्त्वपूर्ण है। सहकारी संघवाद को प्रोत्साहित करने के लिए किसी भी सीट पुनर्वितरण को अंतिम रूप देने से पहले अंतर-राज्य परिषद के साथ अनिवार्य परामर्श होना चाहिए। एक सुनियोजित परिसीमन प्रक्रिया जनसांख्यिकीय वास्तविकताओं को संघवाद की अखंडता से जोड़ सकती है। क्षेत्रीय असमानताओं से बचने के लिए, हमें दोहरे प्रतिनिधित्व मॉडल, भारित मतदान या राज्यसभा की शक्तियों को बढ़ाने जैसी नवीन रणनीतियों पर विचार करना चाहिए।

राजकोषीय संघवाद और संस्थागत ढांचे को मज़बूत करके, हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि राजनीतिक निष्पक्षता जनसांख्यिकीय परिवर्तनों के साथ संरेखित हो, जिससे एक सुसंगत और एकजुट भारत को बढ़ावा मिले। लोकसभा सीटों की संख्या बढ़ाने से नागरिकों को बेहतर प्रतिनिधित्व मिलेगा, जिससे निर्वाचन क्षेत्रों का आकार छोटा होगा और शासन में सुधार होगा। संसदीय सीटों को 543 से बढ़ाकर 800 से अधिक करने से संसद सदस्य मतदाताओं की ज़रूरतों को अधिक प्रभावी ढंग से सम्बोधित कर सकेंगे। निश्चित सीट आवंटन के कारण उत्तरी राज्यों को कम प्रतिनिधित्व का सामना करना पड़ा है और परिसीमन इन ऐतिहासिक असंतुलनों को सुधारने का एक मौका प्रदान करता है।

बिहार का प्रतिनिधित्व अभी भी 1971 के आँकड़ों पर आधारित है, बावजूद इसके कि इसकी जनसंख्या में काफ़ी वृद्धि हुई है। नवीनतम जनगणना आँकड़ों के अनुसार निर्वाचन क्षेत्रों को संशोधित करने से लोकतांत्रिक समानता को बढ़ावा मिलेगा और चुनावी प्रतिनिधित्व में जनसंख्या असमानताओं को रोका जा सकेगा। झारखंड, जिसे 2000 में बिहार से अलग कर दिया गया था, अभी भी पुरानी निर्वाचन संरचना का पालन कर रहा है, जो राजनीतिक स्पष्टता को कम करता है। अधिक आबादी वाले राज्यों से सांसदों की संख्या में वृद्धि विकास सम्बंधी असमानताओं की ओर ध्यान आकर्षित करेगी, जिससे यह सुनिश्चित होगा कि नीतिगत हस्तक्षेप अविकसित क्षेत्रों की ओर लक्षित हों। मध्य प्रदेश और राजस्थान जैसे राज्यों के लिए अधिक संख्या में सांसदों से बेहतर बुनियादी ढाँचा नियोजन और निवेश का बेहतर आवंटन हो सकता है।

प्रगतिशील राज्यों की घटती भूमिका संघवाद और निष्पक्ष राजनीतिक प्रतिनिधित्व को नुक़सान पहुँचाती है। प्रभावी शासन वाले दक्षिणी राज्यों का प्रभाव कम हो सकता है, जिससे ठोस नीति प्रबंधन के लिए प्रेरणा कम हो सकती है। केरल की उच्च साक्षरता दर से प्रेरित विकास पर्याप्त सीट आवंटन में तब्दील नहीं हो सकता है, जिससे अन्य राज्य समान रणनीति अपनाने से हतोत्साहित हो सकते हैं। अधिक आबादी वाले राज्यों के लिए अधिक प्रतिनिधित्व केंद्रीकृत नीति निर्माण की ओर रुझान को जन्म दे सकता है, जो क्षेत्रीय शासन स्वायत्तता को प्रतिबंधित कर सकता है। कृषि राज्यों के पक्ष में विधायी समायोजन औद्योगिक क्षेत्रों की ज़रूरतों की उपेक्षा कर सकते हैं, जिससे आर्थिक संतुलन बाधित हो सकता है। यह राजनीतिक पुनर्संरेखण वित्त आयोग द्वारा करों के आवंटन को प्रभावित कर सकता है, जो संभावित रूप से बड़ी आबादी वाले राज्यों के पक्ष में हो सकता है।

अपने महत्त्वपूर्ण आर्थिक इनपुट के बावजूद, तमिलनाडु और महाराष्ट्र कम प्रतिनिधित्व के कारण अपने राजकोषीय हितों की रक्षा करने के लिए संघर्ष कर सकते हैं। केवल जनसंख्या के आधार पर प्रतिनिधित्व में वृद्धि उत्तर और दक्षिण के बीच विभाजन को बढ़ा सकती है, जिससे क्षेत्रीय तनाव पैदा हो सकता है। तमिलनाडु में राजनीतिक दल परिसीमन के खिलाफ हैं, उन्हें डर है कि अधिक हिन्दी भाषी आबादी वाले राज्यों को सत्ता का नुक़सान होगा, जिससे राजनीतिक परिदृश्य और अधिक विखंडित हो सकता है। निष्पक्ष प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए अधिक आबादी वाले राज्यों के लिए अधिक सीटें जोड़ते हुए वर्तमान सीट अनुपात को बनाए रखना महत्त्वपूर्ण है। राज्यसभा जैसा मॉडल प्रगतिशील राज्यों को नुक़सान पहुँचाए बिना संतुलित दृष्टिकोण प्रदान कर सकता है। सीटों का पुनर्वितरण करते समय, हमें आर्थिक योगदान, विकास मीट्रिक और शासन प्रभावशीलता को ध्यान में रखना चाहिए।

सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) को प्राप्त करने वाले राज्यों को विशेष राजनीतिक प्रतिनिधित्व दिया जा सकता है, जो अच्छे शासन को पुरस्कृत करता है। क्षेत्रीय संतुलन बनाए रखने और तेजी से बढ़ते राज्यों के प्रभुत्व को रोकने के लिए कानूनी उपाय किए जाने चाहिए। संसद के भीतर एक क्षेत्रीय परिषद की स्थापना से कम प्रतिनिधित्व वाले राज्यों के हितों की वकालत करने में मदद मिल सकती है। 2031 की जनगणना के बाद एक क्रमिक दृष्टिकोण हितधारकों के साथ चर्चा और एक सहज संक्रमण की अनुमति देगा। किसी भी परिसीमन से पहले, एक राष्ट्रीय आयोग को संभावित प्रभावों का आकलन करना चाहिए और आवश्यक सुरक्षा उपाय सुझाने चाहिए। राज्य सरकारों के लिए स्थापित चैनलों के माध्यम से परिसीमन वार्ता में सक्रिय रूप से भाग लेना महत्त्वपूर्ण है। सहकारी संघवाद को प्रोत्साहित करने के लिए किसी भी सीट के पुनर्वितरण को अंतिम रूप देने से पहले अंतर-राज्य परिषद के साथ अनिवार्य परामर्श होना चाहिए।

एक सुनियोजित परिसीमन प्रक्रिया जनसांख्यिकीय वास्तविकताओं को संघवाद की अखंडता से जोड़ सकती है। क्षेत्रीय असमानताओं से बचने के लिए, हमें दोहरे प्रतिनिधित्व मॉडल, भारित मतदान या राज्यसभा की शक्तियों को बढ़ाने जैसी नवीन रणनीतियों पर विचार करना चाहिए। राजकोषीय संघवाद और संस्थागत ढांचे को मज़बूत करके, हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि राजनीतिक निष्पक्षता जनसांख्यिकीय परिवर्तनों के साथ संरेखित हो, जिससे एक सुसंगत और एकजुट भारत को बढ़ावा मिले।

डॉ० सत्यवान सौरभ,
कवि,स्वतंत्र पत्रकार एवं स्तंभकार,
आकाशवाणी एवं टीवी पेनालिस्ट
बड़वा (सिवानी) भिवानी, हरियाणा

अब टीओबी सह एससीइआरटी मिलकर करेगी नवाचार व डिजिटल शिक्षा का प्रचार

इस गठजोड़ से होगी शिक्षाजगत् में नई क्रान्ति का संचार

कोलफील्ड मिरर 06 मार्च (प्रतिनिधि) भागलपुर:- बिहार के शिक्षा जगत् में नवाचार और डिजिटल शिक्षा के क्षेत्र में एक ऐतिहासिक पहल करते हुए राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार और टीचर्स ऑफ बिहार के बीच एक महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए। यह समझौता राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद,बिहार के वेब पोर्टल के निःशुल्क वेब डेवलपमेंट के लिए किया गया है, जिसे टीचर्स ऑफ बिहार की टेक्निकल टीम द्वारा तैयार किया जाएगा। यह पोर्टल राज्य के शिक्षकों के नवाचार, डिजिटल सामग्री और शैक्षणिक संसाधनों को साझा करने के लिए एक समर्पित मंच होगा, जो शिक्षकों के सतत व्यावसायिक विकास को बढ़ावा देने में सहायक सिद्ध होगा।

समझौता हस्ताक्षर कार्यक्रम में राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद,बिहार के निदेशक सज्जन आर.(आइएएस), संयुक्त निदेशक (प्रशासन) श्रीमती सुषमा कुमारी और टीचर्स ऑफ बिहार के संस्थापक शिव कुमार की गरिमामयी उपस्थिति रही।

टीचर्स ऑफ बिहार शिक्षकों के नवाचारों को प्रोत्साहित करने वाला एक प्रमुख स्वैच्छिक प्लेटफ़ॉर्म है, जो शिक्षकों के नेतृत्व में शिक्षा में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए सतत प्रयासरत है।

यह साझेदारी शिक्षक से मार्गदर्शक बनने की यात्रा में एक नई दिशा प्रदान करेगी। इस पोर्टल का संपूर्ण तकनीकी विकास टीचर्स ऑफ बिहार के टेक्निकल टीम लीडर इंजीनियर शिवेंद्र प्रकाश सुमन के मार्गदर्शन में किया जा रहा है। इस अवसर पर शिवेंद्र प्रकाश सुमन ने कहा कि "शिक्षकों के नवाचारों और डिजिटल शिक्षा को सशक्त बनाने के लिए तकनीक का प्रभावी उपयोग हमारी प्राथमिकता है। यह पोर्टल बिहार के शिक्षकों के डिजिटल परिवर्तन में मील का पत्थर साबित होगा।

शिक्षिका डा० शालिनी रघुवंशमणि ने कहा कि "टीओबी व एससीइआरटी के समझौते से शिक्षकों के नवाचार को और अधिक सम्मान मिलेगा। संस्कृताचार्य डॉ० शिवनाथ रविदास उर्फ़ चहकनाथ भागलपुरी ने कहा कि "इस गठजोड़ से शिक्षाजगत् में नई क्रान्ति का संचार होगा।

एसएसपी ने किया पीरपैंती थाने का निरीक्षण, दिए कई निर्देश

कोलफील्ड मिरर 06 मार्च (ऋषिकान्त मिश्र) पीरपैंती-: भागलपुर के वरीय पुलिस अधीक्षक हृदय कांत ने बुधवार की दोपहर पीरपैंती थाने का निरीक्षण किया।

इस दौरान उन्होंने थाना में संधारित अभिलेखों का अवलोकन किया और परिसर में घूमकर नए एवं पुराने भवनों, जप्त वाहनों, पुलिस बैरक, कंप्यूटर कक्ष इत्यादि का बारीकी से निरीक्षण किया। साथ हीं एसएसपी ने पुलिस पदाधिकारियों के साथ बैठक कर आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

थाने के लंबित मामलों के बारे में थानाध्यक्ष पु.नि. नीरज कुमार से विस्तृत जानकारी ली और न्यायालय से जुड़े मामलों के त्वरित निष्पादन का निर्देश दिया।

इसके बाद, उन्होंने गोविंदपुर पुलिस फांडी का निरीक्षण किया और आसन्न त्योहार होली और रमजान के दौरान शांति व सद्भाव के साथ त्योहार मानने की लोगों से अपील की। वहीं उन्होंने कहा कि त्योहार के दौरान असामाजिक तत्वों पर पुलिस की कड़ी नजर रहेगी। जगह-जगह पुलिस बल की तैनाती रहेगी।

मौके पर अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी 2 डॉ. अर्जुन कुमार गुप्ता, थानाध्यक्ष पु.नि. नीरज कुमार सहित अन्य पुलिसकर्मी उपस्थित थे।

अच्छे भाव तथा मेहनत की कमाई से बना भोजन करने से मन, बुद्धि, चित्त सही रहते हैं- बाबा उमाकान्त जी महाराज

"जैसा खाओ अन्न वैसा होये मन, जैसा पियो पानी वैसी होये वाणी"।

कोलफील्ड मिरर 06 मार्च (उज्जैन): परम सन्त बाबा उमाकान्त जी महाराज ने सतसंग में बताया कि बुद्धि बनती कैसे है, बुद्धि किस तरह से भ्रष्ट होती है और किस तरह से अच्छी रहती है। बाबा जी ने कहा देखो प्रेमियों! जो चीज आप लोग खाते हो उसी का खून बनता है। खून पूरे शरीर में फैलता है और उसी खून से ही ये शरीर चलता है। इसी शरीर में मन भी है, इसी शरीर में बुद्धि भी है और इसी शरीर में चित्त भी चिंतन करता है। तो सबका सम्बंध खाने-पीने से ही है। जब से लोग अखाद्य चीजों को खाने लग गए तब से धर्म को भी भूल रहे हैं। लोगों के कर्म खराब हो रहे हैं और जब कर्म खराब हों जाते हैं और धर्म नहीं रहता है तो सजा मिलती है। चाहे रावण रहा हो, कंस रहा हो या हिरण्यकश्यप रहा हो और चाहे जितने भी ऐसे आए जो धर्म से अलग हुए, मानवता से अलग हुए, तो विनाश ही हुआ।

दूषित अन्न खाने से भीष्म पितामह जैसे योगी की बुद्धि खराब हो गई।

कहा गया "जैसा खाओ अन्न वैसा होये मन, जैसा पियो पानी वैसी होये वाणी"। आप देखिए द्वापर के इतिहास में जब भीष्म पितामह अपने अंतिम समय में बाणों की शय्या पर लेटे हुए थे, तो ज्ञान का उपदेश दे रहे थे। क्योंकि आखिरी वक्त पर कर्म जब याद आते हैं, तो पश्चाताप होता है। यह देखकर द्रोपदी को हँसी आ गयी। तो भीष्म पितामह ने पूछा कि "द्रौपदी तू क्यों हँस रही है?" बोली "पितामह, ऐसे ही हँस दी"। तो उन्होंने कहा "नहीं, तेरे हँसने में बहुत बड़ा राज हुआ करता है। हँस कर तो तूने इतना बड़ा महाभारत करा दिया। बोल क्यों हँस रही है?" फिर द्रोपदी बोली "पितामह जी, इस समय तो आप बहुत अच्छी-अच्छी बात बता रहे हो, लेकिन ये ज्ञान, ये बुद्धि आपकी उस समय कहां चली गई थी जब दुशासन हमको भरी सभा में नग्न कर रहा था, चीर खींच रहा था? तब आप चुपचाप क्यों बैठे थे?" तब उन्होंने कहा "द्रौपदी, तू ठीक कह रही है। उस समय मैं पापी दुर्योधन का अन्न खा रहा था। इसलिए मेरी बुद्धि भ्रष्ट हो गई थी।"। तो अब आप यह सोचो जब आदमी जानवरों का मांस खाएगा तो बुद्धि कहां से ठीक रहेगी? नहीं रहेगी।

भोजन बनाने वाले को कभी नाराज नहीं करना चाहिए

भाव से जो भोजन बनाया जाता है, उसमें ज्यादा पवित्रता रहती है। इसलिए कहा जाता है कि भोजन बनाने वाले को नाराज नहीं करना चाहिए। नहीं तो, वह जब टेंशन में रहेगा, तो देखो नाराजगी में लोग नमक ही ज्यादा कर देते हैं: मिर्च ही ज्यादा कर देते हैं। तो उनको खुश रखना चाहिए, उनसे उलझना नहीं चाहिए। घर में जो भाव से बना हुआ भोजन होता है और जो मेहनत से कमाते हैं, उनका जो भोजन होता है उसमें मन भी प्रसन्न रहता है, चित्त भी अच्छा चिंतन करता है और बुद्धि भी सही रहती है।

समाजवादी पार्टी के धनबाद जिला अध्यक्ष बने विजय कुमार

कोलफील्ड मिरर 06 मार्च (निरसा): समाजवादी पार्टी के धनबाद जिला अध्यक्ष विजय कुमार को बनाया गया है। समाजवादी पार्टी के झारखंड प्रदेश अध्यक्ष केश्वर यादव ने पत्र जारी कर विजय कुमार को धनबाद जिला का नेतृत्व करने का कमान सौपा है. साथ ही उन्होंने कहा कि जल्द ही तीन माह के अंदर जिला कमेटी का विस्तार कर प्रदेश को सूचित करें। जिला अध्यक्ष बनाए जाने पर विजय कुमार को पार्टी के लोगों ने फूल माला पहनकर उनका स्वागत और बधाई दिया।

वही इस विजय कुमार ने पद संभालते हुए कहा कि पार्टी ने जिस भरोसा विश्वास से हमें यह पद की जिम्मेदारी दी है उसके लिए हम पार्टी को धन्यवाद देंगे और निष्ठा पूर्वक सभी नियमो का पालन करूंगा. साथ ही जल्द धनबाद जिला में समाजवादी पार्टी का विस्तार करूंगा और कमेटी बनाऊंगा। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में जिला में काफी बदलाव होगा। समाजवादी पार्टी एक नए रूप में पूरे धनबाद जिला में काम करेगी शिक्षा, स्वास्थ्य सड़क जैसे जो भी गंभीर समस्याएं या मुद्दे है उस समस्या को दूर करेगी। आमजनों का आवाज बनेगी समाजवादी पार्टी।

सृष्टि का उपहार

सृष्टि का उपहार नारी,घर-परिवार का आधार है नारी
अर्द्धनारीश्वर श्रृंगार, धैर्य-त्याग-ममता की मूरत नारी।

जन्मदायिनी-पालनहार,धरा-गगन-नदी अविरल प्रवाह।
माँ, बेटी, बहन, बहु बन दायित्वों का है करती निर्वाह।

नारी करुणा की सागर, नारी है प्रेम भक्ति की गागर।
नारी में दुर्गा की शक्ति,उसमें छुपी कोमल अभिव्यक्ति।

नारी करती त्याग सदा, धरा पर माँ का योगदान बड़ा।
इंद्र-रावण से छली जाए फिर भी देती अग्नि परीक्षा।

जगजननी, करुणामयी, ममतामयी से अलंकृत जो।
नारी लाज, मुस्कान, प्रेम, दया, धैर्य, ममता की मूरत वो।

बन सावित्री वो यमराज को भी है विवश कर देती।
शक्ति अद्भुत-न्यारी लक्ष्मी, सीता, दुर्गा चाहे हो काली।

अर्चना सिंह जया, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश
कोलफील्ड मिरर

हरियाणा में बोर्ड परीक्षा में नकल पर 'नायाब' सख्ती

चार डीएसपी समेत 25 अफसर सस्पेंड, 17अन्य फंसे
सस्पेंशन वालों में 4 डीएसपी, 3 एसएचओ, 8 छात्रों पर भी एफआईआर

कोलफील्ड मिरर 06 मार्च 2025: हरियाणा में इन दिनों 10वीं और 12वीं की बोर्ड परीक्षाएं जारी हैं। परीक्षा के पहले ही दिन से नकल रूपी दानव ने अपना प्रभाव दिखाना शुरू कर दिया है। सहयोगी बनने वालों की कोई कमी नहीं। जिसे देखो वहीं चार किताब काख़ में डाल परीक्षा केंद्रों के बाहर मंडरा रहे हैं। बोर्ड एग्जाम के पहले ही दिन से प्रश्न पत्र बाहर पहुंच रहे हैं। दसवीं बोर्ड की गणित विषय की परीक्षा ने इस बार ऐसी किरकरी कराई है कि खुद मुख्यमंत्री नायाब सिंह सैनी को मोर्चा संभालना पड़ा है। कार्रवाई भी ऐसी हुई है कि दूसरे राज्यों के लिए भी यह उदाहरण बनेगी। बड़े-बड़े अधिकारियों को लपेट दिया गया है। डीसी-एसपी सब दौड़े फिर रहे हैं।

हुआ यूं कि परीक्षा शुरू होने के थोड़ी ही देर बाद तीन जगह परीक्षा केंद्र से पेपर बाहर आ गया। जगह-जगह पेपर हल कर परीक्षा केंद्र में खिड़की और छतों से परीक्षार्थियों तक पर्चियां पहुंचाती देखी गई। यहां तक कई जगह पुलिस और अध्यापकों की मौजूदगी में भी पर्चियां को भिजवाना देखा गया। मीडिया में मामला उछला तो सरकार और प्रशासन की खूब किरकरी हुई। मामले की गंभीरता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि मुख्यमंत्री को इस मामले में तुरंत प्रभाव से लापरवाही बरतने वालों के खिलाफ कार्रवाई के निर्देश जारी करने पड़े। इस मामले में अब तक 4 पुलिस उप अधीक्षक, 3 थाना प्रभारी समेत 25 पुलिस अधिकारी कर्मचारियों को सस्पेंड किया गया है। इसके अलावा चार राजकीय और एक निजी स्कूल के परीक्षा निरीक्षक के खिलाफ मुकदमा दर्ज करवाया गया है। यहीं नहीं चार परीक्षा निरीक्षकों और इन केंद्रों के समस्त परीक्षा स्टाफ को भी निलंबित कर दिया गया। इसके अलावा 8 परीक्षार्थियों और 4 अन्य के खिलाफ भी मुकदमा दर्ज करवाया गया है।

मुख्यमंत्री ने सभी जिलों के डीसी और एसपी को भी यह सुनिश्चित करने के आदेश दिए हैं कि धारा-163 की पालना सुनिश्चित हो। परीक्षा केंद्र के 500 मीटर के दायरे में कोई व्यक्ति अनाधिकृत प्रवेश करता पाया गया तो पुलिस की जिम्मेदारी होगी। साथ ही पेपर आउट व नकल की शिकायत आती है तो जिला प्रशासन जिम्मेदार होगा। एसपी को निर्देश दिए हैं कि बोर्ड परीक्षा के दिन परीक्षा केंद्र की सुरक्षा चाकचौबंद होनी चाहिए। सीएम के निर्देश मिलते ही पुलिस और प्रशासन पूर्ण रूप से सक्रिय हो गया है। सोमवार की परीक्षा में आला अधिकारी खुद मोर्चा संभालते दिखे।

प्रदेश सरकार ने अब यह भी फैसला लिया है कि परीक्षाओं में जहां इस बार बाहरी हस्तक्षेप है या नकल के मामले सामने आएंगे, वहां भविष्य में परीक्षा केंद्र ही नहीं बनाया जाएगा। शिक्षा निदेशालय ने भी पत्र जारी कर निर्देश दिए हैं कि जिस दिन बोर्ड की परीक्षा हो, उस दिन नॉन वर्किंग-डे घोषित किया जाए। जिन कर्मचारियों की डयूटी परीक्षा में लगी है, वहीं आयेंगे।

शिक्षा बोर्ड ने 588 केंद्रों पर पूर्ण समय के लिए ऑब्जर्वरों की नियुक्ति की गई है। बोर्ड सचिव के अनुसार प्रश्न-पत्रों पर अल्फा न्यूमेरिक कोड, क्यूआर कोड और हिडन सिक्योरिटी फीचर हैं। अगर कोई प्रश्न पत्र की फोटो खींचेगा तो तुरंत पता लग जाएगा कि प्रश्न पत्र कहां से आउट हुआ है और किस परीक्षार्थी का है। इस पर केंद्र के अधीक्षक, पर्यवेक्षक व अन्य स्टाफ के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

चलिए अब बात को थोड़ा आगे बढ़ाते है कि इस तरह की सख्ती की जरूरत क्यों पड़ी? नकल सामाजिक बुराई है। नकल करना पाप है। नकल से बचे, यह धीमा जहर है। नकल भविष्य से भटकाने वाली है। नकल करना और करवाना युवा वर्ग को लक्ष्य और दिशाहीन करना है। नकल के परिणाम दूरगामी होते हैं। जब भी परीक्षाओं का दौर शुरू होता है तो इस तरह के स्लोगन और विचार आम देखने को मिलते हैं । प्रत्येक परीक्षा केंद्र के बाहर बड़े-बड़े इश्तिहार लगाए जाते हैं, जिन पर मोटे-मोटे अक्षरों में लिखा होता है- 'परीक्षा में नकल करना पाप है/ सामाजिक बुराई है।' फिर भी परीक्षाओं में नकल रूक ही नहीं पा रही। वर्ष 2015 में बिहार में भी नकल की तस्वीरें देशभर में वायरल हुई थी। परीक्षा के दौरान तीन मंजिले स्कूल की खिड़कियों और दीवारों से चिपक कर विद्यार्थियों के सहयोगियों और अभिभावकों ने बच्चों को नकल की पर्चियां पहुंचाने की तस्वीरें मीडिया में खूब चली थी। अगले ही दिन नकल कर रहे छात्रों को मदद करने के आरोप में होमगार्ड के 8 जवानों को गिरफ्तार किया गया। 500 से ज्यादा परीक्षार्थियों को निष्काषित भी कर दिया गया था। इसके बाद संभवतः हरियाणा में नकल के मामले में यह बड़ी कार्रवाई हुई है। ऐसा फिर न हो इसके लिए सिर्फ सरकार और प्रशासन से काम नहीं चलने वाला। इसके लिए सबसे पहले अभिभावकों और वहां के स्थानीय निवासियों का सहयोग जरूरी है। वे सहयोग करेंगे तो क्या मजाल कोई परीक्षा केंद्र में पहुंच जाए। इससे पहले भी काफी पंचायतों द्वारा ऐसा प्रयास किया गया है। पुलिस कर्मियों की कमी भी इस घटना का बड़ा कारण है। परीक्षा केंद्र में बाहरी तत्व पांच सौ और पुलिस कर्मी दो तो किस तरह नकल रुकेगी। मुख्यमंत्री की सख्ती के बाद भी तो परीक्षा केंद्रों पर सख्ती हुई है। यही पहले होती तो किरकरी तो न होती। चाणक्य नीति में आचार्य चाणक्य का एक प्रसिद्ध श्लोक है:

नात्यन्तं सरलैर्भाव्यं गत्वा पश्य वनस्थलीम्।
छिद्यन्ते सरलास्तत्र कुब्जास्तिष्ठन्ति पादपाः॥

आचार्य चाणक्य कहते हैं कि व्यक्ति का ज्यादा सीधापन भी कई बार गले की फांस बन सकता है। उदाहरण देते हुए वे कहते हैं कि वन में सीधे पेड़ पहले काटे जाते हैं। क्योंकि इन्हें काटने में ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ती।

सुशील कुमार 'नवीन', हिसार
लेखक वरिष्ठ पत्रकार, स्तंभकार और शिक्षाविद एवं दो बार अकादमी सम्मान से सम्मानित है।

तुम्हारे पास

कैसे आएं हे मनमोहन
हम तुम्हारे पास।
तुम्हारी बहु पत्नियां
करती मेरा उपहास।

कहती वे हैं सबके
फिर रहते क्यों तेरे पास
अवश्य तूने रूप में अपने
लिया है उनको फांस।

कैसे आएं हे मनमोहन
हम तुम्हारे पास।

कहती अपनी चतुराई से
है तूने उन्हें भरमाया
अवश्य हमारे विरुद्ध उनको
तूने है भड़काया।
तभी तो तेरे सिवा उन्हें
आए ना कोई रास।

कैसे आएं हे मनमोहन
हम तुम्हारे पास।

कहती तू ही क्यों
अंतर कक्ष में उनके
नित करती है वास।
फिर अपने मुख को दबाए
सब करती मेरा परिहास।

कैसे आए हे मनमोहन
हम तुम्हारे पास।

© लक्ष्मी दीक्षित
ग्वालियर मध्यप्रदेश
कोलफील्ड मिरर

प्रकृति और पर्यावरण के सुरक्षा कवच वृक्षों को होली पर बचाए रखें

कोलफील्ड मिरर 06 मार्च 2025: आज हमें प्रकृति की आवश्यकता है, प्रकृति का सुरक्षा कवच वनक्षेत्र है, वनों की पहचान वहाँ उगने वाले वृक्षों से है ओर यही वृक्ष हमारे पर्यावरण के लिए हमे जीवांदायिनी वायु प्रदान कर हमारी सुरक्षा के कवच बने हुये है। हम परंपरागत होली का पर्व मनाने के लिए हर साल लाखों वृक्षों का विनाश कर ख्रि सुरक्षा में खुद ही सेंध लगाकर अपने खुद के लिए भस्मासुर बने हुये है। आवश्यकता है जल के साथ वनों की सुरक्षा करने की ताकि इन्सान अपनी सुरक्षा हेतु विभिन्न पर्यावरण के साधनों की सुरक्षा का आवरण धारण कर न केवल प्रकृति बल्कि वनों पहाड़ों में निवास करने वाले समस्त जीवों के लिये वरदान साबित हो सके। वन प्रदेश के आसपास के नगरों सहित उनके अंचल के बसे गांवों में होली पर जिस प्रकार लाखों वृक्षों को होलिकादहन में आहुती दे रहे है ओर उसी परंपरा को पागलपन तक हठधर्मिता से अपनाने वाले शहरी भी अपने आसपास के पेड़ पौधों को होली में झोकने के लिए पर्यावरण के आवरण का ध्वस्त कर रहे है वह एक विचारणीय प्रश्न है जिसपर प्रतिबंध लगाने हेतु समाज को सजगता के साथ पहल कर रोकना होगा वरना हम प्रकृति के सम्मान में पूरे विश्व में पर्यावरण दिवस के रूप में 5 जून का महोत्सव की ओपचारिकता का निर्वहन कर खुद प्रकृति की तरह तिल तिल झुलसने को विवश होंगे।

वन प्रकृति के लिये सुरक्षा कवच का ही नहीं अपूर्ति श्रृंगार का भी कार्य करते है। वन में हरे-भरे वृक्ष लतायें, झाड़ियाॅ फल और फूल होते हे वे निवास स्थान होते है। भोरों, नाचती गाती तितलियाॅ, पशु पक्षियों का मानव जाति की रक्षा करने वाली अमूल्य संपदा ये वन ही होते है। वृक्ष की महत्ता आदि काल से ही भारतीय संस्कृति और सभ्यता में पूजनीय रही है कुछ वृक्ष जैसे नीम, पीपल, अशोक ये न केवल शुद्ध आक्सीजन का स्त्रोत है बल्कि ये वृक्ष सदियों से मानव जाति के लिये पूजनीय रहे हे। वृक्ष मूल रूप से मिट्टी के रक्षक है, वे न केवल आँधियों के तीव्र वेग को रोकते है वे मिट्ाटी को उड़ने से बचाते है। वृक्ष की जड़े पर्वतों की चट्टानों को मजबूती से पकड़े रहती है जिससे मिट्ाटी की सुरक्षा होती है और मिट्ाटी का वो उपजाऊ भाग जो ऊपरी परत के रूप में जाना जाता है संरक्षित रहता है। हवा की शुद्धता, शीतल इन्हीं पेड़ पौधों और वृक्ष होती है। वृक्ष ही वर्षा के होने या न होने के लिये जिम्मेदार है। जहाॅ-जहाॅ वृक्षों व वनों को असीमित रूप से काट दिया गया है वहाॅ वर्षा होना ही रूक गयी है, ये वर्षा ही फसल के लिये आवश्यक है इससे मनुष्य जीवित रहता है। वातावरण की अस्वच्छ हवा को शुद्घ करने का काम भी प्रकृति के ये वन ही करते है, यदि निजी स्तर पर भी प्रत्येक व्यक्ति प्रदूषण कम करने पर कन्धे से कन्धा मिलाकर संकल्प ले ले कि वह न प्रदूषण फैलाया न ही किसी को फैलाने देगा तो पर्यावरण के लिये वरदान होगा ये संकल्प आज सभी के लेने कि आवश्यकता है।

देखा जाये तो सदियों से हमारे पूर्वजों के प्रयासों से प्रकृति से उनकी घनिष्ठता रही है ओर वे प्रकृति को संतुलित पर्यावरण कायम रखे जाने हेतु सभी प्राणियों के समुचित विकास के लिये पर्याप्त प्राकृतिक संसाधन...शुद्ध, जल, वायु, भौतिक सुख सुविधा सम्पन्न जैवित गुणों से युक्त धरती, वन सम्पना आदि प्रकृति की ऐसी देने है अग्रणी रहे है ताकि इनसे यह धरती प्राणियों के रहने योग्य बनी रही । जब तक मनुष्य ने प्रकृति के साथ कोई छेड़छाड़ नहीं की तब तक यह वसुंधरा भी स्वर्गादपि गरीयसी बनी रही लेकिन जैसे ही मनुष्य ने प्राकृतिक संसाधनों का अविवेक शील दोहन करना प्रारम्भ किया। विकास के नाम पर प्रकृति से छेड़छाड़ प्रारम्भ की। आर्थिक और सामाजिक वर्जनाओं की उपेक्षा की उसी समय से विनाश प्रारम्भ हो गया सच तो यह है कि जलवायु अथवा भूमि के भौतिक गुणों को हानि पहुचाने वाले प्रयासों ने ही पर्यावरण को सबसे अधिक प्रदूषित किया है ओर आज प्रगति और विकास के नाम पर हमने जिस प्रकृति का विनाश कर उसके दुष्परिणाम का स्वाद अति वृष्टि, अतिगर्मी, अतिसर्दी अर्थात मौसम के चक्र को बदल इंसानियत को नष्ट करने के लिए कहीं भूकम्प तो कहीं विनाशकारी बाढ़, कहीं भयानक सूखे तो कहीं कैंसर और कही कोरोना जैसे जान लेवा रोगों को आमंत्रित कर मनुष्यता पर गहरा संकट खड़ा कर लाखों जीवनहंता बने हुये है।

आज भारत ही नहीं अपितु समूचा विश्व अरबों रुपए प्रकृति को प्रदूषण से बचाने के लिये खर्च कर अपने अपने देश के वायुमण्डल में आक्सीजन व कार्बनडायआक्साइड का संतुलन बनाने जुटे है ताकि आज की बढ़ती जनसॅख्या के कारण जल, वायु इत्यादि समस्त प्राकृतिक संसाधनों की कमी से निपटते हुये प्रकृति को बचाया जा सके। सरकारे प्रतिदिन वृक्षारोपण के साथ हर जिलों में करोड़ों पौधे लगाने की आवश्यकता पर काम कर रही है, हमारे नर्मदापुरम संभाग में भी 7 करोड़ पौधरोपन हौआ किन्तु वह जमीन पर दिखा नहींम संभवतया आपके जिले में प्रदेश में भी यही परिणाम रहे हो या धरती के प्रति आपकी निष्ठा ने ईमानदारी रही हो तो आपके यहा की धरती अवश्य ही हरे-भरे वृक्षों से लहलहा रही हो। जिस प्रकार बूंद-बूंद से एक घड़ा भर जाता है उसी प्रकार यदि प्रत्येक मनुष्य अपने सम्पूर्ण जीवन में एक वृक्ष लगाने तथा उसे बड़ा होने तक सुरक्षित रखने का कार्य करे तो सरकारी खजाने से इस अपव्यय को रोका जाकर उसे मानवीय मूल्यों से जोड़ा जाकर पर्यावरण के साथ प्रकृति के उपकार के बदले मिलने वाली आक्सीजन का ऋण चुकाया जा सकता है ओर आपका यह प्रयास पृथ्वी को हरा भरा रखने के लिये पर्याप्त तो होगा ही वही होली जैसे पर्वों पर इनसे बचाव कर लकड़ी के स्थान पर कंडों/ गाय के गोबर के उपलों को होली जलाकर पेड़ों को जीवन दिया जा सकता है।

आधुनिकता के नाम पर हम सुविधा के जिस यांत्रिक व्यवस्था के गुलाम हो गए है वे सभी डीजल-पेट्रोल व गैस जैसे ईधनों से चलने वाले साधन है। वाहनों से कार्बनडाय आक्साइड, सल्फर डायआक्साइड, नाईट्रोजन कार्बनमोनो आक्साइड जैसी विषेली गैसे इन्डस्ट्रीज से निकलने वाला जहरीला प्रदूषण और ऊपर से ईंधन व अन्य सूक्ष्म लाभों के लिये मनुष्य हरे-भरे जंगलों को अंधा होकर काटता चला जा रहा है, परिणाम ये है कि प्रकृति का तापमान सामान्य से अधिक होता जा रहा है और बाढ़सूखा, भूचाल जेसे अप्राकृतिक घटनायें इस प्रकार घटित होती है कि मानों प्रकृति अपना क्रोध प्रकट कर रही हो और लाखों करोड़ों की सॅख्या में मनुष्य काल ग्रस्त हो रहे है, भुज का भयंकर भूचाल उत्तराचंल केदारनाथ की बाढ़, सहित आने वाली कई सुनामी जिससे शहर के शहर तबाह हो गए ओर यह विनाश साल दर साल समूचे देश के किसी न किसी शहर की आपदा के रूप में दिख रहा है, मुंबई बाढ़ की चपेट में विनाश के लिए मिटने को तत्पर है वही देश के हर प्रदेश में इस प्रकार के हालत देखे जा सकते है, रही सही कसर को भूकम्प की विभीषिका नष्ट कर प्रकृति से मानव की छेड़छाड़ की चेतावनी है। हम भूल गए है की प्रकृति का अत्यधिक दोहन का ही परिणाम है कि धुरवों पर तापमान में वृद्घि के कारण बर्फ का पिघलना, प्राकृतिक संसाधनों को एक सीमा से अधिक दोहन प्रकृति के अस्तित्व को चुनौती देने का ही भयंकर परिणाम हमारे सामने आ रहे है किन्तु मनुष्यता ने अपने नेत्र बंद कर लिए है ओर जो दिखता है वह खुद के लिए नहीं अपितु जो मनुष्य उसका शिकार हो रहे है, उसके लिए मानकर खुद कल्पना लोक के उबर नहीं पा रहे है।

भारतीय कानून इस पर्यावरण हेतु पूरी तरह सजग है। तरह-तरह के आवश्यक कानून समय-समय पर भारतीय सरकार पारित कर ही रही है। वन अधिनियम एक हरे-भरे वृक्ष को काटने पर उसी प्रकार दंडित करता है जैसे चोरी -डकैती या अन्य आपराधिक कृत्यों पर भारतीय दण्ड संहिता दंडित करती है आज डीजल वाहनों पर प्रतिबंध पर्यावरण सुरक्षा के लिये उठाये गये सुरक्षात्मक नियम ही है, आज समस्त दिल्ली में डीजल जैसे ईंधन से निष्कासित प्रदूषण को रोकने के लिये भारतीय उच्च न्यायालय ने स्वयं हस्तक्षेप किया है और निर्देशित किया है कि कम प्रदूषण वाले ईंधन का प्रयोग वाहनों को चलाने के लिये इस्तेमाल किया जाये, परिणाम सामने आने लगा है, आज दिल्ली में प्रदूषण स्तर में अत्याधिक चौकाने वाली गिरावट आयी है। जब-जब मानव जाति एक सीमा से निकल कर अपने स्वार्थ के लिये प्रकृति का अत्याधिक दोहन करती है प्रकृति रोष पकट करती हे, भयंकर महामारी, प्राकृतिक आपदाओं के रूप में मनुष्य को उसका खामियाजा भुगतना पड़ता है। प्रदूषण अधिनियम भी पर्यावरण की सुरक्षा दृष्टि से ही जारी किया गया है जिसके अन्र्तगत यदि कोई भी व्यक्ति अपने किसी कृत्य से प्रदूषण का स्तर मानक स्तर से अधिक फैलाता है उसके विरूद्घ दण्डात्मक प्रावधान है, उसे न केवल आर्थिक बल्कि शारीरिक दण्डात्मक प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है किन्तु राजनैतिक परिपक्ता ने ये सारे कानून किताबों में सीमित कर रखे है ओर इनके पालन कि सीमाये विभागीय अधिकारियों कर्मचारियों के लिए दूध देने वाली कपिला गाय है जिसका वे वही उपयोग करते है जहा उनकी पाकेट मनी बढ़े शेष स्थानों पर ये अनुपयोगी ही है।

अति सर्वत्र वर्जयेत अर्थात अति प्रत्येक चीज को बुरी होती है, अप्राकृतिक घटनायें एक चुनौती है, मानव जाति के लिये एक सन्देश छोड़ जाती है कि कुछ कर्तव्य हमारे भी है इस प्रकृति के लिये आओं हम सब मिलकर इस पृथ्वी को हरा भरा बनाये, जहाॅ तक सम्भव हो अपने निजी स्तर पर प्रदूषण में कमी लाये सरकार द्वारा समय समय पर जारी कानूनों का पालन करें, मान्यता प्रदान करें तथा ठीक से पालन न करने वाले प्रत्येक व्यक्ति समाज में वह चाहे कितने भी बड़े ओहदे पर आसीन हो उसको भी उसका कर्तव्य याद दिलाये यदि फिर भी वह नहीं मानता है तो उसे कानून की अवहेलना करने पर उसके विरूद्घ दण्डात्मक कार्यवाही करने से भी न हिचकें तभी हम सच्चे मायने में इस धरती पर प्रकृति को सुरक्षा कवच दे कर उसकी रक्षा कर सकेंगे ओर होली या अन्य किसी भी परंपरागत पर्व पर वृक्षों कि आहुती पर पूर्णविराम दे सकेंगे।

आत्माराम यादव पीव वरिष्ठ पत्रकार
नर्मदापुरम मध्यप्रदेश

हीरे-मोती

कोलफील्ड मिरर 05 मार्च 2025: हमारे जीवन में कुछ अन्तर की गंभीरता से निकले वचन इस कदर सबका मन छू लेते हैं कि वें हीरे-मोती से भी कीमती धन बन जाते हैं। जैसे- रिश्ते-नाते, धन दौलत तो हमारा साथ छोड़ सकते पर इज्जत सदा साथ में हमारे वफादारी निभाती हैं। वह कभी सिर को शर्म से झुकने नही देती हैं। इसमे अलग ही तरह की खुशबू होती हैं जो जीवन बगिया को महकाये रखती हैं। पैसा कमाना तो आसान हैं पर इज्जत कमाना आसान नहीं हैं। हमें जीवन को सद्‌गुणो से भरना पड़ता है। प्राण जाये पर वचन न जाये, रखुकुल रीत पुरानी। प्राण भी गवाने पड़ सकते है। हर बड़ी से बड़ी मुसीबत में भी समता व साहस से इज्जत को बनाये रखने का जजबा रखना पड़ता है। सदभावना और निडरता के पानी मे इज्जत जिन्दा रह्ती है। जिन्दगी मे परोपकार और भलाई इज्जत को अमर बना देती है। इन्सान मर जाता है पर उसकी इज्जत सदा जिन्दा रह्ती है। तभी तो कहा हैं कि व्यापार हो या आपसी व्यवहार उन्हीं लोगों से रखना चाहिए जिनके दिल में जान से ज्यादा जुबान का सरोकार हो। स्वयं के दोष देखे बिना जीवन में कल्याण नहीं होता है। हमें दूसरों के दोष नहीं देखना चाहिए बल्कि स्वयं के दोष पर ध्यान देना चाहिए अपनी गलती कमी को स्वीकार किए बिना सफलता के शिखर पर पहुंच नहीं सकते हैं। हमारी दृष्टिभाव में दोष है तो पहले उसे दूर करना होगा तभी सफलता मिल सकती है। अतः जिस प्रकार सूई छेद करती है पर सूत अपने शरीर का अंश दे कर भी उस छेद को भर देता है, उसी प्रकार हमें भी दूसरों के छिद्रों (अवगुणों) को भर देने अर्थात् ख़त्म कर देने के लिए अपना सर्वस्व अर्पण कर देना चाहिए। क्योंकि अंतचक्षुओं के आधार से हम अंतर में आलोकित हो सकते हैं। अतः खुद का MINUS POINT जान लेना ही हमारी जिन्दगी का सबसे बड़ा PLUS POINT हैं।

प्रदीप छाजेड़
बोरावड़

यूक्रेन जंग मुद्दे पर 15 यूरोपियन देशों की लंदन में डिफेंस सम्मिट-नाटो तुर्की यूरोपीय यूनियन के प्रेसिडेंट शामिल!

डोनाल्ड ट्रंप बनाम यूरोपीय यूनियन

कोलफील्ड मिरर 05 मार्च (गोंदिया): वैश्विक स्तरपर दुनियाँ का हर देश यह महसूस कर रहा है कि अमेरिका में ट्रंप शासन आने के बाद दुनियाँ की परिस्थितियों में परिवर्तन हो रही है, ट्रंप के अमेरिकी फर्स्ट के विज़न के कारण ट्रंप तेजी से ऐसी परिस्थितियां लाने को आतुर हैं, ताकि अमेरिका की आर्थिक स्थिति मजबूत हो, अर्थव्यवस्था सुदृढ़ हो, यूक्रेन की खनिज में हिस्सेदारी तथा रूस के साथ दोस्ती की पींगे बढ़ाना, व्हाइट हाउस में ट्रंप जेलेंस्की विवाद इत्यादि इसी का ही एक हिस्सा माना जा सकता है, तो उधर 27 देश का संगठन यूरोपीय यूनियन, नाटो, तुर्की इत्यादि पूरी स्थिति को समझ रहे हैं, क्योंकि ईयू को पूरी प्रक्रिया में अलग- थलग किया जा रहा है, नतीजा यह है कि शुक्रवार 28 फरवरी 2025 को व्हाइट हाउस में ज़ेलेंसकी व ट्रंप की गहमाग़हमी के बाद जैलेंसकी जब सीधे ब्रिटेन लंदन पहुंचे तो उन्हें हाथों-हाथ लिया गया, ईयू नाटो तुर्की उसके साथ खड़े दिखे जबकि दो अन्य देश विरोध कर रहे थे। लंदन में यूरोपीय यूनियन देशों का यूक्रेन जंग मुद्दे पर डिफेंस समिट हुआ, जिसमें यूक्रेन की मदद की बात कीगई व अमेरिका को युद्ध समझौता प्लान देने पर बातचीत हुई। संयोगवश उसी दौरान यूरोपीय यूनियनकी अध्यक्ष 27-28 फरवरी 2025 को भारत दौरे पर थी, जहां विदेश मंत्री व पीएम से सफल चर्चा के बाद रूस ने तंज कसा कि यूरोप भारत की शरण में जा रहा है, यानें भारत का रुतबा बढ़ता हुआ दिखाई दे रहा है, ऐसा मेरा मानना है, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, ट्रंप बनाम यूरोपीय यूनियन, यूरोपीय देशों में मतभेदों के बीच यूरोपीय यूनियन अध्यक्ष भारत के साथ पींगे बढ़ाने को आतुर? रूस का तंज, भारत की शरण में पूरा यूरोप? जिससे भारत की अहम भूमिका हो गई है।

साथियों बात अगर हम यूरोपीय यूनियन के चर्चा में आने व यूक्रेन को समर्थन करने की करें तो जेलेंस्की के सपोर्ट में कई यूरोपीय देश यूरोप के कई नेताओं ने जेलेंस्की के लिए अपना समर्थन जताया है। नॉर्वे, नीदरलैंड, पोलैंड, यूरोपीय यूनियन, जर्मनी, ब्रिटेन जैसे यूरोपीय देशों के अलावा कनाडा और ऑस्ट्रेलिया ने भी जेलेंस्की के लिए समर्थन जताया।जेलेंस्की शुक्रवार को अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प से मिलने व्हाइट हाउस पहुंचे थे। जहां दोनों के बीच तीखी बहस हो गई। ट्रम्प-वेंस और जेलेंस्की एक-दूसरे की तरफ उंगली दिखाते नजर आए। ट्रम्प ने कई बार जेलेंस्की को फटकार भी लगाई। उन्होंने कहा कि वो तीसरा विश्वयुद्ध कराने का जुआ खेल रहे हैं।जेलेंस्की ने कहा कि जब आप युद्ध में होते हो, तो सबके साथ परेशानियां होती हैं।भविष्य में इस युद्ध का असर अमेरिका पर भी पड़ेगा। ट्रम्प यह सुनकर झुंझला गए और उन्होंने कहा कि हमें मत बताइए कि हमें क्या महसूस करना चाहिए। यूक्रेन जंग के मुद्दे पर यूरोपीय देशों की डिफेंस समिट लंदन में हुई, इस बैठक में 15 देशों के राष्ट्र प्रमुख, तुर्की के विदेश मंत्री, नाटो के महासचिव, यूरोपीय संघ और यूरोपीय काउंसिल के प्रेसिडेंट शामिल हुए। ब्रिटिश पीएम ने गले लगाकर जेलेंस्की का स्वागत किया ब्रिटिश पीएम कीर स्टार्मर ने दो बार यूक्रेनी राष्ट्रपति को गले लगाया। सबसे पहले उन्होंने जेलेंस्की के लंदन पहुंचने पर गले लगाकर उनका स्वागत किया, फिर डिफेंस समिट में जेलेंस्की के पहुंचने पर दूसरी बार गले लगाया।इससे पहले जब जेलेंस्की शनिवार को इंग्लैंड पहुंचे तो सड़कों पर लोगों ने जेलेंस्की के सपोर्ट में जोरदार नारे लगाए। स्टार्मर ने उन्हें रिसीव किया और कहा कि आपको पूरे ब्रिटेन का सपोर्ट हासिल है। हम आपके और यूक्रेन के साथ खड़े हैं, भले ही इसमें कितना भी वक्त क्यों न लग जाए। जेलेंस्की ने इस सपोर्ट के लिए उनका शुक्रिया अदा किया। यूक्रेन के सपोर्ट के मुद्दे पर यूरोपियन यूनियन के अंदर भी दरार नजर आ रही है। स्लोवाकिया के पीएम रॉबर्ट फिको का कहना है कि वो यूक्रेन को आर्थिक और सैन्य तौर पर मदद नहीं देंगे। यूक्रेन कभी भी सैन्य ताकत के दम पर रूस को बातचीत के टेबल पर नहीं ला पाएगा। इससे पहले हंगरी के प्रधानमंत्री विक्टर ओरबान ने भी जेलेंस्की के खिलाफ अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प का सपोर्ट किया है। व्हाइट हाउस में दोनों के बीच हुई बहस के बाद उन्होंने ट्रम्प को मजबूत और जेलेंस्की को कमजोर कहा था। उन्होंने ट्रम्प का धन्यवाद भी किया था। ब्रिटेन ने यूक्रेन को 24 हजार करोड़ का लोन दिया। इसके लिए शनिवार को ब्रिटिश पीएम स्टार्मर और यूक्रेनी राष्ट्रपति जेलेंस्की ने समझौते पर साइन किए|

साथियों बात अगर हम व्हाइट हाउस में ट्रंप से गहमाग़हमी के बाद जैलेंसकी सीधे लंदन यात्रा पर पहुंचने की करें तो पीएम स्टार्मरनें कहा हमारी कोशिश यूक्रेन को मजबूत स्थिति में लाना है। हम यूक्रेन के लिए अपना समर्थन दोगुना कर रहे हैं। स्टार्मर ने कहा कि समिट में शामिल नेताओं ने यूक्रेन के लिए सैन्य सहायता जारी रखने और रूस पर आर्थिक दबाव बढ़ाने पर सहमति जाहिर की है। किसी भी शांति वार्ता में यूक्रेन को शामिल किया जाना चाहिए। स्टार्मर का कहना है कि किसी भी समझौते में रूस को शामिल करना जरूरी होगा, लेकिन रूस ने इससे पहले कई बार समझौतों का उल्लंघन किया है, ऐसे में हमें यह तय करना होगा कि यूक्रेन को दी जाने वाली गारंटी पर कोई असर नहीं पड़ना चाहिए। आगे के संघर्ष से बचने के लिए गारंटी की जरूरत है। इस बैठक से पहले स्टार्मर ने कहा था कि ब्रिटेन, फ्रांस और यूक्रेन मिलकर रूस-यूक्रेन जंग को रोकने के प्लान पर काम करने के लिए राजी हुए हैं। ये प्लान अमेरिका के सामने रखा जाएगा। उन्होंने कहा कि ये प्लान तभी काम करेगा जब अमेरिका अपनी सुरक्षा गारंटी पर टिका रहेगा।

साथियों बात अगर हम यूक्रेन जंग मुद्दे पर हुए डिफेंस समिट में अन्य देशों की प्रतिक्रिया की करें तो, बैठक के बाद किसने क्या कहा, (1) उर्सुला वॉन डेर लेयेन: यूरोपीय कमीशन की अध्यक्ष ने कहा कि हमें यूरोप को तत्काल हथियारबंद करना होगा। हमें डिफेंस निवेश बढ़ाना होगा। यह यूरोपीय यूनियन की सुरक्षा के लिए जरूरी है। हमें फिलहाल सबसे खराब हालात के लिए तैयार रहना चाहिए। इसे लेकर 6 मार्च को यूरोपीय परिषद में एक प्रस्ताव पेश किया जाएगा। (2) मार्क रूटे: नाटो के महासचिव ने कहा कि यूरोपीय देश सुरक्षा के लिए खर्च और यूक्रेन को सपोर्ट बढ़ाने के लिए कदम उठाएंगे। अभी तक कोई शांति समझौता नहीं हुआ है, लेकिन हमें इसके लिए तैयार रहना होगा और यह तय करना होगा कि यूरोपीय देश सुरक्षा गारंटी के साथ मदद करने के लिए तैयार हैं। (3) डोनाल्ड टस्क: पोलैंड के राष्ट्रपति ने कहा कि 'यूरोप जाग गया है' और अब यूक्रेन के लिए समर्थन और यूरोपीय यूनियन के ईस्ट बॉर्डर को मजबूत करने पर एक स्वर में बोल रहा है। (4) ओलाफ शोल्ज: जर्मन चांसलर ने कहा कि आज की बैठक काफी महत्वपूर्ण थी। यह रूसी हमले से जूझ रहे यूक्रेन के लिए यूरोप का समर्थन जाहिर करने का मौका था।

साथियों बात अगर हम ट्रंप के जंग से दूर रहने की करें तो, अमेरिकी राष्ट्रपति ने साफ कर दिया है कि अगर कोई जंग छिड़ती है तो इससे अमेरिका दूर रहेगा। अब बड़ा सवाल उठता है कि यूक्रेन तो रूस से युद्ध लड़ नहीं पाएगा, तो फिर क्या यूरोपीय देश रूस से सीधा जंग लड़ेंगे। राष्ट्रपति ट्रंप ने जेलेंस्की से मुलाकात से पहले यूरोप का प्रतिनिधित्व करने आए ब्रिटेन के प्राइम मिनिस्टर कीर स्टार्मर से भी मुलाकात की थी।डोनाल्ड ट्रंप ने कहा था कि पूरे यूरोप की रूस के साथ जंग छिड़ने जा रही है और उसका सेंटर पॉइंट यूक्रेन बनेगा। वहीं इससे पहले उन्होंने फ्रांस के राष्ट्रपति इमानुएल मैक्रों से भी मुलाकात की थी। इस दौरान भी दोनों नेता सहज स्थिति में नहीं थे। अमेरिका के युद्ध से पीछे हटने के बाद जेलेंस्की जंग में अकेले पड़ गए हैं। ऐसे में यूरोपियन यूनियन के देशों को साथ आना पड़ेगा। इसके लिए उन्हें सबसे पहले यूक्रेन को सुरक्षा की गारंटी देनी होगी। हालांकि संभावना यह भी है कि अगर वह यूक्रेन को सुरक्षा की गारंटी देने पर सहमत होते हैं तो रूस यूरोपीय देशों पर हमले शुरू कर सकता है।

साथियों बात अगर हम यूरोपियन यूनियन की अध्यक्ष की 27-28 फ़रवरी 2025 को भारत यात्रा की करें तो, उनके इस यात्रा के में उनके साथ यूरोपीय संघ के कमिशनर के समूह भी थे। यह यूरोपीय संघ के कमिशनर के समूह की भारत की पहली यात्रा थी और उर्सुला वॉन डेर लेयेन की भारत की तीसरी यात्रा थी। यूरोपीय संघ के कमिशनर के समूह, 27 सदस्य वाली यूरोपीय संघ (ईयू) के देशों के आयुक्तों से बना है। यह पहली बार था कि यूरोपीय संघ के कमिशनर के समूह, यूरोप के बाहर का दौरा कर रहे थे। ईयू अध्यक्ष भारत यात्रा के दौरान, भारत-यूरोपीय संघ व्यापार और प्रौद्योगिकी परिषद की दूसरी मंत्रिस्तरीय बैठक भी नई दिल्ली में आयोजित की गई थी।ईयूअध्यक्षा ने नई दिल्ली में पीएम के साथ बैठक की और द्विपक्षीय मुद्दों पर चर्चा की। मुलाकात के बाद दोनों नेताओं ने एक संयुक्त बयान जारी किया। संयुक्त वक्तव्य की मुख्य बिन्दु:. (1) भारत और यूरोपीय संघ 2025 में पारस्परिक रूप से लाभकारी मुक्त व्यापार समझौते को अंतिम रूप देंगे। (2) दोनों, स्वच्छ ऊर्जा और जलवायु, जल,स्मार्ट और टिकाऊ शहरीकरण, कनेक्टिविटी और आपदा प्रबंधन के क्षेत्रों में सहयोग का विस्तार और गहरा करने पर सहमत। (3)दोनों स्वच्छ हाइड्रोजन, सौर ऊर्जा, अपतटीय पवन, टिकाऊ शहरी गतिशीलता, विमानन और रेलवे जैसे विशिष्ट क्षेत्रों में सहयोग तेज करने पर सहमत। (4) दोनों भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारे (आईएमईसी) को साकार करने के लिए कदम उठाएंगे। (5)आईएमईसी को 2023 में नई दिल्ली में जी-20 शिखर सम्मेलन की बैठक के दौरान प्रस्तावित किया गया था। इसका उद्देश्य संयुक्त अरब अमीरात और सऊदी अरब के माध्यम से यूरोपीय संघ के देशों को भारत से जोड़ना है। (6) कॉरिडोर में दो परियोजनाएं हैं: भारत और खाड़ी देशों के बीच एक पूर्वी समुद्री लिंक और अरब प्रायद्वीप को यूरोप से जोड़ने वाला एक उत्तरी खंड।भारत-ईयू व्यापार और प्रौद्योगिकी परिषद (टीटीसी) की दूसरी बैठक 28 फरवरी 2025 को नई दिल्ली में आयोजित की गई। दोनों देशों के प्रतिनिधि ने इस बैठक की सह-अध्यक्षता की।टीटीसी के बारे में (1) इसकी स्थापना अप्रैल 2022 में पीएम और यूरोपीय आयोग के अध्यक्ष द्वारा की गई थी।(2) यह व्यापार, विश्वसनीय प्रौद्योगिकी और सुरक्षा से संबंधित मुद्दों पर चर्चा करने के लिए मुख्य द्विपक्षीय मंच है। (3) पहली बैठक मई 2023 में ब्रुसेल्स में आयोजित की गई थी।भारत और यूरोपीय संघ के संबंध यूरोपियन यूनियन (ईयू) 27 यूरोपियन देशों का एक समूह है। (1) भारत और यूरोपीय संघ ने 2004 में अपने संबंधों को रणनीतिक साझेदारी तक बढ़ाने पर सहमत हुए। (2) यूरोपीय संघ भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है। (3) 2023 में दोनों के बीच कुल व्यापार 124 बिलियन यूरो 2023 था। (4) संयुक्त राज्य अमेरिका के बाद यूरोपीय संघ भारत के लिए दूसरा सबसे बड़ा निर्यात बाजार है। (5) भारत,ईयू का 9वां सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है।(6) पिछले दशक में ईयू और भारत के बीच वस्तुओं का व्यापार लगभग 90पेर्सेंट बढ़ गया है। (7) 2023 में, ईयू और भारत के बीच सेवाओं का व्यापार 59.7 बिलियन यूरो था। (8)भारत में लगभग 6,000 यूरोपीय कंपनियाँ मौजूद हैं।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि ट्रंप बनाम यूरोपीय यूनियन। यूक्रेन जंग मुद्दे पर 15 यूरोपियन देशों की लंदन में डिफेंस सम्मिट-नाटो तुर्की यूरोपीय यूनियन के प्रेसिडेंट शामिल!ट्रंप-यूरोप में मतभेदों के बीच, यूरोपीय यूनियन अध्यक्ष भारत के साथ पींगे बनाने को आतुर? रूस का तंज भारत की शरण में पूरा यूरोप? भारत की अहम भूमिका!

-संकलनकर्ता लेखक-
क़र विशेषज्ञ स्तंभकार साहित्यकार
एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं
गोंदिया महाराष्ट्र

ख्वाब हमको आज ऐसा आया है

ख्वाब हमको आज ऐसा आया है।
जीवनसाथी हमने जिसमें पाया है।।
ख्वाब हमको आज-----।।

उससे मिलन हमारा, कैसे हुआ।
किसने की थी यारों, ऐसी दुहा।।
हमको ऐसी खबर पहले नहीं थी।
क्यों उसने आकर, हमको छुआ।।
हमने अहसास आज ऐसा पाया है।
कोई चेहरा आज हमको भाया है।।
ख्वाब हमको आज-----।।

उसकी नजरें बहुत, मदहोश थी।
कमसीन थी वह, माहताब थी।।
उसने रोशन किया, दिले-चिराग।
किसी चमन की वह, बहार थी।।
नशा दिल में जो उसका छाया है।
कोई मेहबूब आज हमने पाया है।।
ख्वाब हमको आज-----।।

हमको जरूरत नहीं, किसी और की।
वह दुल्हन हमारी है, जीवनभर की।।
हम निभायेंगे मिलकर, सातों वचन।
वह तस्वीर है, मेरी तकदीर की।।
वादा उसने भी हमसे किया है।
हमने भी दिल, उससे लगाया है।।
ख्वाब हमको आज-----।।

गुरुदीन वर्मा ऊर्फ़ जी.आज़ाद
बारां (राजस्थान)
कोलफील्ड मिरर

रंग सुर्ख धूप सुनहरी तुम केसरिया से लगते हो

पलास तुम मन भावन से कितने सुंदर लगते हो।
प्यारी आभा तुम्हारी धीरे धीरे तुम सज जाते हो।
देख के तुम को मन मेरा खुश हो जाता इठलाता है।
महका महका वन सारा दुल्हन से तुम लगते हो ।
रंग सुर्ख धूप सुनहरी तुम केसरिया से लगते हो।
पतझड़ आते ही धरा पर रंग कैसा बिखरते हो।
वन सारा ही झुक झुक कर तुम्हें प्रणाम करे है।
मदिरा से, मदहोश हुए तुम,राजा से बन जाते हो।
चुनरी लाल रंग की ओढ़े मंद मंद तुम मुस्काते हो।
आया पतझड़ बीत चला भी, कोंपले अब नई नई सी।
बसंत तुम आए डाल डाल पर फुल पलास सजे हैं।
देखें तुमको छू लें तुम को, संवेदनाएं नई जगाते हो।
देह देह अब पुलकित,सी मुस्कती,जैसे के मकरंद।
पराकाष्ठा प्रेम की क्या है, मालूम नहीं हमें मुश्ताक।
हंसी, पलास देखकर, आंखें मूंदे प्रीतम में खो जाते हो।

मुश्ताक अहमद शाह
कोलफील्ड मिरर

एक नई दोस्त

एक नई दोस्त मिली है मुझे,
मन में हलचल सी हो रही है मुझे,
सुरज की किरणों सी खिला चेहरा,
हर बात में कुछ खास सी हुई है मुझे।

उसकी हंसी में एक खास मिठास भरी है,
आँखों में एक गहरी सुन्दर सी अनकही बात,
हर पल हर दिन जैसे नई ऊर्जा देती देती हो तुम,
संग जीवन भर दोस्ती निभाने का एक ख्वाब हो तुम।

चाहे खामोशी हो या किसी बातों का रेला,
हम दोनों की नजदीकी बढ़ती चली जाए हमेशा,
नई दोस्ती का हर रंग है प्यारा मनमोहक हो जाए,
इसी में तो असली ख़ुशी अनमोल उमंग समाई है यहाँ।

उसका बेपनाह साथ मिलने से,
सपने और सोच हकीकत मे बदलते है ,
सबकुछ हो गया और भी आसान हो जाते,
ऐसी दोस्ती तो होती है खास जीवन मे सबके।

साथ चलें हम, हाथ मे हाथ डाले मुस्कुराते हुए,
नई राहों में महकती खुशियाँ यहाँ, नए ख्वाबों संग,
दोस्ती का ये प्यारा सफर, एक संसार बनाने हमदोनों
यादों में हमेशा रहेगा साथ, ये सतरंगी रंग, पल अरमान।

रूपेश कुमार
चैनपुर, सीवान, बिहार
कोलफील्ड मिरर

प्रकृति के रूप अनेक

है सजीव यह प्रकृति सारी,
रंग-बिरंगी, न्यारी-न्यारी।
कहीं बहे मंद मंद बयार,
कहीं दिखे हरियाली अपार।

सूरज तपे, चमके दिनभर,
चाँद करे फिर रात असर।
तारों की झिलमिल रोशनी,
छटा बिखरे चांदनी ।

सागर की उठती हैं लहरें,
पहाड़ों गाती है गजलें ।

नदियाँ का वह कल-कल धार, व
न में कोयल गए गीत मल्हार।

फूलों में खुशबू बसती ,
भंवरों की गुंजन हंसती ।
हर रूप में संजीवनी शक्ति,
प्रकृति की अनुपम यह भक्ति।

संभालो इसको, रखो ध्यान,
हरियाली से जीवन संधान।
सुनो धरा की मूक पुकार,
संरक्षण से करो जीवन नौका पार।

कमलेश झा
नगरपारा भागलपुर बिहार
कोलफील्ड मिरर

मौसम में वैश्विक परिवर्तन

मौसम में यह कैसा परिवर्तन आ गया
फरवरी माह में आम पर बौर छा गया
सर्दी में ही पानी के लिए हो रही त्राहिमाम
सर्दियों का भी अंत जैसे आ गया

दिसम्बर जनवरी में सूखे ने अपना रंग दिखाया
बारिश ने भी बेरुखी का रास्ता जैसे अपनाया
बर्फ भी पहाड़ों से खेल रही है आंख मिचौली
प्रकृति ने मानव पर जैसे अपना तीर हो चलाया

क्यों बदल रहा है मौसम कैसे हो रहा परिवर्तन
क्या कारण है कैसे हो रहा ग्लेशियरों का ह्रास
प्रकृति को छेड़ कर फिर भी नहीं मान रहा मानव
कर रहा उसको मिटाने के उलटे सीधे प्रयास

कुदरत का आज तक कौन कर पाया सामना
आंखें जब जब तरेरी तब तब पड़ा फिर हाथ थामना
प्रकृति के बनाये नियमों की धज्जियां उड़ा रहा
पहाड़ों जंगलों को मिटाने की कर रहा कामना

कुदरत ने संसार का एक संतुलन है बनाया
कहीं मैदान जंगल पेड़ पौधों वनस्पति से सजाया
बर्फ से ढके पहाड़ है बनाये जो सबको देते हैं पानी
बिगड़ा संतुलन इनका तब वैश्विक परिवर्तन है आया

प्रकृति से मत उलझ मत कर इतना गुमान
खुद तबाह हो जाएगा जो किया प्रकृति का अपमान
किसी में इतनी ताकत नहीं जो कर सके इसका मुकाबला
फिर भी कर रहा तू अपना गुणगान

रवींद्र कुमार शर्मा
बिलासपुर हि प्र
कोलफील्ड मिरर

खूब करो तैयारी

निकट परीक्षा आ गई
चलो करें तैयारी
होंगे सफल जरूर हम
है अपनी अब बारी..।।

दृढ़ संकल्प चलो कर लें हम
अब भयभीत नहीं होना है
साहस संबल से जीतेंगे
देखे दुनिया सारी..।।

परीक्षाएं आधारशिला हैं
उज्ज्वल भविष्य निर्माण की
परिश्रम से मिलती सहज
आतीं खुशियां सारी..।।

हार-जीत और जीत-हार सब
जीवन को संबल देता है
तुम बस लक्ष्य बनाकर अपना
खूब करो तैयारी..।।
खूब करो तैयारी..।।

विजय कनौजिया
कोलफील्ड मिरर

गजल

जो छपी तस्वीर तेरी आज के अखबार में।
बस यही चरचा चली है इश्क के दरबार में।।

चांद की मूरत दिखी तुम प्यार के इकरार में।
रौशनी बन छा गई खुद प्यार के इक प्यार में।

देखकर सूरत भली वो प्यार आया आप ही
इश्क में दिल हाल लिखते प्यार के संसार में।

सोच ता हूं आज मैं उसको बसा लूं आंख में
फस गया हूं आज मैं आकाश के मझधार में।

जब बही है प्यार की गंगा नहाने हम चले
डूब कर हम पार करना साथ चाहें प्यार में।

लाव लश्कर साथ लेके रोज निकले याद के
हम मिलेगे यार उनको प्यार के असरार में।

कर दिया वादा जिएंगे हम मरेंगे साथ ही
फिर रहेंगे यार कैसे आप बिन सरकार में।

देर करदी आपने "केयल" छपी है जो खबर
इक अधूरी बात छपती हैं सजन भिनसार में।

के एल महोबिया
मध्यप्रदेश
कोलफील्ड मिरर

प्रतिभा भरी हुई

कोलफील्ड मिरर 05 मार्च 2025: तुमने जानबूझकर पूछा है या जानने के लिए पूछा है? पुलिस या पुलिस का क्रोध न जानने वाला कोई बचा है? बच्चे से भी पूछोगे तो वह बता देगा।

क्या बता देगा यही कि कुछ पुलिस वाले बहुत मारते हैं।

क्या सभी को मारते हैं?

बचपन में जब खाना नहीं खाते थे मां डराती थी कि पुलिस को बुलाऊंगी और शरारत करने पर पुलिस उठाकर ले जाती है, पुलिस भूत आएगा इस तरह।

ये सारी बातें तो मां, नानी दादी की हैं। अब तो तुमने बहुत कुछ सीखा होगा, उसके बारे में बताओ।

अब उसके बारे में क्या बताना। कुछ पुलिस वालों को आगा पीछा देखे बिना हर एक को अबे कहकर बुलाने की विशेष भाषा अधिकार होता है। बिना कारण के थप्पड़ मारने का हाथ का अधिकार होता है। सामान्य जन को जूते की नीचे दबाने का पैर का अधिकार होता है। अपने ऊपर के अधिकारियों का अपने ऊपर के आला अफसरों को पवित्र रूप से पूछने का भक्ति भाव तत्व होता है। जब सब कुछ नहीं होता तो भागने का ज्ञान तत्व जीवन में ज्यादा ही होता है। इस तरह सारी कलाओं का समुचित निर्वाह करना ही खाकी कला की निपुणता है।

जैसा तुम कह रहे हो उस हिसाब से पुलिस का मतलब अपार ज्ञानी और महान शक्तिमान प्रतीत होता है।

कुछ पुलिस वालों के दराजों में रुपयों की गड्डियां, जेब भर महंगे सेल फोन, हाथ भर अधिकार का अहंकार जब है तो उन्हें जंग लगी बंदूकों से क्या काम? फिर भी अब तो सारा कुछ स्मार्ट और फ्रेंडली पुलिसिंग ही तो है।

फ्रेंडली का मतलब पुराने दोस्तों की तरह गले मिलते हुए एक दूसरे के कंधे पर हाथ डाले आदर सत्कार करके भेजते हैं क्या?

और क्या? कुछ लोग हाथ आए हर एक व्यक्ति के बटुए से रुपए आपस में बांटने के बाद ही भेजते हैं। हमारे पुराने दोस्तों से हम इसी तरह का व्यवहार जो करते हैं। फ्रेंडली का मतलब वही है और हम किसी पर विश्वास करते हैं।

बहुत जरूरी काम पर जाते हुए लोगों को अचानक रोकना और उनकी गाड़ियों का कागज दस्तावेज मांगना भी स्मार्ट पुलिसिंग है?

सड़क पर कई लोग जा रहे हैं लेकिन कुछ एक लोगों को गाड़ियां रोकने का आदेश देकर तुरंत उनकी गाड़ी से चाबी खींच लेना, चोरों को भी मात देता काम है, कला है। इसे देखकर हमें कई चीजों को सीखना होगा। इसका अर्थ यह है कि जीवन में हर एक चीज पर ध्यान दिए बिना, कुछ विशेष चीजों पर ध्यान दें। यही दर्शन यही वेदांत इस काम में निहित है।

शराब खरीदने के लिए सड़क तक आती लोगों की लाइनें और सड़क पर गाड़ी खड़ी करके जनता को परेशान करते लोगों पर ध्यान दिए बिना गाड़ियों को एक लाइन से ड्रंक एंड ड्राइव जांच करना ही क्या पुलिस के कार्यकुशलता का प्रतीक है?

ढूंढोगे तो चोर और उग्रवादी कभी भी मिल सकते हैं। लेकिन शराबी जब शराब पीते हैं तभी मिलते हैं। इसका मतलब यह है कि समस्या हम तक आए, इससे पहले हम जागें और समस्या की जड़ों तक जाकर उसका निदान करें। यह संदेश इस कार्य में निहित है, हमें जानना चाहिए।

थानों में कंप्यूटर तो आ गए हैं लेकिन सड़क दुर्घटनाओं जमीन जायदाद के झगड़े, परिवार की समस्याओं में कुछ पुलिस वाले पंचायत करते हैं यह तो नहीं बदला?

इसमें भी कम खर्च में तुरंत न्याय का सूत्र काम करता है। इसे सारे विश्व को अपनाना चाहिए। शराबियों को कैसे पहचानें, गाड़ियां कैसे उठाकर ले जाएं, फौजदारी मामलों में पंचायत करके किस तरह बटवारा करें, गलती न करने वालों से कैसे गलती मनवाएं, बिना कोई संबंध के प्रकरणों में घुसकर किस तरह पैसे बटोरें, न्याय मांगती अभागन स्त्रियों के पीछे पड़ कर कैसे उन्हें परेशान करें, इन विषयों पर अगर परीक्षाएं ली जाएं तो कुछ पुलिस वाले मेरिट में पास होंगे और सौ में हज़र अंक प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

डॉ टी महादेव राव
विशाखापटनम (आंध्र प्रदेश)

आभासी दुनिया में हर घर कवि हर घर ई साहित्य

कोलफील्ड मिरर 05 मार्च 2025: वर्तमान में मंचीय कार्यक्रम की तुलना में जब से मोबाइल पर घर बैठे कवि सम्मेलन का ज्यादा चलन होगया। अब हर घर कवि और हर घर ई साहित्य इकट्ठा होने लगा। हार्ड कॉपी बहुत कम लोग मंगाने लगे। फ्री में जब पीडीएफ फाइल उपलब्ध हो तो कौन पैसे बिगाड़ेगा। इसी कारण कई साहित्य पत्रिकाएं ओर अखबार बंद होते देखे गए। और कवियों की गुटबाजी से परिचित कवियों को उनका मुखिया फोन करके मंच पर जाने हेतु उनके पोस्टर छपवा लेता है। हर घर मे रोज काव्य गोष्ठियां होती है। बचे कवि जिन्हें बड़े मंच पर आमंत्रित नही किया जाता वे गांव खेडो में अपना छोटा ग्रुप बनाकर वाही वाही लूट कर सोशल मीडिया पर पोस्ट डालते रहते तथा आगामी होने वाले कवि सम्मेलन का अपना प्रचार कर संतुष्ट होकर छोटी मोटी राशि की उम्मीद लगाए रहते है। लेकिन दुनिया की, भागदौड़ भरी व्यस्तम जिंदगी में बच्चों के लिए साथ बिताने का समय लोग नहीं निकाल पाते| इसके अलावा रिश्तेदारी का व्यवहारिक ज्ञान भी पीछे छूट सा गया है। कहानी से कल्पना की उत्पत्ति होती एवं मातृत्व दुलार भी सही तरीके से प्राप्त होता। अब ये चिंता सताने लगी की कही कहानियां सुनाने की प्रथा विलुप्त न हो जाए| नहीं तो बच्चे लाड-प्यार और कहानियों से साहित्य वंचित हो जाएंगे। हाईटेक होते युग में मोबाइल और इंटरनेट ही सहारा बन गए है। अभिभावकों को भी चाहिए की बच्चों के लिए अपनी भाग दौड़ भरी व्यस्तम जिंदगी से कुछ समय बच्चों को घर पर कहानियां सुनाने के लिए भी निकाले। मोबाइल के आभासी दुनिया ने बच्चों को चश्में चढ़वा दिए| कहने का मतलब है कि दिन औऱ रात मोबाइल मे ही लगे रहते है। यदि घर पर मेहमान आते वो आपसे कुछ कह रहे।मगर लोगों का ध्यान बस फेसबुक, व्हाट्सएप पर जवाब देने में और उनकी समझाइश में ही बीत जाता। मेहमान भी रूखेपन से व्यवहार में जल्द उठने की सोचते है। घर के काम तो पिछड़ ही रहे। फेसबुक, वाट्सअप का चस्का ऐसा की यदि रोजाना सुबह शाम आपने राम राम या गुड़ मोर्निंग नही की तो नाराजगी। बच्चों को ज्ञानार्जन में उपयोगी हेतु कहानियां, गीत संगीत, व्यायाम, खेल आदि पर ध्यान देना होगा। बजाए मोबाइल परहर घरकवि हर घर साहित्य की आभासी दुनिया मे बंधे रहने के।

संजय वर्मा "दृष्टि"

प्यार से बढ़कर कोई भी मुहूर्त शुभ मुहूर्त नहीं होता

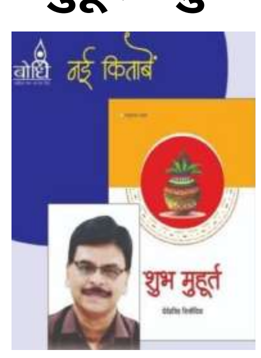

पुस्तक समीक्षा: शुभ मुहूर्त
समीक्षक लेखक- हरिहर सिंह चौहान इन्दौर

कोलफील्ड मिरर 05 मार्च 2025: कोई भी लेखक अपनी सृजनात्मकता व वैचारिक मंथन से बड़ी बात लघुकथा के माध्यम से कम शब्दों में अच्छे तरीके से कह सकता है। अपने प्रस्तुतिकरण से सभी का दिल जीत लेती है। वैसे वहीं बात पाठकों तक पहुंचाने में वरिष्ठ लेखक व लघुकथाकार देवेन्द्रसिंह सिसौदिया की यह किताब 'शुभ मुहूर्त में बहुत-सी बातें कही गई है। जिसमें कोई भी मुहूर्त अपनापन व स्नेह और प्यार से बढ़कर नहीं होता है। एक लेखक की सोच में जब समसामयिक विषयों पर पकड़ मजबूत होती है।

असल में ईमानदार लेखक तोल-मोलकर शब्दों के साथ सही न्याय करता है। मर्मस्पर्शी भाव के साथ दूरदृष्टी वाली सोच ही उसे आगे लेखन के लिए प्रेरित करती है। उसका लेखन ही पाठकों व साहित्यप्रेमियों को अपनी ओर खींच लेता है। क्योंकि सकारात्मक दृष्टिकोण बुराईयों को जड़ से खत्म करने में बहुत ही अचूक अस्त्र है। लघुकथाओ के इस दौर में सच्चा साथी हमारी भावनात्मकता की गहन सोच से ज्यादा आस-पास से छोटी बातों के साथ ही मानवीय मूल्यों व संवेदनाओं के करीब ले जाने हेतु लघुकथा संग्रह जीवन दर्शन के लिए मील का पत्थर साबित होती है। लेखक की लघुकथाओ में चाहे वह मान हो माता-पिता का वह परिदृश्य में लेखक ने आज के नये जमाने के श्रवण कुमार के संस्कारों को अंकुरित करतीं एक बेटे की यह बात जिससे माँ की आंखों को आंसुओं से भर दिया।

वहीं मां-बाप शीर्षक पर एक बेटी की गंभीर सोच समाजिक चेतना को जागरूक कर रही है। क्योंकि जीवन में माँ-बाप ही तो है। जो दोबारा नहीं मिलते। वहीं सुविधा पर जो कटाक्ष सुविधा घर में किया वह बहुत बड़ी बात है। इस तरह आमजन के करीब लेखक की भावना नाकारात्मक को बताने में लघुकथाओ की चुटकी ली गई है। यह बात समझने वाले इन छोटी छोटी सी लघुकथा के महत्व से सब जान सकते हैं। बंटवारा की नींव रखने वाली भावनात्मकता पर अपनी अभिव्यक्ति व्यक्त करने में लेखक पूर्ण रूप से सफल हुए हैं। वहीं एक लघुकथा में उन्होंने धर्म कर्म के साथ साथ पुण्य की झोली भर लीं है। यह सही भी है, मनुष्य अगर सकारात्मकता की सोच रख लें तो भेदभाव अमीरी-गरीबी सब खत्म हो जायेगा। मानवता के प्रति हम सभी अपनी अपनी जिम्मेदारी ईमानदारी से निभा सकेंगे। पुरानी यादों के आईने में लाल डिब्बा भी अपने आप में कहीं न कहीं छूती है। पोस्ट आफिस व चिट्ठी पत्री डालने हेतु वह लाल डिब्बा सही में जीवन के लिए बहुउपयोगी रहा होगा। पुराने जमाने में, तभी तो सुख-दुख या फिर रिश्तों के बंधनों में एकजुटता लाना हो तो वह केवल लाल डिब्बा नहीं यादों का पिटारा है। वहीं पांच सौ के नोट जो दुबे जी ने गुप्त दान के रूप में दिये थे। वह लघुकथा सही में संवेदनाओं को भावनात्मकता से जोड़े रखतीं हैं।

इस प्रथम लघुकथा संग्रह शुभ मुहूर्त में विभिन्न विषयों पर 82 लघुकथाओ में हर एक लघुकथा समाज की छोटी सोच को सीख देकर समाजिक ताने-बाने के अनुरूप सही दिशा सही सीख और सही प्रेरणा देती यह लघुकथाओ में चिंतनशील और जनसाधारण दोनों वर्गों में उनके विचारों के लिए शुभ समय भी है। शुभ मुहूर्त भी। इसलिए विचारों के इस लघुकथा संग्रह में मानव धर्म की प्रेरणा है और जो दुसरी और संवेदना लुप्त हो रही है उसे बचाने के लिए इस प्रकार के वैचारिक चिंतन से जिंदा रखा जा सकता है।

इन सभी रचनात्मक विचारों की व्यापक उद्देश्य की पूर्ति के लिए अगर ऐ लघुकथा पाठकों तक पहुंचने का सेतू बंधन बोधि प्रकाशन टीम ने किया। लघुकथाकार लेखक देवेन्द्र सिंह सिसौदिया जी ने अपनी पहली लघुकथा संग्रह में सर्वश्रेष्ठ देने का अटूट प्रयास किया है। ऐसे तो लेखक ने 800 से ज्यादा लेखों, व्यंग आलेख, संस्मरण और कविताओं के साथ लघुकथा लिख कर सही में सृजनात्मकता अभिव्यक्ति की बड़ी मिसाल प्रस्तुत की है। आप इसी तरह अपनी हिंदी भाषा व समसामयिक विषयों पर अपनी मजबूत पकड़ बनाए रखी है। इसी आशा के साथ में अपनी अभिव्यक्ति में एक बात कह रहा हूँ-

जब विचारों का ही सृजन हो
रस प्रभाव भरा यह आंगन हो।
संवाद जिसकी पहल से सब जन एक हो,
उसी लेख, लघुकथाओ का नव-सृजन हो।

हरिहर सिंह चौहान
इन्दौर मध्यप्रदेश